रंग झर बरसै री

मूल सम्पादक : पं० द्वारकानाथ चतुर्वेदी

सप्रेम भेंट : श्री केदारनाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/दिल्ली)

संशोधित संस्करण

प्रेरणा स्रोत : रंग झर बरसै री मूल कृति

रंग झर बरसै री

संशोधित संस्करण

मूल सम्पादक

पं॰ द्वारकानाथ चतुर्वेदी

मुद्रक

विजयालक्ष्मी प्रिटिंग वर्क्स प्राइवेट लिमिटेड

बी–117, सैक्टर–5, नौएडा–201301

मो॰ : 09899452227, ईमेल : vpwpl@yahoo.com

प्रिय बन्धुवर पालागन्
एवं शुभकामनाएँ!

''रंग झर बरसै री'' का संशोधित संस्करण का मुद्रण हो रहा है यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। यह इस बात को सिद्ध करता है कि समाज की युवा पीढ़ी भी उतनी ही समाज की परम्पराओं को जीवित रखने एवं संजोये रखने में तत्पर है। सन् 1960 के आस-पास जब समाज के होली गायन के प्रति रुचि रखने वाले समाज के लोगों ने **''रंग झर बरसै री''** जैसी पुस्तक को छपवाने की बात सोची तब काफी लोगों ने उत्साह बढ़ाया था। आज काफी बदलाव आ गया है। रंग-रूप सब बदल गया है। होली के गायक भी कम हो गये हैं इसमें कोई शक नहीं कि आज जब भी कहीं होली गायन होता है **''रंग झर बरसै री''** पुस्तक के खुले बिना गायन पूर्ण नहीं होता।

संशोधित संस्करण के मुद्रण से जुड़े समस्त लोगों को मेरी ढेर सारी शुभकामनाएँ एवं स्नेह। इस संस्करण को समाज को समर्पित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव महसूस कर रहा हूँ। समाज की युवा पीढ़ी से विनम्र निवेदन करता हूँ कि इस तरह का जो साहित्य उपलब्ध है उसका पुनः नवीनकरण एवं समयानुसार संशोधन करते रहें।

पुनः पालागन् सहित

आपका शुभेक्षु
केदारनाथ चतुर्वेदी
(संरक्षक-चतुर्वेदी महासभा)

सन्देश

संशोधित संस्करण मुद्रित हो रहा है, सुनकर अपार हर्ष का संचार हुआ, रगों में खून का प्रवाह तेज हो गया है। आदरणीय केदु दद्दा (केदारनाथ जी भूतपूर्व सभापति) को किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ समझ में नहीं आ रहा, जिन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से होली गायकी की इस परम्परा को जीवंत रूप प्रदान किया। सन् 1960 में जब पहली बार ''रंग झर बरसै री'' के मुद्रण की बात चल रही थी तब से हम लोग इस पुस्तक से जुड़े हुए हैं, पिछली साल जब मैं दिल्ली गया तब आदरणीय दद्दा जी मुलाकात के वक्त उन्होंने ''रंग झर बरसै री'' के संशोधित संस्करण के मुद्रण का विचार व्यक्त किया तब प्रिय त्रिभुवन ने तुरन्त इस पर सहमति जताई और अपने अनुज विमल (मैसर्स विजयलक्ष्मी प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लि०) जो प्रिंटिंग प्रेस चलाते हैं को इस काम की जिम्मेदारी सौंपी, आज उन्हीं के प्रयासों से संशोधन संस्करण मुद्रित हो रहा है।

मैं समाज की तरफ से उन सबका आभार प्रकट करता हूँ और भविष्य में उनसे इसी तरह की सहयोग की अपेक्षा रखता हूँ, इस पुस्तक को नया रूप देने में उन समस्त बांधवों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के मुद्रण में पूर्ण सहयोग दिया।

पालागन्!

श्री राजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (रज्जन)
सभापति
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सन्देश

संशोधित संस्करण के प्रकाशन का उद्देश्य होली गायन की विधा को समाज के प्रत्येक बन्धु-बान्धवो तक पहुँचाना है। होली गायन की यह अद्वितीय विधा जो हम लोगों को विरासत में अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई है, उस को संजोकर रखना, समय समय पर नवीनीकरण करना तथा सबसे प्रमुख इस धरोहर को भावी पीढ़ी को हस्तांतरण करना है। यह हम सभी बन्धु-बान्धव का कर्तव्य है जिससे हमारी यह अमूल्य धरोहर सदियों तक हमारे श्री माथुर चतुर्वेदी समाज के स्वरूप को शोभित करती रहे। मुझे आशा नही पूर्ण विश्वास है कि "रंग झर बरसै री" का संशोधित संस्करण इस दिशा में एक उचित प्रयास है।

पुनः मैं भाई त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/दिल्ली) का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस संशोधित संस्करण को मूर्त स्वरूप प्रदान करने में तन-मन-धन सभी प्रकार से पूर्ण सहयोग दिया तथा आशा करता हूँ भविष्य में भी वह अपना अमूल्य सहयोग समय-समय पर समाज को देते रहेंगें।

पालागन्!

भुवन पाण्डे
(होलीपुरा/दिल्ली)
(संकलनकर्ता)

व्यक्तिगत विवरण

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	होली गीत/पद	पद सं.	पृष्ठ सं.
1.	अँखियन भरत अबीर	56	17
2.	अँखिया अब लागी पछितान	590	167
3.	अंग लपटि हँसि हा हा खाय	496	147
4.	अँगिया ना छुओ मैं तो करोगी कपोलनि लाल	173	52
5.	अँगिया बैंगनी लपिटानी गोरे गात	172	52
6.	अँचरा न सम्हारै बिरहा रस माती	569	162
7.	अंजनी सुत प्रभु मन भायौ	238	73
8.	अकेली मति जइयो राधे जमुना के तीर	609	171
9.	अबकी फाग कौ रंग न बुझौ	154	48
10.	अबकी होरी मैं खेलूंगी डटि कै	229	69
11.	अब जल कैसे जइयै	394	118
12.	अब तुम राखौ लाज गिरधारी	511	151
13.	अब तो सखी फागुन रितु आयौ	41	13
14.	अब न दैउँगी मोरे यार काजरा	358	108
15.	अब न बनें ब्रज को बसिबौ	68	21
16.	अब मैं कैसे निकसों अँगनवा	170	52
17.	अब रितु आयौ फागुन कौ	440	131
18.	अब लुटी जाति है रे गोबिन्दा की फुलबगिया	562	160
19.	अब हो पानीरा न जैहों	395	118
20.	अबीर मलौंगी कपोल तिहारे	131	40
21.	अरी उठि देखि सखी होरी मचि रही तेरे द्वार	183	56
22.	अरी ऐरी बुढ़िया सोच	559	160
23.	अरे छम छम छम पगु धारै जोबन की माती	488	143
24.	अरे हाँ यार जाइ लै दै झमिया	487	143
25.	अवध में रघुबर धूम मचाई	8	2
26.	आइ गईं सब, गोरी गोपाल बनी	323	98
27.	आइजा बलम तू हमारेई डेरे	256	79
28.	आई बसन्त बहार पिया रंग चुनरि हमारी	290	89
29.	आई री ढप बाजन लागे	43	14
30.	आज दधि बेचन मैं ना जाऊँगी	285	87
31.	आज बिरज में होरी रे रसिया	492	144
32.	आज मच्यो बृज फागु री चल विलम्ब न कीजै	266	81
33.	आज बृज खेलत होरी राधे संग नंदलाल	267	82
34.	आज श्याम सै मैं बैर करूंगी	244	75

35. आज सदा शिव खेलत होरी 13 5
36. आज होरी खेलत देखी छबि जो मोहन की 269 82
37. आज होरी खेलत नंद किशोर 341 104
38. आजु कैसो बनो ब्रजराज 17 6
39. आजु जाहि रंग में बोरों री लगौ है आज हमारौ 132 40
40. आजु नगर में धूम मची है 143 44
41. आजु बसन्त बना बनि आयौ 18 7
42. आजु मची श्याम रंग होरी 411 122
43. आजु मोसौं करि गयौ श्याम ठगौरी 585 166
44. आजु श्याम के मैं अंक लगौंगी 50 16
45. आजु सखियाँ रही न मेरे संग में 72 22
46. आजु सखी ब्रज ओरी, साँवरौ खेलत होरी 140 42
47. आजु हों होरी हरिहिं खिलाऊँ 137 41
48. आजु होरी रे मोरे बालमा 390 116
49. आना रे हमारी श्याम गलियाँ 45 15
50. आयी गवनवा की सारी 190 58
51. आये चैत उतपाती हो रामा पाइ न पाती 631 179
52. आये सब क्षीर सागर तीर विधि महेश 280 86
53. आयौ आयौ पिय ऋतु बसन्त 262 80
54. आयौ फागुन मास सखी 44 14
55. आयौ बसन्त कहौ उन हरि सौं 217 67
56. आयौ मेरौ बाल सनेही नहिं आयौ रे 422 126
57. आली ! कौन चलै ब्रज की गलियन 61 18
58. आवौ गुपाल श्रृंगार बनाऊँ 123 37
59. उठि मिलि लै राम लखन आए 372 111
60. उठि मिलि लै हरि मथुरा चाले 373 111
61. उठौ गोरी माँग सम्हारौ 155 48
62. उमड़े जोबन पर रंग मत डारिऐ 268 82
63. ऊँचौ है गोकुल गाँव 216 67
64. ऊधौ किनके भये है 33 11
65. ऊधौ कैसे साधें जोग 444 132
66. ऊधौ जब सों कियो हरि मथुरा गमन 30 10
67. ऊधौ जोग सिखावन आये (रंगपाल) 607 171
68. ऊधौ जोग सिखावन आये (हरिदास) 574 163
69. ऊधौ फूली साख उजारी 349 106
70. ऊधौ ! बाबरे भयै हो 32 11
71. ऊधौ श्याम सनेही काके 573 163

72. ऊधौ स्याम कहाँ पहुँचाये 385 115
73. ए मद छकी ग्वालिनि तेरौ जुबना जोर 307 94
74. ए मनाऊँ राजन 330 100
75. ए महादेव ए भोला सदाशिव ए भोला 428 127
76. ए री माँ हो मटुकि गई फूटि 393 117
77. ए री मेरी गैल न छाँड़ौ साँवरौ 312 95
78. ए रे कान्ह आयौ नहीं बीति गई रतियाँ............................ 381 114
79. ए हो कान्हा हम जानी 437 130
80. एक दिन राम आप बतरामें............................ 429 127
81. एक फूल फूले आधी रतियाँ हो रामा 618 173
82. एहि ठैयां मुतिया हिरइली हो रामा कहवा में ढूँढ लूं 616 173
83. ऐसी को खेलै तोसों होरी 81 25
84. ऐसी चतुर ब्रज नारि 215 66
85. ऐसी बंसी बजा रे मोहन............................ 547 157
86. ऐसी होरी न खेलौ मोसे साँवरे 396 118
87. ऐसी होरी है रही ब्रज में श्याम राधिका सों खेलत होरी 151 47
88. ऐसे कहाँ मेरे भाग 27 9
89. ऐसो चटक रंग डारौ कन्हैया मोरी चुनरी में पर गयौ दागरी.... 224 68
90. ऐसौ ढीठ जसुमति कौ लंगर 101 31
91. ऐसौ रंग न डारौ मो पै सुघर श्याम 55 17
92. कजरा करि गयौ रे बदनामी 357 108
93. कन्हाई माई अँखियन होरी मचावै 194 60
94. कन्हैया घर आयौ जाइ पूजा दै कें राखौ 564 161
95. कन्हैया घर चालो गुइयां आज खेलें होरी 644 183
96. कन्हैया जानि दै तोरे पैयाँ परति हौं रे 403 120
97. कन्हैया तेरो कारौ मैं कैसे ब्याहूँ राधे 563 161
98. कन्हैया प्यारे अब न खेलूँ तोसों होरी रे 276 84
99. कन्हैया मेरौ वारौ री वारौ............................ 518 152
100. कपट कछु जा दइया मारे के मन में 73 22
101. कब से तुम छैल बने रसिया 454 134
102. क्या ठाड़ौ रहिये रे राजा बाँये 523 153
103. क्या रे गुमान करै जिन्दगानी का 193 59
104. कर लियें अबीर गुलाल 142 43
105. करिबे कौन बहाना गवन हमरौ नगिचाना............................ 187 57
106. करों क्या नैना लागे 537 155
107. कहाँ जाय रे रसिया नैन लगाए 413 123
108. कहाँ से पाये ये दोऊ नैना बहुरिया 570 162

109.	कहाँ से लाऊँ मांगे चंदा खिलौना	567	162
110.	कहा बानि परी सैयाँ तोरी रे	54	17
111.	कहुँ छिपि गये आज कन्हाई	435	130
112.	कहुँ छोड़ि मत जइयो हो हो बेदाना	533	155
113.	कहूँ जोगीरा है गये मोरे बालम	420	125
114.	कहूँ रैन जगायै हो बालमा	546	157
115.	का संग फाग मचाऊँ सखी री	287	88
116.	कान्ह तुम करत अटपटे ख्याल	603	170
117.	कान्ह तोहि ऐसी मति कौने दई	245	75
118.	कान्हा तुमही का ब्रज के	53	17
119.	कान्हा री बरज हारी तुमकों	207	64
120.	कान्हा होरी के दिनन में नित नई धूम मचावै	586	166
121.	काम प्रताप बड़ाई	11	4
122.	कालि कहाँ हे कन्हाई हमें राति नींद न आई	165	50
123.	कालि होरी गये हारि श्याम	184	56
124.	कासौं कहो मैं जिय को हाल	219	67
125.	काहू मारौ विरहिया बान यार	540	156
126.	काहे कों प्रीत करी हम सों	529	154
127.	काहे गुलाल सैयां हम पै डारौ	225	69
128.	काहे मान करत जोबन को	196	60
129.	काहे हमसों रूठे विधाता	254	78
130.	कित गयौ री गुपाल मेरे मलि रोरी	653	186
131.	कित जावोगे श्याम मेरे मलि रोरी	651	185
132.	किस घर दीन्हों बकस मेरी माय	246	76
133.	केशव काहै को तरसावै	432	129
134.	केसरि रंग छिरकौ तोरी सारी	581	165
135.	कैसी करो ऋतु बैरिन आयी	279	85
136.	कैसे रोकत कन्हैया मोहि बार-बार	107	33
137.	कैसे मैं होरी खेलौं पिया संग	197	61
138.	कोऊ कछु कहौ मन लागा रे	382	114
139.	कोऊ कुँवर कान्ह को बरजै	400	119
140.	कोऊ मधुबन की डगर न बतावै	345	105
141.	कौन खिलारिन खेलैगी होरी	138	42
142.	कौन गुन छाँड़ौ लोभी म्हारौ देश	623	175
143.	कौन जाय ब्रज में दधि बेचन	60	18
144.	कौन सों लगाये नैना	427	127
145.	कौने बदी ऐसी होरी रे छैला	468	138

146. खेलत डोलै फाग री, दशरथ कौ छबीलौ 643 183
147. खेलत फाग किशोरी 249 77
148. खेलत श्याम श्यामा फाग 258 79
149. खेलत स्यामा स्याम ललित ब्रज में रस होरी 640 181
150. खेलन आए नंद गांव से 336 102
151. खेलें सन्त सभी मिल होरी 291 89
152. खेलौंगी ना तोसों होरी श्याम 83 26
153. गगरिया घर धरि आऊँ तौ लौं 168 51
154. गण डोलत चहुँ ओरी, रची गिरजे शिव होरी 278 84
155. गलियन बीच धूम मचावै री 479 141
156. गाँव रसवादी के डर डरियै 315 96
157. गाइलै रे गोबिन्दा गुना 557 159
158. गारी दई और कांकर मारौ 228 69
159. गारी न देउ जसुदा के लला 222 68
160. गावत रंग बधाई सब मिलि 598 169
161. गिरधर लाल रंगीले के संग 243 75
162. गिरधारी पिचकारी मोरे क्यों मारी रे 438 130
163. गूजर जोबन माती डोलै 306 94
164. गोकुल कैसे जाऊँ री दइया 223 68
165. गोकुल भयो श्याम नवल रसिया 655 186
166. गोरी कौन रसिक संग रात बसी 481 141
167. गोरी गोकुल गाँव न बसियै 316 97
168. गोरी चूनरि कुसुम रंगाइलै री 486 142
169. गोरी बाँके जुबनवा छिपाये जाति 169 51
170. गोरी लागोरी करिजवा नजर भाला 472 139
171. गोरी हटबस पनिया, जाइ यार बरजौ 515 152
172. गोरी! होरी खेलन कों आयौ श्याम 130 40
173. ग्वालि तेरी गइयाँ आनि चरी 589 167
174. घर अँगना न सुहावै 247 76
175. घर कैसे जाऊँ घर कैसे जाऊँ 509 151
176. घूँघट कौन करे 49 16
177. घूँघरू हो प्यार के मारे 423 126
178. घोल री मो पै रंग के घोला घोल 206 64
179. चंचल चपल चबाई 82 25
180. चलि वृषभानु किशोरी 121 37
181. चली चल यो ही बकै दैया मारौ 118 36
182. चलौ अइयो रे श्याम मोरी पलकन पै 478 141

183. चलौ देखियै बरसाना जहाँ मँची रंगीली होरी 409 122
184. चलौ सखी आजु खेलैं होरी कन्हैया घर 389 116
185. चलौ सखी जमुना पै मची आज होरी 500 148
186. चलौ सब देखि आवैं ब्रज में है होरी की धूम 553 158
187. चहुँ ओर नदिया रंग सौं भरी 109 33
188. चहुँ दिसि धूम मची है 153 47
189. चहुँ दिसि मैं फिरि आई लाल नहिं देत दिखाई 157 48
190. चुनरिया रंग में सगरी रंग डारी 636 180
200. चूनर मेरी शीत कुसुम रंग बोर दई हो 635 179
201. चेतुरी मैं महा मदमाती 188 57
202. चैत मास चुनरी रंगाइ दै हो रामा 620 174
203. चौपटियां चादर तानी बलमा नींदा लगै तो सोइ जइयो 565 161
204. छबि निरखन को चली री सखी 42 14
205. छाँड़ौ छाँड़ौ श्याम मेरी बहियाँ 457 135
206. छाप तिलक सब छीनी 288 88
207. छिटकत चैत के चँदनियाँ हो रामा 617 173
208. छैल रंग डारि गयौ मेरौ बीर 584 165
209. छैला के हाथ अबीर मेरो मुँह मल दीनों ननदीं 461 136
210. छैला जाइ सोवन दै जाकी नींद कौने हरी रे 507 150
211. छोटी ननद जगाइ गई मेरी गुइयाँ 510 151
212. जंगाली अजब बहार चुरिया जंगाली 527 154
213. जगावती राधा प्यारी सोइ रहे बनवारी 332 101
214. जतन बतइयो हरि कैसे धीर लावैं 383 114
215. जतन बिन मिरगा ने खेत उजारौ 186 57
216. जब ते धोको दैके गयौ काऊ के संग नाहिं खेली होरी 465 137
217. जब से सुनी जा होरी की धूम 577 164
218. जमुन जल सजनी री कैसे जाँऊ 335 102
219. जल तन शीत सतावे 255 79
220. जसुदा तेरौ कान्ह चबाई 177 54
221. जसुदा नन्द करि कैं फन्द डारि गयौ मो पै रंग 627 178
222. जसुमति नंद दुलारौ 99 30
223. जहाँ जाऊँ तहाँ कृष्ण कन्हैया 112 34
224. जा अवध नगरिया बरनै बधइयाँ हो रामा 633 179
225. जा काहू कों मिलहिं श्याम 31 10
226. जा गली रे कान्हा मति आउ रे 401 119
227. जा जुगिया के संगवा में हुइवै जोगिनियाँ हो रामा 634 179
228. जा बनै न जैहों रे ब्रज नंद कौ सांवरिया 550 158

229. जा सों आवागमन मिट जावै 645 183
230. जा सों बिन होरी खेलैं न जाऊँगी 120 36
231. जाउ बलम जहाँ रैन गँवाई 292 90
232. जाकी अंगिया बार-बार फरकै 445 133
233. जामें आवागमन लागी डोरी 198 61
234. जाहि लगा पवन गई सोइ यार 536 155
235. जाहि लगौ सबद सोइ जाने 530 154
236. जिन मोरी बारे सौं बहियाँ गही 251 78
237. जिनि जाउ री आज कोऊ पनिया भरन 115 35
238. जिनि डारो रंग मानौं गिरधारी मेरी बात 286 87
239. जियरा मैं बारौं दिल लाग्यौ राम जू 571 162
240. जिया जरत रहत दिन रैन हो रामा 622 175
241. जुबनवा बैरी भये 111 34
242. जुबनवा मद के भरे 22 8
243. जो तुम मथुरा जाउ श्याम कल कैसें आवै 439 131
244. जो तुम मो सों बरजोरी करिहौ 74 22
245. जो तुम श्याम कुबरी सों राजी 29 10
246. जो यह फाग मच्यौ भव सागर 185 57
247. झूठीं बातें बनाना कहाँ तुम सीखे हो कान्हा 237 72
248. झूमति आवै मोहन मतवारौ 595 168
249. झूमि सब आइ हैं गोपी झपटि रहे नंदलाल 334 101
250. डगर मेरी छाड़ौं श्याम 51 16
251. ढप बाजै मेरो यार निकट आयौ 451 134
252. ढुलनी पै लागी रे नजरिया हो रामा 619 174
253. तन में अस रंग रचौ री 205 64
254. तरपत रतिया बितयली हो रामा पिया नहीं आये 630 178
255. तुम छकै छैल से डोलौ मनमोहन अलबेले लाला 556 159
256. तुम छकै छैल से डोलौ मनमोहन मदमाते 407 121
257. तुम तो बने सौदाई, जगत में हांसी कराई 647 184
258. तुम भोर ही आये होरी खेलन 579 164
259. तुम मथुरा काहे कीन्हौ गमन 369 110
260. तुम सदा एक दिल रहना दूसरा ना करना 534 155
261. तुम हँसि हँसि जोरी प्रीति यार 516 152
262. तुम हम सों यारी कीजो हो 549 157
263. तुम ही कहा ब्रजमें अनोखी भई 117 35
264. तू तो बरजोरी गलवा लगावै, कहा तेरे मन में री 648 184
265. तू बड़ भाग सुहाग भरी 38 12

266. तेरी बेसरि कौ मोती थहरै 453 134
267. तेरी सूरति देखि लुभानी 538 156
268. तेरे सुख की खोज हम लैहैं 386 115
269. तेरौ कैसो सुभाउ डगर चलत मोहि छेड़ै 504 150
270. तेरौ छैला गुपाल नैननि में तक मारे गुलाल 491 144
271. तेरौ लाल करि रहौ जोर जुलम 368 110
272. तैनें कहूँ देखे नन्द गुपाल हमें बताय दै 384 114
273. तोकों डारौंगी कमद चढ़ि आउ रसिया 484 142
274. तोसों कहा कहों कुंज बिहारी रे 646 182
275. दंपति रास रच्यौ या ब्रज में 328 100
276. दधि बेचन कैसें जाऊँ 314 96
277. दरशन करूँ भर नैन सखी री 281 86
278. दरसन दै निकसी अटा में से 654 186
279. दशरथ सुत राज छबीले छैल 7 2
280. दशरथ सुत राज दुलारे खिलन कैसें 5 1
281. दशरथ सुत राज दुलारे जनकपुर खेलन 6 2
282. दीजै मनुआ लगाय साँवरे सों यारी कीजै 469 139
283. दूरि करहुँ बीना कर धरिबौ 604 170
284. दृगन झरना झर लायौ साँवरौ अजहूँ नहिं आयौ 159 49
285. देख ली हरि होरी तुम्हारी 200 62
286. देखो भींजे न चोली भिंजोई मोरी सारी रे 502 149
287. देखौ दधिसुत मैं दधिजात 350 106
288. देखौ री गौरी होरी को खिलैया 424 126
289. देखौ श्याम मेरी छाँड़ौ गैल 106 33
290. देखौ सखी कैसा यह देश निगोड़ा 195 60
291. देत लिलार विरह रस बैंदी गोरी 375 112
292. दैया मोरी अँखियन परि गयौ ऐसे गुलाल खिलैया 174 53
293. दौऊ नैना लागे जोर 526 154
294. धन ठाड़ी अपने द्वार पूछै बामना 524 153
295. धन्य धन्य बृज की नारी 301 93
296. धरैं शीश रंग भरी मटुकियाँ 135 41
297. धावत राम बकैया हो रामा धूरि भरे तनवा 632 179
298. नंद नंदन बृजराज सांवरे सों बाढ़ौ है अधिक स्नेह 650 185
299. न मारौ कांकरिया होरी में 628 178
300. नइ रे नारि नये जौवन बारी 134 41
301. नट नागर गोपाल कन्हैया मुझ पर ना रंग डार 637 180
302. नटवर गोपिन नाच नचावै 430 128

303. ननदिया मोहि ना सतावौ 164 50
304. ननदी अब का चढ़ऊँ अटरिया 365 110
305. ननदुइयाँ हो बैंदी मोपै दइउ न जाइ 352 107
306. ननदुलि बैर परी 48 16
307. नन्द को लाल चबाई 351 106
308. नन्दनदन वृषभानु कुँवरि सौं खेलत रंग रह्यो 265 81
309. नयनों के डोरे लाल गुलाल भर खेली होली 250 77
310. नर समझत नाहिं अनारी 649 185
311. ना दैया मैं अब न जाऊँगी बचो ठाढ़ो 337 102
312. ना पहिचानौ हो बीरा 517 152
313. नाथ तेरी गति ना समुझि परै 606 170
314. नाथ मेरा क्या बिगड़ेगा जायगी लाज तुम्हारी 201 62
315. नाथ मेरा कहा बिगरैगो जावेगी लाज तुम्हारी 304 93
316. नाहक सैंया मोहि गरवा लगावत 171 52
317. नित उठि मान मनावै प्यारी 156 48
318. नित्य मधुर ब्रजधाम खेल रहे हरि सँग होरी 639 181
319. निरदई क्यों रंग भिंजई 354 107
320. निर्दयी संग खेली होली श्याम मोसों करौ न ठिठोली 234 71
321. नींद तोहि बेचूँगी बड़े भोर 599 169
322. नेह लग्यौ मेरौ श्याम सुन्दर सौ 19 7
323. नैंक होलै पलिंग पर आउ 362 109
324. नैननि अबीर न डारौ 77 23
325. नैननि में पिचकारी दई 490 144
326. नैना नीचे कर काहू सों 302 93
327. नैहर में दाग लग्यौ चुनरी 189 58
328. पकरि जा मोहन लै जा रै 398 119
329. परस्पर भेंटत नृप अनुराग 602 169
330. पाँय परूँ कर जोरी 299 92
331. पालागौं कर जोरी 66 20
332 पिचकारी सखी राधा मोहन की 133 40
333. पिय अजहुँ न आये बीती जाति बहार री 162 50
334. पिय बिनु नहिं मानें उमग्यौ जोबन जोर री 161 50
335. पिय मनमोहन के संग राधा खेलत फाग 152 47
336. पिया कौं मनाय लाऊँ पैयाँ परौंगी मैं 220 68
337. पिया जब जइहैं विदेशवा हो रामा 614 172
338. पिया बिन सूनौ छै म्हारौ देश 380 113
339. पी प्याला और मगन मस्त रहु 528 154

340. पीरी परि गयी रसिया के बोलन सो 475 140
341. पूजन गौरि चलो सिय प्यारी 275 84
342. पौरि वृषभान की आज रंग झर बरसै री 425 126
343. प्यारी लाजन सकुची जात 597 168
344. प्यारी होरी है कैं जोरी 175 53
345. प्रभु तेरी महिमा कौन बखानी 203 63
346. प्रिय देखौ बन-छवि निहारि 263 80
347. प्रीतम सुधि बिसराई हमें ऐसी होरी न भाई 240 73
348. फाग खेलन कों मेरौ जिया चाहे 298 92
349. फाग खेलन बरसाने आये हैं 233 70
350. फागुन तोही से मनाऊँ गजानन्द 1 1
351. फागुन मस्त महीना पिया बिन धड़कत सीना 241 74
352. फुलझरियाँ राजा बरसै 513 151
353. बंसी वारे सों कहियो जाइ यार 531 154
354. बंसी वाला आइ जइयो म्हारे देस 300 93
355. बटेसुर होरीं खेलन आये हैं शिव पारवती के संग 641 182
356. बन कों चले दोऊ भाई 12 4
357. बन जैइहौ बनि कै जुगनियाँ हो रामा 621 174
358. बन बन बंसिया बजावै हो रामा 613 172
359. बन बोलि कोयलिया शोर करै 35 12
360. बनि आई हैं चातुर नारि 139 42
361. बरजो जशोदा अपने लाल कों 297 92
362. बरजोरी करि भिंजवत गोरी सारी 226 69
363. बरजौ री जसुदा जी कान्हा 67 20
364. बरसानें बनि आयौ रे मोहन नंदलाल 408 121
365. बलम अपनी पगिया सुरंग रँगवा दे 214 66
366. बहियाँ पकरि के मरोरी लला ऐसी खेलौ न होरी 642 182
367. बहुत दिनन के रूठे श्याम 36 12
368. बाँसुरी बन बाजि रही री 39 13
369. बाजत मोद बधइयाँ हो रामा अवध पुर नगरी 629 178
370. बाजि रही पैजनियाँ छम छम बाजि रही 489 143
371. बाजी नंदलाल बन में 554 159
372. बाट चलत बरजोरी रंग डारै 221 68
373. बाट चलत मसकै मेरौ पाँव 455 135
374. बाट चलत या अनौखे लला 62 19
375. बाट चलत सिगरी मोरी सारी 88 27
376. बाबा मोहन सों करि प्रीति 443 132

377. बालम कांकरिया मत घालौ 355 107
378. बालम बेसरिया को लटकन 363 109
379. बालम महीं जा सारी रैन जागे महीं जा 359 108
380. बावरी बनि आई 136 41
381. बिरहा के दरद ने मारी 415 124
382. बिहारी जिन मारो घूँघट पिचकारी 259 79
383. बीती अवधि तेरौ खेल न ह्वै है 192 59
384. बृज में है रही होरी श्याम राधिका से खेलें होरी 331 101
385. बृजराज आज खेलत बसंत 289 88
386. बेदरदी काढ़ि दै मेरी अंखियन करकै गुलाल 93 29
387. बेदरदी कान्हा काहे कों लगाई मुख रोरी 277 84
388. बैठी रहौं तो ढिंग ठाड़ौं 71 22
389. ब्रज की तोहि लाज मुकुट वारे 470 139
390. ब्रज कुंजन में जाइ पकर लाई 125 38
391. ब्रज गैलन नैंक चलो गोरी 462 136
392. ब्रज बारे को रसिया परबस नैना लगाय गयौ 551 158
393. ब्रज मंडल देस दिखाओ रासिया 480 141
394. ब्रज में खिलन मति जाउ 116 35
395. ब्रज में दोऊ खेलत होरी 141 43
396. ब्रज में हरि होरी मचाई 146 45
397. भजु रे मन सिया रघुनन्दन को 485 142
398. भटकि रहे प्राण हमारे जब से श्याम सिधारे 333 101
399. भयौ अब पौढ़न को समयौ 346 105
400. भय्या मिलि तौ लै गरे सों नेंक आजु 463 136
401. भली भई यह हो होरी आयी 37 12
402. भली होरी में चोरी, सीखे श्याम भली 90 28
403. भलौ री पेच तेरे रंग रस कौ 178 54
404. भवानी नगर कोट वारी 339 103
405. भींजै म्हारी चूनरी हो नन्दलाल 378 113
406. भूप वृषभान राय के द्वार 626 177
407. मची कैलाश सुहाई 14 5
408. मत डारौ लाल गुलाल मत डारौ 458 135
409. मत मारौ पिचकारी श्याम 65 19
410. मतवारों ने घेरि लई पिला के प्यालियाँ 421 125
411. मति जाउ री आज कोऊ पनिया भरन 114 34
412. मति मारै दृगन की चोट रसिया होरी में 497 147
413. मति मारौ केसरि पिचकारी 97 30

414. मथुरा की कुंज गलिन में होरी खेल रहे नन्दलाल 410 122
415. मदन मोहन नंद को लाल 338 102
416. मदमातौ छैल ढाड़ौ रोकै गैल 104 32
417. मदमातौ रे करत मोसों बरजोरी 456 135
418. मदमातौ रे कान्ह गलियन डोलै 652 186
419. मन मतवाला जपूँ कैसे माला 371 111
420. मन मेरे की आसा पूजी 231 70
421. मन मेरे की इच्छा पूजी 253 78
422. मनमोहनि रिझवारि री 46 15
423. मनावत लाल री मानिनी 580 165
424. मनुआं समुझि लै रे तोहि आखिर पार उतरना 521 153
425. माई मैंने सपने में परने गुपाल 342 104
426. माई मैंने देखे नंदकुमार 379 113
427. माई लखि न परै यदुराई 431 128
428. मान न करि वृषभान किशोरी 270 82
429. मानत नाहिं निहोरें 98 30
430. मानों रे तुम्हारी ना मैं बतियाँ 232 70
431. मानौं या न मानौं 24 8
432. मारि गयौ पिचकारी सांवलिया सों मैं सीख हारी 85 26
433. मारू जी मतवारौ ढोलना 309 95
434. मालिनि मैं ना बसन्त बंधाऊँ 20 7
435. मुतिया झलकावै धन बैठी दुलीचा 572 163
436. मुरारी चूनरी फारी रे मुरारी 561 160
437. मृगनयनी तेरौ यार नवल रसिया 494 145
438. मेरा पिय बिन जोबन कर जोर 160 49
439. मेरा मनमोहना बंसीवाला 283 86
440. मेरी अंखियन बीच गुलाल डारिबो कौन सिखायो री 460 136
441. मेरी बेंदी को करियो तलास 360 108
442. मेरी मोहन माला क्या ढाड़ी है बाला 544 157
443. मेरी सुरमादानी लईओ छैल काजर सौं नैन बिगर गये 535 155
444. मेरे गाले को हरवा बाबा 552 158
445. मेरे बरजोरी अबीर लगायौ 64 19
446. मेरे सिर पर गागरि भारी रे 450 134
447. मेरौ अब कैसें निकसन होइ री गुइयाँ 208 65
448. मेरौ बारौ कन्हैया जानि, कोऊ मति दीजौ हो गारी 539 156
449. मेरौ मन नंदलाल सौं अटकौ 433 129
450. मेरौ मन बसि गयौ गिरधारी लाल सौं 548 157

451.	मेरौ मन भावना आयौ नहिं आली	566	161
452.	मेरौ मन मुरली मधुर सुनि भटकौ	404	120
453.	मेरौ री मन बासौं लाग्यौ	541	156
454.	मैं कुअटा पनियाँ न जाऊँ रे बालम	525	153
455.	मैं कैसे आऊँ रूनुक झुनुक पाइलवा बाजने	514	152
456.	मैं क्या करों री	311	95
457.	मैं जाइ खेलोंगी हो होरी फगुआ	426	127
458.	मैं जो उमरि की थोरी	294	91
459.	मैं तो उनहीं को रंग भिजोऊँगी	477	140
460.	मैं तो चौंकि उठी ढप बाजन सों	452	134
461.	मैं तो जानत नाहीं वाकौ नाम गाम	47	15
462.	मैं तो डारौंगी रंग गुलाल ए सइयाँ	388	116
463.	मैं तो नाहिं नाहिं करति रही	110	33
464.	मैं तो पिया की बाट देखों	26	9
465.	मैं तो मलौंगी गुलाल तेरे गालन मैं	482	142
466.	मैं तो याही छैल सों हारी	102	32
467.	मैं तो रही छै मनाय मनाय	608	171
468.	मैं तो लाज की मारी न मटकी	80	25
469.	मैं तो सोय रही सपनें में	495	146
470.	मैं तो होरी खेलौंगी राज अपने सुघर बालम	391	117
471.	मैं पिय प्यारे बिन	28	9
472.	मैंने जब ते सुनी मुरली की भनक	40	13
473.	मैंने तेरा बड़ा मुलाहिजा कीन्हा रे	399	119
474.	मैंने बैंदा लाल लगायौ री	555	159
475.	मैया कैसे लावैं धीर प्राण दरसन कों भटकि रहे	441	131
476.	मैया मोरी कामरि चोरि गई	594	168
477.	मो सों न बोलै बोलै आजु दौरनियाँ	542	156
478.	मोय साँवरे न गारी दई	108	33
479.	मोरे पिय को जोवनवा ढरकि जात	257	79
480.	मोरे रंग भरी पिचकारी मारी	260	80
481.	मोसों जिनि अटकै रे छबीले छैल	86	27
482.	मोहन कहा रचना रचि डारी	361	109
483.	मोहन तुम जिनि जानों ढीठ लंगर हौ	319	97
484.	मोहन रंग मत डारो करो नेक मान हमारो	710	207
485.	मोहन रोवत राति बिता में	442	131
486.	मोहना मोहि आन ठग्योरी	295	91

487. मोहनी मुस्क्यानि सखी 91 28
488. मोहि देत दरस नहिं एक बार 23 8
489. मोहि दै दै दान घूँघट बारी 483 142
490. मोहि नंदलाल रंगि डारी 405 121
491. मोहि न सुहाय चुनरि पचरंगी 370 111
492. मोहि बरसाने जाना मेरे यारो पियरवा रे 519 152
493. मोहि मिल गये कुँवर कन्हाई 402 120
494. म्हारौ रसिया बालम होरी रे 448 133
495. यमुना तट श्याम खेलत होरी 498 148
496. यशुमति करति दधि मंथन अंक में 274 83
497. यशोदा नंद कौ हमें तो जोगिनियाँ बनाइ गयौ री 501 149
498. यह जल माछरिया बिगारौ पनिया ना रे भरों 543 156
499. यह दिन चार बहार री पिय सों मिलि गोरी 191 59
500. यह न चीर की चोरी 149 46
501. यह रथ नाहीं हेली नन्दकिशोर 575 164
502. ये दोऊ खेलत फूलि फाग री 10 3
503. रंग छिरकौ न श्याम बिहारी 96 29
504. रंग डारत कजरा ढरकि गयो 261 80
505. रंग डारत लाज न आई नंदजी के कुंवर कन्हाई 284 87
506. रंग डारे मोहन हम पै भागौ जाय 148 46
507. रंग डारे रे कन्हैया मोपे मटक मटक 272 83
508. रंग डारौंगी वाही पै जाने तोर्‌यौ है धनुक 305 94
509. रंग डारौ न मौपै रंग डारौ हो नंदजू के लाला 406 121
510. रंग डारौ न मोहन गहूँ पैयाँ 638 181
511. रंग डारौ न श्याम सनेही 69 21
512. रंग न डारि जसुमति के लाल 210 65
513. रंग हो हो, हो हो, हो होरियाँ 412 123
514. रंगि डारी स्याम म्हारी चूनरिया 397 118
515. रंगि डारे गोपी ग्वाला कन्हैया ने रंग डारे 558 160
516. रंगी मैं तो रंगन तिहारे 92 28
517. रंगीले रंग महल में 4 1
518. रघुवर जी सों कहियौ मोरी 293 90
519. रघुवीरा बदन दृग देखि के 522 153
520. रस भौंरा बागे मत जाउ 512 151
521. रस लै रे रसिया फाग कौ 446 133
522. रसिया कों नारि बनाओ री 447 133

523. रसिया ना मानै मेरी अँखियन भरत गुलाल 356 108
524. राज छम छम छम गोरी डगर चलत पग 392 117
525. राज रंग में बोरी यह अंगिया मोरी कसिदना काढ़ि 505 150
526. राति पिया चोरी चोरी गये 166 51
527. राधे जू आजु बरनौ बसन्त 264 81
528. राधे नंदनदन समुझाय रहीं 167 51
529. राधे श्याम कों मिलाय दै री 340 103
530. री ! कछु पीर न जानै 57 17
531. रे मन मूरख जनम गँवायो 347 105
532. लंगरि कजरा दै बजारै मत जइए 353 107
533. लगत लिलार जा बैंदी बिन सूनौं मेरौं 416 124
534. लगि जायगी मेरे चुभि जायगी 209 65
535. लट उलझी सुलझाइजा रे बालम 593 168
536. लयोरी मेरो जियरा रसिया ने 474 140
537. लला मोरी सबरी चुनरि रंग डारी 596 168
538. लला हो रंग की चोट 59 18
539. लागी री साँवरे की मोरी 176 53
540. लागे नेहा जनावना हो जसुदा के नैंना 568 162
541. लाग्यौ ही आवै मेरे गोंहन 310 95
542. लाड़िली मान न करिये 317 97
543. लाड़िले बन को चले गये कुबरी ने जादू रचौ 520 153
544. लाज ही लाज अकाज भयौ री 252 78
545. लाल गुलाल गोपाल हमारी 239 73
546. लाल तुम कहाँ से आये जगे 578 164
547. लाल तुम होरी खेलत बरजोरी चलत 326 99
548. लाल तोहि बुलाय गयी नथवारी 449 133
549. लाल फिर होरी खेलन आओ 242 74
550. लाल बिहारी ने मेरे भरि दियो दृगन गुलाल 76 23
551. लाल मुख निरखन दै मेरी अँखियन भरौ न गुलाल 94 29
552. लाल मुख मलि डारौगी एसों के फागुन में 367 110
553. लाल मोरी अँखियन करकै 58 18
554. लाल ही लाल भये 144 44
555. लोभी बृजराज अजहुँ नहिं आए 374 112
556. वरजौ नहिं मानत बार-बार 282 86
557. वाही सांवरे सलौने सों लागे नैन 612 172
558. विचित्र वृतांत बनायौ आनंद मंगल छायौ 204 63

559. शिव गिरिजा मिल खेलत होरी 236 72
560. श्याम गये मधुबन को हो रामा 615 173
561. श्याम जब आवौगे मेरी गली 576 164
562. श्याम तुम्हें हेरत रैन बिताई 605 170
563. श्याम तेरी मूरति नैन बसी 376 112
564. श्याम तेरी होरी में कछु टौना 89 28
565. श्याम मथुरा में आइ गये भाग्य नगरी के उदय भये 624 175
566. श्याम मुख रंग की बूंद ढरी 587 166
567. श्याम मोरी चूनरि कुसुम रंगी रे 213 66
568. श्याम म्हारी चूनरि भीजै हो 583 165
569. श्याम होरी खेलन आए हमारे 129 39
570. श्याम होरी खेलन हमसों न आवै 119 36
571. श्यामा ब्रज खेलति होरी 181 55
572. श्यामा श्याम सों होरी खेलत आजु नई 145 44
573. श्रवण सुनत कटि जात पाप 9 3
574. श्री गणेश अहिवात दै हमकों 2 1
575. श्री वृषभानु नवल नागर सौं 182 56
576. संग लै अनुज सहित अनुराग 625 176
577. सखि कछु जतन करौरी 105 32
578. सखी आज सोवत भेंट भई 273 83
579. सखी कहौ कैसें धीरज आवै 158 49
580. सखी जा फागुन में सैंया अजहूँ न आयौ री 25 9
581. सखी तू कैसे अचेत पड़ी 600 169
582. सखी देखौ आयौ है जुलमी फागुनवा 163 50
583. सखी बड़े भागन तें फागुन आयौ 387 116
584. सखी मेरें नैननि में मनमोहन लागि रह्यौ 70 22
585. सखी मोहे फागुन मास सुहावै 588 166
586. सखी म्हारी नींद नसानी हो 592 167
587. सखी या घूँघट की लटक में 582 165
588. सखी री! या ब्रज में अब कैसें बसैं 63 19
589. सजन तोहि मुख देखे की प्रीत 591 167
590. सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी 320 97
591. सब कारे अजमाए ऊधौ सब कारे 464 137
592. सब विधि श्याम सिखायौ 124 38
593. सांची मानि सहेलिनि परसों बलमा लैबे आवैगो 467 138
594. सांमरे तेरी शरण अब आयौ 343 104

595. सांवरा कहीं रम रहा माई 235 71
596. साँवरिया कहुँ देखा रे बाला.. 364 109
597. सांवरे तोसों विनय हमारी 248 76
598. सांवरे रंग में रंगि डारी 78 24
599. साँवरे के चरित्र सुनौ री 179 54
600. साँवरे मन नहीं धीर धरै 344 105
601. सांवरौ मोहि दै गयौ गारी 100 31
602. साँवलिया तू बेगि खबरि लीजो मोरी 202 62
603. साँवलिया मेरौ मीत रे साँवलिया.. 434 129
604. साजि कैं जो चली 122 37
605. सारी उतारौ प्यारी गुलाल की सारी 610 171
606. सारी भींजि गई मोरी कुसुमी चूनरि 84 26
607. सालूरा में मोतीरा झिलि रहौ 366 110
608. सिर पर लाल गागरवा गोरी 532 155
609 सिय पिय विपिन सुनत अकुलानी.. 601 169
610. सुदामा मेरे आए जे संग.. 560 160
611. सुनौ अरजी हमारी, नटवर गिरधारी 503 149
612. सुमंगल दाहिने होरी, खेलत राम नरेश 3 1
613. सुरनामी बलम तोरी आँखरिया.. 506 150
614. सैंया मेरे तुम जिनि अबहिं मरोरौ.. 418 125
615. सैंया मेरे बांधो लाल गिलोलि.. 419 125
616. हम चाकर राधा रानी के 476 140
617. हमारी हो देखति ननद जिठानी.. 417 124
618. हमें घर जान दै.. 52 16
619. हरदौल कला तेरी जगि अरे.. 466 138
620. हरि नहिं आये बसन्त लग्यौ री.. 21 8
621. हरि लिये रे लकुट खेलैं होरी.. 459 136
622. हेली आजु बहुरि हम कैसे आवै 545 157
623. हेली कैसे बचों मेरे नंदनन्दन पीछै परौ 377 113
624. हेली मोहि मोहन मीत मिलाय 436 130
625. है अनरीत बड़ी या ब्रज में 113 34
626. है गये श्याम द्वैज के चंदा 348 106
627. हो मदमाते छैयलवा नैंना उनींदे तेरे 414 124
628. हो हो कहि दौरीं 325 99
629. हो हो होरी के दिनन में मति जा स्वामी विदेश 611 172
630. हो होरी आयी मोहन पर रंग डारो 473 140

631. हो होरी खेलन आई आजु आई 322 98
632. होरी आजु जरै चाँहि काल जरै 34 11
633. होरी आयी रे कान्ह ब्रज के बसिया 499 148
634. होरी आयी रे नंद के घर भैया............................ 471 139
635. होरी को लँगर नहिं आयौ नंनदिया 230 70
636. होरी कौ छैल मदमातौ डोलै 308 95
637. होरी कौ छैल मोहि ढूँढति डोलै............................ 227 69
638. होरी खेलि आये हौ तुम 212 66
639. होरी खेली कहाँ जासों सारी फटी 180 55
640. होरी खेलैं चतुर सुजान आतम राम से............................ 199 61
641. होरी खेलै लाल ढप बाजै ताल............................ 324 99
642. होरी खेले श्री राधे–नवल री सजनी............................ 150 47
643. होरी खेलौं न काहे बराये जात............................ 128 39
644. होरी खेलत महादेव 15 6
645. होरी खेलत मेरौ मुख मत मीजौ 95 29
646. होरी खेलत विपिन बिहारी 147 46
647. होरी खेलत श्याम भवन में 327 99
648. होरी खेलत श्याम सों हारी 296 91
649. होरी खेलन आई बनि–बनि ब्रज की बाल 321 98
650. होरी खेलन आयौ श्याम आज जाहि रंग में बोरौ री 493 145
651. होरी खेलन कें लिए नंदलाल मग नाचत आवत 271 83
652. होरी खेलन कैंसे जाँऊ सखी री 103 32
653. होरी खेलन दै 211 65
654. होरी खेलियै ए जी हम तुम संग मोहन 318 97
655. होरी तौ का संग खेलिये हो 329 100
656. होरी नंद नंदन खेलें अब कैसे लाज रहै............................ 75 23
657. होरी नहिं खेलों ननद रिसावे 78 24
658. होरी नाहक खेलूँ मैं बन में 218 67
659. होरी शंकर खेलें भवन में 16 6
660. होरी है कै राम राज रे............................ 87 27
661. होरी हो ब्रजराज दुलारे 126 38
662. होरी हो ब्रजराज दुलारे (नारायण) 127 39
663. हौं ना गई महाराज बागैं हौं ना गई 508 151
664. विशिष्ट होली गायक (परिचय) 187–190

(1) (काफी)

फागुन तोही सें, मनाऊँ गजानन्द।
श्री गणराज कृपा कर हम पें, देव गणराज कृपा करि सब पै॥
कंचन कलश रंग केसरि कौ तेरे ही शीश चढाऊँ॥
अबीर गुलाल मलौ मुख ऊपर, केसरि तिलक लगाऊँ॥

(2) (काफी)

श्री गणेश अहिवात दै हमकों, फागुन पिया सों मनावत री॥
सौने के छत्र धरों सिर ऊपर, धूप दीप हनवावत री॥
कंचन थार सुगन्ध बहुत लै, नित उठि देव मनावत री॥
'दूलहदास' कहत अबरी सुख, तेरौ ही यश नित गावत री॥

(3) (काफी)

सुमंगल दाहिने, होरी खेलत राम नरेश।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, को रँग भरि भरि देत।
राम जी के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन भरि भरि देत॥

(4) (काफी)

रँगीले रंग महल में, खेलि रहे दोऊ फाग॥
दशरथ–सुत और जनक–नन्दिनी, उमँगि–उमँगि अनुराग॥
भींजि गई सिय की सिर सारी, नवल लाल की पाग॥
'मधुर अली' तृन तोरि विलोकत, सरसत सरस सुहाग॥

(5) (काफी)

दशरथ–सुत राज दुलारे, खिलन कैसें पाऔगे होरी॥
घर–घर तें बनिता बनि आई, कोऊ साँवरि कोऊ गोरी।
कोऊ गुलाल अतर रँग छिरकत, कोऊ मलत मुख रोरी॥
सीता सैन दई सखियन कों, झुंड झुंड जुरि दौरीं।
पकरौ री कौशल्या–सुत कों, लेउ पीताम्बर छोरी॥

फगुआ लिये बिन जान न दैहों, अपने बिरन की सौंरी।
कै लछिमन की ओर लैउँगी, तौ मैं जनक किशोरी॥
फगुआ दियौ है मँगाय राम जू, मेवा भरि भरि झोरी।
'तुलसीदास' धनि धनि राजा दशरथ, चिरजीवौ यह जोरी॥

(6)(काफी)

दशरथ–सुत राज दुलारे, जनकपुर खेलन आये होरी।
एक ओर भरत शत्रुघ्न लछिमन, एक ओर जनक–किशोरी॥
लै ढफ ताल बजावत गावत, राजा जनक की पौरी।
राम लखन अरु भरत शत्रुघन, हँसि हँसि रंग कियौ री॥
केशरि रंग कनक पिचकारी, डारैं सखिन की ओरी।
इत दशरथ उत जनकराज हैं, ब्रह्मा वेद पढ़ौ री॥
नारद मुनिजन होरी गावें, शिव कैलाश हँसौ री।
ऐसौ फाग राम ने खेलौ, घर घर रँग बरसौ री॥
सब सखियाँ मिलि देत असीसें, अटल रहै यह जोरी।

(7) (काफी)

दशरथ–सुत राज छबीले छैल, होरी खेलत आवैं री।
राजकुमार हजार संग लियें, रंग मचावैं री॥
कंचन की पिचकारी करन लिये, अति छबि पावै री।
उड़त गुलाल लाल रँग भीजैं, मन सों भावै री॥
ढफ मृदंग की धुनि मिलि अद्‌भुत, राग सुहावै री।
'रतन हरी' श्री अवध बिहारी, बलि बलि जावै री।।

(8)(काफी)

अवध में रघुवर धूम मचाई, होरी खेलत चारौ भाई।
चौदह बरस रहे बनवासी, सिया सहित दोऊ भाई॥
वन ही में हरण भयौ सीता कौ, लै गयौ असुर चुराई।

नल और नील सुग्रीव संग लै, लंका पै करी है चढ़ाई॥
बाँधौ सेतु कटक सब उतरौ, राम ध्वजा फौराई।
लंका जीत राम घर आए, घर घर बजति बधाई।
मातु कौशिल्या करति आरती, शोभा बरनि न जाई॥

(९)(काफी)

श्रवण सुनत कटि जात पाप जहँ, सीताराम खेलैं होरी॥
कौन के हाथ कनक पिचकारी, को जा अबीर भरैं झोरी॥
कौन से नें यह रंग बनायौ, कौन की चूनरि रंग बोरी॥
राम के हाथ कनक पिचकारी, लछिमन अबीर भरैं झोरी।
भरत शत्रुघन रंग बनायौ, सीता की चूनरि रंग बोरी॥

(10) (काफी)

ये दोऊ, खेलत फूलि फाग री॥
आयौ बसन्त सबै बन फूले, चात्रिक बोले विविध बाग री।
इत रघुनाथ सखन युत आवत, उत सखि सह सिय भरि सोहाग री॥
विश्व विजय चित मनहु मदन रति, चढ़े चौंप दै विलग लाग री।
बजत उपंग मृदंग मधुर धुनि, मंद सुरन होइ मधुर राग री॥
श्रवण सुनत शिव विधि उठि धाये, नहिं भावत जप जोग जाग री।
अबीर गुलाल राम दिसि छूटत, सिय समाज संग अमित राग री॥
मची कींच मग बीच अवध में, मुनि मज्जत मानों मकर गागरी।
भींजि गये तन चीर चादरे, पट जामा उर माल पाग री॥
महाराज महारानी जू कौ, एक रंग भयौ अरुण बाग री।
कोऊ आली अटा चढ़ि बैठी, रति मलीन है अति उजागरी॥
उचकि उचकि विधु वदन बिलोकत, लसत केस मानों डसत नाग री॥
ललकारी सिय सँग की सहेली, चलीं कटि कसि कुल कानि त्यागरी।

ललकि ललकि लपटति लालन सों, पिय प्यारी के परम भाग री॥
फगुआ दीजै मँगाय कृपानिधि, पकरि फेंट अस झमकि झागरी।
'तुलसीदास' अनुकूल जानि प्रभु, लियौ है भक्ति वर सुभग माँगरी॥

(11) (काफी)

काम प्रताप बड़ाई, कहत कछु बनि नहीं आई॥
कोप भवन में त्रिया रिस सुनि कें, गये दशरथ सकुचाई।
केहि कारण रानी रिसिआनी, पूछत बार बार समुझाई,
कहौ प्रिय मन चित लाई॥
अनहित तोर प्रिया किन कीन्हों, केहि यम चाहै बुलाई।
कहु केहि रंकहि करौं नरेशा, मागौ जो मन भाई,
दीन प्रभु सब प्रभुताई॥
माँगि माँगि नित कहत पिया तुम, कबहुँ न बात निबाही।
द्वै वरदान देन कहे मोकौं, तिनहूँ महँ सकुचाई,
कहौ कोऊ का पतियाई॥
द्वै के चारि माँगि किन लेहू, रघुकुल रीति बताई।
प्राण जायँ पर बचन न जाई, सदा यही चलि आई,
सपथ रघुबर रघुराई॥
सुनहुँ प्राणपति भावनि जी की, देहु भरत अवधाई।
चौदह बरस राम बनबासू, कैसी कुबात सुनाई,
गये दशरथ बिलखाई॥

(12) (काफी)

बन कों चले दोऊ भाई, इन्हें कोई रोकौ री माई।
आगे आगे राम चलत हैं, पाछें लछिमन भाई॥
ताके पीछे चलति जानकी, शोभा बरनि न जाई॥

राम बिना मोरी सूनी अयोध्या, लछमन बिन ठकुराई।
सीता बिना मोरी सूनी रसोइया, कौन करे चतुराई॥
रिमझिम रिमझिम मेहा बरसै, पवन चलै पुरवाई।
काऊ बिरछ तन भींजत होइगें, सीता सहित दोऊ भाई।।
लंका जीति राम घर आये, घर घर बजत बधाई।
मातु कौशल्या करति आरती, शोभा बरनि न जाई।।

(13) (काफी)

आज सदा शिव खेलत होरी।
जटा जूट में गंग विराजति, अंग विभूति रमौरी॥
वाहन बैल ललाट चन्द्रमा, मृगछाला उर ओरी,
नाग गल सों लपिटौ री॥
अद्‌भुत रूप उमा लखि धाईं, सँग लिये सखियाँ करौरी।
हँसि मुस्काति लजात चन्द्रमा, ठाड़ी करति बरजोरी,
मलति हर के मुख रोरी॥
गणन संग गणपति उठि धाये, लै गुलाल भरि झोरी।
लै पिचकारी सनमुख डोलें, घूमि घूमि चहुं ओरी,
रंग कौ मेह बरसौ री॥
कहै 'हरि चरण' सती–शंकर कौ, को गुण बरनि सकै री।
शेष गणेश नारद अरू शारद, सबै सिद्धि इक ठौरी,
भई तिनकी मति बौरी।

(14) (काफी)

मची कैलाश सुहाई॥
ततधुनि–ततधुनि बाजत ताल, जामें डौरु नाद झरि लाई।
देववधू जामें नृत्य करत हैं, गन्धर्व लीला गाई॥

मोहनी माल विशाल बनी जामें, सर्प रहे लपिटाई।
अंग भभूत गलै मृग छाला, जटन श्री गंग सुहाई॥

(15) (काफी)

होरी खेलें महादेव, जटा में विराजत गंग।
तेंतीस कोटि देवता आये, गरूड़ चढ़े गोविंद॥
हंस चढ़े ब्रह्माजी आये, नारदजी हैं संग।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढप, अरु बाजै औचंग॥
नारद मुनिजी बीन बजावें, गावें गीत गोविन्द।
केसरि रंग कनक पिचकारी, अतर अरगजा संग॥
शिवशंकर बाघम्बर भींजो, भस्म लपेटे अंग।

(16) (काफी)

होरी शंकर खेलें भवन में, बारे मितवा तू कर लै बहार।
बे गए बालम बे गए, और पहुँचे है नदिया के पार॥
आपुन पार उतरि गये, और हमको छोड़ो मँझधार।
गोरी तौ पौढ़ी पलंग पै, और मुख पै डारें रुमाल॥
जाउ बलम घर अपने, यहाँ नहीं है मिलिबे कौ दाँव।

(17) (काफी)

आजु कैसौ बनौ ब्रजराज, छैला होरी कौ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, बाँधें बसन्ती पाग॥
बेंदा रोरी कौ॥
लपट झपट मोरी बहियाँ मरोरी, मानत नाहीं गोंयार।
होड़ा–होड़ी कौ॥
वृन्दावन रस रूप माधुरी, है रसिया रिझवार।
राधा गोरी कौ॥

(18) (काफी)

आजु बसन्त बना बनि आयौ॥
कोऊ सखी ओढ़ैं चीर बसन्ती, काऊ ने सालू रँगायौ।
कोऊ सखी डारि गरे बिच सेली, रुप अनूप बनायौ,
भेष जोगिन को दिखायौ॥
चन्द्रावलि पै चीर बसन्ती, ललिता ने सालू रँगायौ।
राधे डारि गरे बिच सेली, रुप अनूप बनायौ,
भेष जोगिन कौ दिखायौ॥

(19) (काफी)

नेह लग्यौ मेरो स्याम सुँदर सौं॥
आयौ बसन्त सबइ बन फूले, खेतन फूली है सरसों।
हम पियरी भई श्याम–विरह में, निकसत प्रान अधर सों,
कहौ कोऊ बंसीधर सों॥
फागुन में सब होरी खेलति हैं, अपने री अपने वर सों।
पिय के विरह जोगिनि है निकसीं, धूरि उड़ावति कर सौं,
चलीं मथुरा की डगर सों॥
ऊधौ जाय द्वारिका में कहियो, इतनी अरज मेरी हरि सों।
विरह–बिथा सों जियरा जरत है, जब से गये हरि घर सों,
दरस देखन कौं तरसौ॥
'सूरश्याम' की यही बीनती, कृपासिन्धु गिरिधर सों।
गहरी नदिया नाव पुरानी, पार करौ सागर सों,
अरज मेरी राधावर सों॥

(20) (काफी)

मालिनि मैं ना बसन्त बँधाऊँ, मेरौ पिया परदेश गयौ॥
जिनके पिया नित घर ही बसत हैं, उनहीं के आँगन जाय धरौ।
तीज –त्यौहार तौ घर ही के नीके, मेरे पिया सों जाय कहौ॥

(21) (काफी)

हरि नहिं आये बसन्त लग्यौ री॥
शरद विहाय शिशिर ऋतु बीती, कामिनि काम जग्यौ री॥
कासौं कहौ और काहि सुनाऊँ, कोऊ अब जतन करौ री॥
'काशी' प्रमोद अमोद जगत में, एहि विधि भाव भरौ री॥

(22) (काफी)

जुबनबा मद के भरे श्याम, आवेंगे कौन घरी॥
हमरी साखा सूखि रही है, किस विधि होइ हरी॥
नीर अथाह झाँझरी नैया, है मंझधार पड़ी॥
खेई है तो पार लगाइ दै, नहिं अब जात बही॥
सूर श्याम गहि वेग उबारौ, धीर न जात धरी ॥

(23)(काफी)

मोहि देत दरस नहिं एक बार, मेरौ मन नहिं मानत करत रार॥
औरन के सँग रंग उड़ावत, फाग खेलत हौ बार बार॥
हम तौ जरति बरति होरी सी, बिरहा की लागी मार मार॥
कोऊ गुलाल मलत गालन पै, कोऊ चलत गलबाहीं डार॥
हम पै सब रँग रूप बसत है, पिचकारिन की मार मार॥
मोहि सौं पिया कोऊ आनि मिलावै, तन–मन–धन सब डारूँ वार॥

(24) (काफी)

मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ,
मैं तो तोही कौं न छाँड़ोंगी, अरे साँवरे॥
जामें लाज सरम की कहा बात रे, जब प्रेम के पन्थ दियौ पाँव रे।
याही नगर के लोग लुगाई, धरैंगे नाम तौ धरौ नाम रे॥
सासु लड़े या ननदिया लड़े मो सौं, रुठि क्यों न जाय सबइ गाँव रे।

तू मत रुठै अरे मेरे प्यारे, मैं बैठी रहौंगी तेरी छाँव रे॥
अपनी मौज तेरे संग चलौंगी, पल्ला पकरि सौ–सौ दाँव रे।
अहो श्यामसुन्दर मोहि ना बिसारो, मैं तेरी कहाय कहाँ जाउँ रे॥

(25) (काफी)

सखी जा फागुन में, सैंया अजहूँ न आयौ री॥
जब सौं गये सैंयाँ भये है बाई के, किन सौतिन बिरमायौ री॥
बीती जाति बहार होरी की, बिरहा ने मदन जगायौ री॥

(26) (काफी)

मै तौ पिया की बाट देखौं कब की खड़ी,
मेरे सिर पै गगरिया रँग की धरी॥
इतऊ की नगरी, उतऊ की नगरी,
मेरे सैंया की मड़ैया सूनी परी॥

(27) (काफी)

ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलों होरी॥
काऊ सौतिन संग खेलत हुइहैं, पिया रंग भरि–भरि झोरी।
अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भलौ उनको री,
पिया संग खेलैं जो होरी॥
जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हूँ न लीन्हीं मोरी।
मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवे बारी मोरी,
पिया संग खेलो मैं होरी॥

(28) (काफी)

मैं पिय प्यारे बिन, बन बन फिरत उदास री।
कहुँ न लगत जिय घाट बाट घर, फिरि फिरि लेत उसाँस री॥
कछु न सुहात धाम धन के सुख, जियत मिलन की आस री॥

(29) (काफी)

जो तुम श्याम कूबरी सों राजी, कूबरी आजु कहाँ तें ल्याऊँ॥
कालिन्दी सों जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।
अतर फुलेल मलौं तेरे मुख पै, घिसि–घिसि चन्दन अंग लगाऊँ॥
चंदन काटि कें पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बुनवाऊँ।
तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गलसुइयाँ लगाऊँ।
कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच–बिच मौलसिरी लगवाऊँ।
नये–नये पात मँगाइ आम के, द्वारे पै बन्दवार बँधाऊँ।

(30) (काफी)

ऊधौ जब सों कियो हरि मथुरा गमन, मन पीर न जाति सही॥
आयौ फाग भयौ दुख दारून, खेलत ग्वाल मही।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, धुनि नहिं जाति सही,
उत खेलत हरि चेरी भवन॥
योग तें प्रेम कठिन है ऊधौ, प्रेम ते योग नहीं।
सगुन नेह बिन जो तप कीन्हों, बृथा सो देह दही,
कहा भयौ करि असन पवन॥
सदा मलीन रहति केशव बिन, दृग जल धार बही।
ता पर जोग भसम तुम लाये, प्रीति भली निबही,
निठुर भये अब काली–दमन॥
यह संदेश कठोर श्याम सों, कहियो चरन गही।
'हरिबिलास' हरि मिलन आस, हित बाकी साँस रही
दीजै दरस प्रभु राधारमन॥

(31) (काफी)

जा काहू कों मिलहिं श्याम, कहि दीजौ हमारी राम राम॥
गलिन–गलिन अरू द्वार–द्वार पै, होरी की है रही धूम–धाम॥
खान–पान राधा तजि दीन्हों, ध्यान तुम्हारौ आठों याम॥
'हरिबिलास' हरिसौं जाइ कहियो, क्यों छोड़ी राधा सी वाम॥

(32) (काफी)

ऊधौ! बावरे भये हौ, बावरे भये मोरी जानि॥
ऊधौ! कौन गुपाल कहाँ कौ बासी, का सों है पहचानि।
का के कहे को सँदैसौ ल्याये, काहि सुनावत आनि॥
गोपी! नँद कौ गुपाल गोकुल कौ वासी, वा सों है पहचानि।
वाके कहे को सँदेसौ ल्याये, तुमहिं सुनावत आनि॥
ऊधौ! अपनी मौज भ्रमर उड़ि बैठत, फूल महा रस जानि।
फिरि वह बेलि जरौ वा सूखौ, वाहि कहा हित हानि॥
ऊधौ! प्रथम नाद मन हरौ है मृगन कौ, राग रागिनी ठानि।
फिरि वह ब्याल विषाद विबस करि, मारत है सर तानि॥
ऊधौ! पय प्यावत पूतना निपाती, ऊखल बाँधे पानि।
सूपनखा ताड़का पछारी, 'सूर' सदा यह बानि॥

(33) (काफी)

ऊधौ किनके भये हैं, मोहन माधव मीत॥
कपटी कुटिल बड़े निरमोही, जानै कहा रस–रीति॥
हमकों जोग, भोगकुबजा कों, वाही सों जोरी है प्रीति॥
'चुन्नीलाल' कहाँ लगि बरनौ, उनके गुनन के गीत॥

(34) (काफी)

होरी आजु जरै चाँहि कालि जरै, मेरौ कुँवर कन्हाई मोहि आनि मिले।
जब सें छाँड़ि गये मन–मोहन, चित नहिं धीर धरै।
दिन नहिं चैन रति नहिं निंदिया, रोवति राधे दोऊ करन मलै॥
बन बन व्याकुल फिरति राधिका, मन में सोच करै।
'हरि बिलास' हरि ढीठ लँगरवा, बिना श्याम मेरें कौन खिलै॥

(35) (काफी)

बन बोलि कोइलिया शोर करै, पिया पिया पपैया रटि भोर करै॥
आम फुले महुआ गदराने, अँगिया में जोबन जोर करै॥
बीते बसन्त कंत नहिं आये, मैं केहि के सखि लागूँ गरे॥
सब सखि पिय संग होरी खिलति हैं, मोर कन्त सखि नाहिं घरें॥

(36) (काफी)

बहुत दिनन के रुठे श्याम, चलौ होरी में मनाय लावें रे॥
अबीर रोरी मलिकैं गुलाल म्हों मसलि कैं, गरवा लगाइ लावें रे॥
केसरि कुसुम के माटन रँग भरि भरि, फगुआ खिलाइ लावें रे॥
जुगुति–जतन सों, श्री नंद के नन्दन कों, गोदी में उठाय लावें रे॥
चोवा चंदन अतर अरगजा, रंग बरसाइ लावें रे॥

(37) (काफी)

भली भई यह हो होरी आई, घर आये घनश्यामा॥
धनि तेरी भाग सुहाग लड़ैती, तो सम और न बामा॥
काजर दै, मुख माँडि हरद सों, राधे पूरन कामा॥
'सूरज प्रभु की इच्छा पुजवत, सीता मिली श्री रामा॥

(38) (काफी)

तू बड़ भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री॥
जो कबहूं तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री॥
तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली में तेरौ जस गावत है री॥
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मग झारत फूल बिछावत है री॥
सारद सेस महेस रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे,महावर पाँय लगावत है री॥

(39) (काफी)

बाँसुरी बन बाजि रही री॥
अधर धरी अरू मुख पै विराजति, गावति तान नई।
जो मुरली नित उठि बाजत ही, सो मुरली यह नाहिं,
नई कोऊ श्याम लई री॥
जड़ चेतन मोहे सब ब्रज के, मोही कुँज मही।
बछरन नीर छीर तजि दीन्हौं, तृन न चरत मृग धेनु,
धार जमुना न बही री॥
जो गति भई है सकल या ब्रज की, सो नहिं जाति कही।
हौं निकसी ही दधि बेचन कों, 'लेहु गुपाल गुपाल',
भूलि गई नाम दही री॥
कैसे रहौं ब्रज में छिपि कें, मो पै धुनि नहिं जाति सही।
निकसि चली पिय रोकन लागे, जिय की तपन न जाय,
देह भई कृष्णमई री॥

(40) (काफी)

मैनें जब तें सुनी मुरली की भनक, मेरौ मन गयौ हाथ सों ए री गुइयाँ॥
मैंने मुरली बजत बहुतेरी सुनी है, बहुतक देखे हैं बैनु बजैया,
रूप सरूप लख्यौ हम लाखनि, पै न मिले चितवन के चुरैया,
जासौ मिटै मेरे जिया की कलक॥
काऊ ब्रजवासी गरै डारी फाँसी, कित गयौ जालिम जाल बिछैया,
या मोहन की छबि पर कान्हर, माचि रही बलराम दुहैया,
कृष्ण रसिक की देखी झलक॥

(41) (काफी)

अब तो सखी फागुन रितु आयौ, ढफ गोपाल बजावै।
खेलौं फाग श्याम सँग सजनी, जोर मनोज जनावै॥
केसरि अबीर गुलाल मलै मुख, मोहि नँदलाल सुहावै॥

जौ लों वाकौ मुख नहिं देखों, जिय मेरौ ललचावै॥
एक तौ डर मोहि सासु ननद कौ दूजें लाज लजावै॥
मुरली में लै नाम हमारौ, हरि विलास नित गावै॥

(42) (काफी)

छबि निरखन कों चली री सखी, बंसी जमुना पै बाजि रही॥
बंसी की टेर सुनी सबही ने, सुधि बुधि बिसरि गई॥
पैठि पताल काली नाग नाथ्यौ, नागिन जोर भरी॥

(43) (काफी)

आई री ढफ बाजन लागे, माती होरी॥
माती होरी मातौ कन्हैया, माती राधा गोरी॥
अपने री अपने भवन तें निकसीं, कोऊ साँवरि कोऊ गोरी॥
चोवा चन्दन और अरगजा, केसरि कुमकुम रोरी॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्णछवि, चिर जीवहु यह जोरी॥

(44) (काफी)

आयौ फागुन मास सखी, उमग्यौ मन मेरौ॥
चलौ री सखी मिलि नन्द महरि कें, कृष्ण कृष्ण कहि टेरौ।
जो न मिलै तो चलौ कुंजन में, राह बाट सब घेरौ,
करौ वाहि अपनों चेरौ॥
छोटौ जानि न उरझो वासें, बल को अधिक घनेरौ।
मथुरा कौ वह राज करत है, है ठाकुर ब्रज केरौ,
दही नित खात सबेरौ॥
पहिलें जंत्र मंत्र करि लीजै, फिरि कारे कों छेड़ौ।
ऐसौ न होइ पलटि डसि जावे, वामें विष है घनेरौ,
करे निसिवासर फेरौ॥
महुअरि नाद लियें सब सखियाँ, करहु चौतरफा फेरौ।

आदि गुरू कौ नाम बतावौ, करि करि जतन घनेरौ,
सखिन मिलि जादू गेरौ॥
रस बस ह्वै राधे मोहन के, उर अन्तर में हेरौ।
बन्द पिटारे भये दृगन के, 'सूर' सुजस बहुतेरौ,
भयो मन माहि उजेरौ॥

(45) (काफी)

आना रे हमारी श्याम गलियाँ॥
मै तो चुनि चुनि फुलवनि सेज, बिछाऊँगी कलियाँ॥
होरी कैसौ औसर, पिय नाहीं दूसर,
जुबना जनाय रह्यो जोर, सुनौ याही बिरियाँ॥
होरी खिलाऊँ मैं तुमहि रिझाऊँ,
मलि मुख अबीर गुलाल, खवाऊँ पान बिरियाँ॥

(46) (काफी)

मनमोहनि रिझवारि री, तेरे नैन सलौने॥
तू अलबेली आन गाँव की, अब ही आई है गौन री॥
एसों की होरी तेरे नगर में, नित नये कौतुक हौन री॥
सौंह खवाय कहत भटु तोसों, पग नहिं धरत अगौन री॥
'दयासखी' या ब्रज में बसि कें, नेह निभायौ है कौन री॥

(47) (काफी)

मै तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम,
मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम॥
श्याम–बरन, बरनत न बनत मोपै,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु धाम॥
मंद हँसनि, दामिनी सी दसन–दुति,
पीत वसन ओढ़ें ललाम॥
कर, मुरली उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल काम।

(48) (काफी)

ननदुलि बैर परी, आजु होरी कौ त्यौहार॥
गारी गावत, अबीर उड़ावत, आये ललन मेरे द्वार॥
मो पै रह्यो नहिं जात मँदिर में, सुनि ढफ की धधकार॥
देखौं चहति मुख श्याम सुन्दर कौ, खोलि दे कुटिल किवार॥

(49) (काफी)

घूंघट कौन करै, नैना मद सों छके मतवार॥
भरि भरि लावै, मोही पै गिरावै, करि डारी हाल–बिहाल॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, रंग की परति फुहार॥

(50) (काफी)

आजु श्याम के मैं अंक लगौगी, कलंक लगै तौ भलें ही लगौरी॥
जरि बरि जाय कानि कुल की सब, लाज निगोड़ी भगौ तौ भगौ री॥
सुनियो री मेरी पार–परौसिन, तुम उपहास करौ तो करौ री॥
दयासखी मैं होरी खेलौंगी, तोप दगौ तो भलें ही दगौ री॥

(51) (काफी)

डगर मोरी छाडौं श्याम, बिधि जावोगे नैनन में॥
भूलि जाउगे सब चतुराई, मारौंगी सैनन में॥
जो तेरे मन में होरी खेलन की, तौ ले चलि कुंजनि में॥
चोवा चन्दन और अरगजा, छिरकौगी फागुन में॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, लागी है तन मन में॥

(52) (काफी)

हमें घर जान दै, नई होरी के खिलैया रे॥
इलरी दुलरी और पचलरी, बाजूबँद के गुहैया रे॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, बंसी के बजैया रे॥

(53) (काफी)

कान्हा तुमहीं का ब्रज के इजारदार, मो पै रँग छिरकत हौ बार बार॥
रँग छिरकत, मेरें कुम कुम मारत, गुलाल मलत पट टार टार।
कर मेरो पकरि कलाई मेरी मसकी, चुनरी के करि दीन्है तार तार॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, होरी मचावत द्वार द्वार॥

(54) (गौरी)

कहा बानि परी सैयाँ तोरी रे, मोसों खेलन आयो होरी॥
हम सों श्याम होरी बनि बनि खेलत, और सखिन सों थोरी॥
अबीर गुलाल के थार भरे हैं, मुख मसलन कों रोरी॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, चिर जीवहु यह जोरी॥

(55) (काफी)

ऐसौ रँग न डारौ मोपै सुघर श्याम, मेरो बार बार तोकौं है प्रनाम॥
मै इत की नहीं बरसानौ गाँव, वृषभानु सुता मेरौ राधा नाम॥
कहें 'मारतंड' अब भई है शाम, मोहि जान दै री मेरौ दूरि गाम॥

(56) (काफी)

अँखियन भरत अबीर, बीर मोरी पीर न जानैं॥
हार तोरि गलगुँज मरोरी, लै अबीर मुख सानै॥
रोके सै औरहु उरझत है, लै पिचकारी तानैं॥
'ललित किशोरी' बरजत हारी, नंदनँदन नहि मानैं॥

(57) (काफी)

री! कछु पीर न जानै, अँखियन भरत अबीर॥
मुरकावत मेरी नरम कलइयाँ, खैंचत धरि धरि चीर॥
भरि पिचकारी मुख पर मारत, अरू मारै दृग तीर॥
'मोहनदास' कहाँ लगि बरजौं, आखिर जाति अहीर॥

(58) (काफी)

लाल मोरी अँखियन करकै, ऐसौ न फेंकौ गुलाल॥
हम बोलति हितके चित सों तुम, ता पै करत यह हाल॥
बाट चलत मेरौ घूँघट खोलत, रोरी मलत लै गाल॥
'रामप्रताप' हँसति मुख मेरौ, हेरि हेरि ब्रजबाल॥

(59) (काफी)

लला हो रँग की चोट मेरें भारी लगै,
पिचकारिन काहे कों मारी॥
भींजि गयौ मेरौ चीर चादरा, भींजि गई तन सारी॥
घर जैहों तौ सासु रिसैहै, ननद सुनै देइ गारी॥
सैयाँ सुनै सतराय साँवरे, सँग की हँसैं दै तारी॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छवि, तुम जीते हम हारी॥

(60) (काफी)

कौन जाय ब्रज में दधि बेचन, रँगि डारी चूनरि सारी॥
एक हाथ मेरौ अँचरा पकर्‌यौ, दूजे हाथ पिचकारी॥
लहँगा भिंजोयौ, मेरी चुनरी भिंजोई,
अँगिया की करि डारी ख्वारी॥
माई बाप की अधिक लाड़िली, कबहूँ न दीन्ही गारी॥
जाहि फिरादौ कंस रजा सौं, तेरी करौंगी मैं ख्वारी॥

(61) (काफी)

आली! कौन चलै ब्रज की गलियन, बनवारी रारि करै॥
लै गागरि पनियाँ कौं निकसी, चूनरि रंग भरै॥
राह बाट निकसन न देत है, लंगर लँगरि करै॥
'रामप्रताप' छक्यौ यह डोलै, काहू सों न डरे॥

(62) (काफी)

बाट चलत या अनौखे लला, रँग चूनरि बोरि दई॥
अब कैसे घर जाऊँ सखी री, यह गति मोरी भई॥
मैं जमुना जल भरन जाति, मोहि औचक घेरि लई॥
'रामप्रताप' लाज ब्रज में दईया, सब मोरी आज गई॥

(63) (काफी)

सखी री! या ब्रज में अब कैसें बसैं, अनरीति न जाति सही॥
गैल चलत वा छैल नन्द के ने, बहियाँ आनि गही॥
मलि गुलाल मुख रंग भिजोई, सौ सौ बात कही॥
'नारायण' मग लोग हँसें सब, आजु न लाज रही॥

(64) (काफी)

मेरें बरजोरी अबीर लगायौ, लँगर ब्रजराज दुलारौ॥
मैं जल जमुना भरन जाति ही, खैंचौ चीर हमारौ।
गागरि छीनि महीतल पटकी, अरु कंचुकी पट फारौ,
बहुरि तकि काँकर मारौ॥
गारी देत हरि लाज न आवति, तन कारौ मन कारौ।
खोलि खोलि घूंघट मारग में, सबरौ बदन निहारौ,
नहीं कोऊ बरजन हारौ॥
अब कैसे लाज बचै या ब्रज में, मोहन बैर सँचारौ।
'हरिबिलास'हरि सखा संग लियें, घेरौ है जमुना किनारौ,
चलौ! नृप कंस पुकारौ॥

(65) (काफी)

मत मारौ पिचकारी श्याम! अब देंउगी मैं गारी॥
भींजैगी लाल नई मोरी अँगिया, चूनरि बिगरैगी सारी।
देखैगी सासु रिसावैगी मो पै, सँग की सखी सब न्यारी,

हँसैंगीं दै दै तारी॥
हाट बाट सबसों अटकत हौ, लै लै रारि उधारी।
कहाँ लौं तेरी कुचालि कहौं मैं, एक एक ब्रज नारी,
जानति करतूति तिहारी॥
मूठि गुलाल न मारै दृगन में, दूखैगी आँखि हमारी।
‘नारायण’ न बहुत इतराऔ, छाँड़ौ डगर गिरिधारी,
अनौखे का तुमही खिलारी॥

(66) (काफी)

पालागौं कर जोरी, श्याम मोसों खेलौ न होरी॥
गउएँ चरावन कों हम निकसीं, सासु ननद की चोरी।
सिगरी चुनरि मोरी रँग में न बोरै, एती अरज सुनौ मोरी,
कहूँ दोउ कर जोरी॥
छीनि झपटि मोरे हाथ सों गागरि, जोर सों बहियाँ मरोरी।
जिय धड़कत मोरी साँस चलति है, देह कँपै गोरी गोरी,
जाउ घर लाल बहोरी॥
अबीर गुलाल लपटि रह्यौ मुखसों, सारी रंग में बोरी।
सासु हजारन गारी देयगी, बलमा जियत न छोरी,
कहाँ विष खाय मरौंरी॥
फाग खेलिकैं तुम मनमोहन, का गति कीन्हीं मोरी।
सखियनि बिच मेरी लाज गंवाई,अबहुँ करत बरजोरी,
जाऊँ कैसें ब्रज खोरी ॥

(67) (काफी)

बरजौ री जसुदा जी कान्हा॥
हम जमुना जल भरन जाति हीं, मारग मैं इठलाना।
गागरि छीनि महीतल पटकी, लै अबीर मुख साना,
करै होरी कौ बहाना॥

इतने में आए नंदनंदन, घर मैं रोदन ठाना।
एरी मैया! मोहिं बहुत खिजायौ, दै दै नैन निसाना,
उलटि घर लाईं उल्हाना॥
हमरौ ललना पलना झुलत है, बालक है नादाना।
ये क्या जानै रंग रस की बतियाँ, जानै खेल अरू खाना,
बिसरि गयौ तुमरौ ही ग्याना॥
तुम साँची, तुम्हारौ सुत साँचौ, हम सब करत बहाना।
'छबिनायक' ब्रज बसबौई छाँड़ो, ब्रज तजि अंतहि जाना,
करौ अपनौ मन माना॥

(68) (काफी)

अब न बनें ब्रज कौ बसिबौ, मोसों बरजोरी कान्ह करै॥
हँसि मुसक्याइ जोरि दृग सों दृग, गहि अँचरा जो धरै।
दान लिए बिन जान देत नहिं, कान्ह ऊपाधि करै॥
होरी के औसर केसरि सों, पिचकारिन रंग भरै।
'हरिबिलास' हरि ढीठ लंगरवा, काहू सौं न डरै॥

(69) (काफी)

रँग डारौ न श्याम सनेही, चुनरि मोपै है एक येही॥
अपने बबुल के घर की चूनरि, सेंती बरसन तें ही।
आजु ननद ननदुइया बुलाई, पहनि लई धोखे ही॥
अबीर गुलाल छूऔ जनि हाथन, मलौ न अतर सन देही।
मैं तो बसी तेरी प्रीति सुगन्धनि, टरत न तन मन तेही॥
मैं तो रंगी तेरे रँगन साँवरे, जानत है जग एही।
ये तों रँग दुनियाँ कौ रे मोहन, का अस रंग रँगे ही॥
अपनी कृपा रँगनि मोहि रँगिये, 'सूर' श्याम तुम नेही।
हँसि हरि एक बार उर लागौ, मिटि जावै सन्देही॥

(70) (काफी)

सखी मेरे नैननि में, मनमोहन लागि रह्यौ॥
कल न परति बिन देखें एक छिन, बिरह ने गात दह्यौ॥
जब सें दृष्टि पड़े नँदनँदन, तन मन चैन गयौ॥
'जानकीदास' रूप रस माते, जग उपहास भयौ॥

(71) (काफी)

बैठी रहौं तो रहै ढिंग ठाड़ौ, जो उठि धाऊं तौ आगें ही आवै॥
सोइ जाउँ सपने में देखों, जागि परों हँसि कंठ लगावै॥
मौन रहौं तौ रहै अनबोलौ, बोलि उठों घट माहिं समावै॥
संग मुरारी रहै निसिवासर, हाथ पसारौं तौ हाथ न आवै॥

(72) (काफी)

आजु सखियां रहीं न मेरे संग में, कन्हैया ने घेरि लई कुँजन में॥
नन्द महरि घर फाग मचौ है, राधे रहीं कुंजन में॥
साड़ी भिगोई बहियाँ मरोरी, चुनरी भिंगोइ दई रंग में॥

(73) (काफी)

कपट कछु जा दइया मारे के मन में, मोसें बातें करत सैनन में॥
झाला दै दै मोहि बुलावै, मधुबन सघन कुंजन में॥
घुंघटा उघारि मेरे अबीर मलत मुख, डारत हाथ कुचन में॥
'दयासखी' जा सें मैं हारी, इन फागुन के दिनन में॥

(74) (काफी)

जो तुम मोसों बरजोरी करिहौ, तिहारी सों सासु हमारी लरिहै॥
कोमल कमल नवल नव जोबन, हियरा हार बिथुरि है।
चन्द्रबदन कहु मैलों होइगौ, मुतियन माँग बिगरिहै॥
चरचा करैं सब अगल बगल की, दौरानी जिठानी बहमरिहै।

ससुर सुनै सतराय साँवरे, सैयां अधिक रिस करिहै॥
बांह गहे की लाज सांवरे, मन क्रम बचन उचरिहै।
मैं तन तुमकों अरपि चुकी हों, ब्रजपति भूप बिसरिहै॥

(75) (काफी)

होरी नंदनंदन खेलें, अब कैसे लाज रहै॥
जो कोई जाय जमुन जल भरनें, वाही पै रंग परै॥
बाट चलत यह ढीठ लंगरवा, बरजोरी बहियां गहै॥
'चन्द्रसखी' या ब्रज कौ बसिबौ, अब कैसें निबहै॥

(76) (काफी)

लाल बिहारी ने मेरे, भरि दियौ दृगनि गुलाल॥
कसकत है निकसत नहीं अजहूँ, देखि सखी मेरौ हाल॥
धोइ धोइ हारी मैं इनकों, मीड़त है गई लाल॥
"हीरासखी" कढ़ि गयौ गुलाल पै, कढ़े नहीं नन्दलाल॥

(77) (काफी)

नैननि अबीर न डारौ, दरस के ये अधिकारी॥
हे आनन्द–कन्द नंदनन्दन, बृजपति कुंजबिहारी।
कालीदमन कृष्ण दामोदर राधावर गिरिधारी,
तको जिय पीर हमारी॥
बिन देखै दुखिया रोवति हों, वदन मयंक निहारी।
तिनके हित बिनवति यह रसना, जानि रसिक हितकारी,
कहा मन माँहि बिचारी॥
हा हा करति मानि जा मोहन, चरनन की बलिहारी।
लूटन दै जग–लाहु जमन कौ, 'किंकर' शरण तिहारी,
बिरद नित लेहु संभारी॥

(78) (काफी)

सांवरे रंग में रंगि डारी॥
मैं जमुना जल भरन जाति ही, ओढ़ि कुसुमि रंग सारी।
वे हरि ठाढ़े कदम की छइयाँ, हाथ लिए पिचकारी,
श्याम मेरे सम्मुख मारी॥
केसरि तिलक सीस कौ भींजौ, भींजि गई तन सारी।
चौसठ बन्द कंचुकि के भींजे, झरि गई कोर किनारी,
नथुनियां की गूंज बिसारी॥
दै पिचकारी जात कहां हौ, जान न देउँ गिरिधारी।
अबकी पकरि लेउँगी तुम कों, देखोंगी ठसक तिहारी,
अनोखे होरी के खिलारी॥
अगर सुनें मेरौ बगर सुनें, मेरी सास सुनें दैहैं गारी।
जा नगरी के लोग चबाई, जिनकी रीति है न्यारी,
हमें डर लागत भारी॥

(79) (काफी)

होरी नहिं खेलों ननद रिसावै॥
म्हारे पिया के आते जाते, चोरी चुगली खावै।
उनकी बातें सुनि सुनि सजनी, म्हारैं जिया दुख पावै॥
ढफ औ ढोलक झाँझ मजीरा, ग्वालन सें बजवावै।
आपुन झोका लेताँ लेताँ, म्हारे आँगन आवै॥
दूध दही की चोरी करि करि, नाहक चोर कहावै।
नौ लख धेनु नंद बाबा कें, उनकों दाग लगावै॥
गोपिन प्रीति पुरानिन सों यह, होरी के मिस आवै।
'लाल दास' लीला पुरूषोत्तम, त्रिभुवन नाथ कहावै॥

(80) (काफी)

मैं तो लाज की मारी न मटकी,
सँवरिया ने सिरकी मटुकि मेरी पटकी॥
मैं जमुना जल भरन जाति, मेरी सासु ननद मोहि हटकी।
आवत देखि रसिक नँदनन्दन, सँग की सखी सब सटकी॥
मैं तो लाजि रही छिपि छिपि, अनबोलें चुनरि मोरी झटकी।
हाल बिहाल करी नँदनन्दन, भूलि गई घट घट की॥
तोरै हरा दुलरी तिलरी मेरी, करकी चुरीं सब करकी।
कंचुकि फारि मरोरि दोऊ कुच, यहे बात मोहि खटकी॥

(81) (काफी)

ऐसी को खेलै तो सों होरी॥
बारबार पिचकारी मारत, तापर बहियाँ मरोरी॥
नन्दलाल की गाय चरावौ, हमसों करौ बरजोरी।
छाक छीनि खावत ग्वालनि की, करते माखन चोरी॥
चोवा चन्दन और अरगजा, अबीर लिये भरि झोरी।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसरि भरी कमोरी॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, गावै राधा गोरी।
'सूरदास' बलि बलि या छबि की, चिरजीवी यह जोरी॥

(82) (काफी)

चंचल चपल चबाई, श्याम तैंने क्यों मारी पिचकारी॥
उत्तर देहौं कहा ननदी कों, भींजि गई तन सारी॥
आवन दै मेरी संग की सहेलिन, तब देखौं बनबारी॥
भामिनि भेष बनाइ नचाऊ, 'किंकर' चतुर खिलारी॥

(83) (काफी)

खेलौंगी ना तोसों होरी स्याम॥
धोखेबाज सदा के मोहन, खात दही ना देत दाम॥
बरजोरी करिकें रंग डारत, कैसें बचै कोई ब्रज की बाम॥
सीखौ कहाँ यह ढंग नंदनन्दन, चाहत सखियन संग आराम॥
'सल्लर' स्याम बड़े उतपाती, जान देहु घर होति शाम॥

(84) (काफी)

सारी भींजि गई मोरी कुसुमी चूनरि,
मोपै डारि गयौ भरी रँगकी गगरि॥
बरजोरी मुख पर गुलाल मलत है, ढीठ सखी ब्रजराज कुँवर॥
भरि पिचकारी मेरी अँखियन मारी, जो पकरूँ भजि जाय लँगर॥
ग्वाल बाल सब घेरि लई मैं, भूलि गई मधुवन की डगर॥
नन्दभवन घर फाग मचौ है, श्याम इधर और राधे उधर॥
'बालकृष्ण आनन्द' खिलावैं, धन्य धन्य ब्रज नन्द महर॥

(85) (काफी)

मारि गयौ पिचकारी, सँवलिया सों मैं सखि हारी॥
ऐसी तानि दई मोरे तन में, चूनरि सुरँग बिगारी।
अबीर गुलाल मलौ मेरे मुख सों, घूँघट पलटि उघारी,
दृगन बिच कसकत भारी॥
बहियाँ पकरि लँगर झकझोरी, कर कमलन गल डारी।
तार तार सब करी कंचुकी, तार कसी रतनारी,
सकल मम लाज उघारी॥
गिरी धरनि गस खाय सखी री, तन मन सुरति बिसारी।
मृदु मुसक्याय लियौ अधरन रस, नटवर छैल बिहारी,
हँसत दै दै कर तारी॥

आली प्रकट भयौ या ब्रज में, नन्द मदन अवतारी।
कथन करूँ गुन कैसें वाके, सकति न गिरा उचारी,
चरण तेरे बलिहारी॥

(86) (काफी)

मोसों जिनि अटकै रे छबीले छैल, मेरे सिर पै गगरि जिनि रोकै गैल॥
आगे गई तिनसें कहा नातो, मोही सों अटकत मदमातौ।
नैक न दाग लगौ उनके अँग, ना तैने रोकी चली जाति मग,
मोही सों अनोखे ने ठानी फैल॥
ए रे लँगर मोपै रंग जिनि डारौ, मति घूँघट पिचकारिन मारौ।
नई रे चुनरि मैंने अबही रँगाई, सैयाँ हमारे ने देखिहू न पाई,
सो तो तैने बिगारी होरी खेलि॥
ठाढ़े रहौ घर धरि आऊँ गगरी, इनहीं पाइन मैं तो आवति डगरी।
मनमानी तोसों खेलौंगी होरी, मौज फागुन जामें काहे की चोरी,
मैं तो धोय के बहाऊ सारे जिय के मैल॥

(87) (काफी)

होरी है कै राम राज रे॥
जो तू गिनत न कछु काहू की, करत आपनेइ मन के काज रे॥
निधरक अँग परसत नारिन के, गारी बकि बकि लेत लाज रे॥
'हरीचंद' भयौ छैल अनोखौ, बरजेहूँ नहिं रहत बाज रे॥

(88) (काफी)

बाट चलत सिगरी मोरी सारी, मोहन रँग बोरि दई॥
लाज–काज घर सों नहिं निकसत, सो सब आज गई॥
अब न जाउँ ब्रज की गलियन में, ठानत रारि नई॥
'रामप्रताप' अचानक ही मेरी, वा सन भेंट भई॥

(89) (काफी)

श्याम तेरी होरी में कछु टौना॥
तैनें ऐसौ फाग रचायो, मानों दूल्हा ब्याहन आयौ।
जो जीतै सो होय बराती, यही ब्याह यही गौना॥
चोया की पिचकारी मेरें मारी, अबीर लिये भरि दौना।
'पुरूषोत्तम प्रभु' या होरी में, जो कछु होय सो हौना॥

(90) (काफी)

भली होरी में चोरी, सीखे श्याम भली॥
छलबल करि मेरौ छला चुरायौ, हौ तुम श्याम छली।
भोर होत मैं तुमहि बँधाऊँ, तौ वृषभानु लली॥
होरी की चोरी दान को लैबौ, सो तोहि श्याम फली।
बलभैया कंकन चमकावै, जसुमति चम्पकली॥

(91) (काफी)

मोहनी मुसक्यानि सखी, लागै सोई जानै॥
ठाढ़ी हुती मैं अपने बगर में, औचक निकसौ है आनै।
मंद हँसनि मुसकानि माधुरी, लागे हैं मनमथ बानै,
सखी कोई पीर न जानै॥
घायल भई मृगी सी डोलूँ, पड़ी हूँ धरनि बिच आनै।
जंत्र मंत्र औषधि घिसि लावौ, करियो कोटि उपानै,
जतन कोऊ करियो सयानै॥
दूजौ नाहि उपाउ सखी री, बेगि मिलावहु कान्है।
वे जानत हैं पीर हमारी, 'युगल सखी' के प्रानै,
सखी कोई धीर न जानै॥

(92) (काफी)

रँगी मैं तौ रँगन तिहारे, और रंग जिनि डारौ॥
काऊ बात सों होऊँ जौ बाहरि, तो तुम गारी उचारौ॥

काहे कों बरबस लोग हँसावत, निलज खेल निरवारौ॥
'हरीचन्द' गर लगि के मेरे, जिय की होंस निकारौ॥

(93) (काफी)

बेदरदी काढ़ि दै, मेरी अँखियन करकै गुलाल॥
सुरझावन दै उरझी मोहन, बेसरि सों बनमाल॥
निपट अधीर पीर नहिं जानत, मलत अबीरहिं गाल॥
'ललित किशोरी' रंग कमोरी, ढ़ारत निठुर गोपाल॥

(94) (काफी)

लाल मुख निरखन दै, मेरी अँखियन भरौ न गुलाल॥
होरी हू में काहे करत यह, मुख दरसन जंजाल॥
प्रीति रीति ना जानत प्यारी, मदमातौ रस–ख्याल॥
'हरीचन्द' हिय होंस मिटै क्यों, जब यह ऐड़ी चाल॥

(95) (काफी)

होरी खेलत मेरौ मुख मति मीजौ, चेरी मैं तेरी भई रे भई रे॥
बहियाँ मरोरी श्याम बिहारी, आनि बानि सब गई रे गई रे।
उन मलि डारे बारे जुबनवा, कैसी करौं मैं दई रे दई रे॥
आगि लगौ ऐसी होरी खेलन में, गलियाँ दिखावै नई रे नई रे।
मेरी तौ उनहीं सो लगन लगीहै, जिन मेरी बारे सों बहियाँ गही रे॥

(96)(काफी)

रंग छिरकौ न स्याम बिहारी, मानौ कही जरा जाओ ठहर॥
हाथ लियें गोरी रँग की गहलना, सिर पै गागरि सोहति भारी।
सिर की गगरिया घरैं धरि आऊँ, तब मारौ रंग की पिचकारी,
मानौ कही जरा जाओ ठहर॥
बूंद परैं मोरी चुलिया नसैहै, भींजि जाय सिर चूनरि सारी।
घर जैहों तौ सासु रिसैहै, ननद सुनै देइ लाखनि गारी,
मोकौं दोस लगावै सारो नगर॥

(97) (काफी)

मति मारौ केसरि पिचकारी॥
दधि ही मथि–मथि जाऊँ जमुन जल, मोहन कुंज बिहारी॥
मर्म न गुरूजन परिजन जानत, नाहिंन वृन्दावन की नारी॥
सासु रिसाइ लरै मेरी ननदी, देखें रंग देहि मोहि गारी॥
मुरली में गावत बंगाली, अधर चुवत बनवारी॥
मुदित पियत संतन सुखकारी पूरब खचित नेह गिरिधारी॥
मृदु मुसकानि जुवति मन मोहति, ही हरि माखन चोर मुरारी॥
'सूरदास' प्रभु दोउ चिर जीवौ' ब्रजनायक वृषभानुकुमारी॥

(98) (काफी)

मानत नाहिं निहोरें, बिना रंग मैं हरि बोरें।
खोलन देत न द्वार किवारन, घेरि लेत घर भोरें।
ग्वालन गोल लगे सँग डोलें, केसरि कुमकुम घोरें,
अबीर की भरि भरि झोरें॥
केतिक दाँव बचाय जमुन–जल, जाउँ उजागर चोरें।
बैरी बाट बँधिकर बैठत, गहि बहियाँ झकझोरें,
फारि पट धरि धरि दौरें॥
बोलत बोल अबोल 'अरी' कहि, गहि दोऊ गाल मरोरें।
भेंटत भुज भरि बार हजारन, चख चूमत चित चोरें,
चतुर चोली बँद खोलें॥
देखि दसा गुरुजन गरियावत, चलत मौन मुख मोरें।
कहाँ लौ 'मतोल' कहों जाकी गति, करि करि जतन करोरें,
भई सारद मति भोरें॥

(99) (काफी)

जसुमति–नंद–दुलारौ, नयौ ब्रज कौ रखवारौ॥
गई रही पनघट, लै कें घट, भरि ज्यों सिर पै धारौ।

औचक आय उलटि घूँघट पट, लै गुलाल मुख मारौ,
अरी! रंग मोपै डारौ॥
पुनि कर पकरि झटकि अँचरा चट, खींचौ कटि कौ नारौ।
दै कर–ताल हँसौ ग्वालन सँग, पचरँग अम्बर फारौ,
मेरौ सब गात निहारौ॥
भाजि गयौ न लयौ बदलौ, मैंने झट पटचीर सँभारौ।
तब तें छाय रह्यो मनमोहन, 'किंकर' प्रानपियारौ,
दृगन तें टरत न टारौ॥

(100) (काफी)

साँवरौ मोहि दै गयौ गारी॥
गारी दै पिचकारी मारी, भींजि गई मोरी सारी।
अबीर गुलाल मल्यौ मेरे मुख पै, ऐसौ अनौखौ खिलारी,
भयौ सखि स्याम बिहारी॥
लपटि झपटि बहियाँ गहि लीनी, भरि पिचकारी मारी।
भींजि गई अँगिया अरु सारी, ऐसौ ढीठ खिलारी,
सखी हाहा करि हारी॥
'कृष्णरसिक' सों विनती करति हों, कीजो कृपा बिहारी।,
अबकी फाग खेलौ मो सों तुम, राखौ भरम हमारी,
वृन्दावन चन्द बिहारी॥

(101) (काफी)

ऐसौ ढीठ जसुमति कौ लँगर, रँग मोपर डारि गयौ॥
घूँघट कौ पट उलिट अचानक, रूप निहारि गयौ॥
फूले कमल, कमल सम्पुट दोऊ, चोली फारि गयौ॥
हा हा करि हरि सों बिनती करि, मोहि अबारि गयौ॥
मुख चुम्बन करि देखि 'किंकरहिं ताहि पबारि गयौ॥

(102) (काफी)

मैं तो याही छैल सों हारी, मारत मोरे नैननि में पिचकारी॥
घर मेरौ दूरि गगरि सिर भारी, मैं नाजुक पनिहारी।
तकि तकि गेंद कुचन पर मारत, ऐसौ ढीठ खिलारी॥
सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, चाल चलत मतवारी॥
'तनसुख' के प्रभु जानि अकेली, सराबोर करि डारी॥

(103) (काफी)

होरी खेलन कैंसे जाऊँ सखी री, हरि के हाथ पिचकारी लसति है॥
और की सारी कुसुम रँग बोरत, हमरी चुनरि गुलनारी रँगत है॥
होरी के खिलैया सम्हरि होरी खेलौ, या ब्रज में राधाप्यारी बसति है॥

(104) (काफी)

मदमातौ छैल ठाढ़ौ रोकै गैल, कैसे जाऊँ री सखी आज पनियाँ भरन॥
मुकुट की लटक चटक पीरे पटकी, माधुरी मूरति सौहै स्याम बरन।
अबीर गुलाल के बादर छाये, पिचकारिन रँग लागै परन॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, रह्यौ ना जात सुनि ढफ की धरन।
बलि बलि जात 'जनार्दन' प्रभु की, बसौ सदा हिय मेरे चरन॥

(105) (काफी)

सखि कछु जतन करौरी, स्याम पनघट अटक्यौ री॥
उठि प्रभात घट लै जमुना तट, भरि कर नीर धरौ री।
झपट झटक झटपट चट नटखट, गहि महि दै पटकौ री,
बहुरि हँसि दृग मटकौ री॥
आई अब होरी रँग बोरी, मेरे जिय खटकौ री।
ना जानूँ 'किंकर' का करि है, मेरे हित हटकौ री,
चुनरी रँग चटकौ री॥

(106) (काफी)

देखौ स्याम मेरी छाँड़ों गैल, न तौ मारोंगी सैनन में॥
करत फिरत नित उठि लँगराई, लाज न नैनन में।
होरी खेलन जो तुम चाहत, अईयो मधुबन में॥
भूलि जाउगे सब चतुराई, करिहों जो मन में।
'त्रिपुरारी' भजि बालकृष्ण छबि, बिहरत कुंजन में॥

(107) (काफी)

कैसें रोकत कन्हैया मोहि बार–बार,कहा तुम ही रँगीले बहार यार॥
माखन खबैया दधि के चुरैया, दैया मुख देखत पट टार टार॥
'श्यामसुन्दर' तोरी कहूँगी जसोदा जी सों, मारूँगी गुलचा चारगाल॥

(108) (काफी)

मोय साँवरे ने गारी दई, दई मैं तो कछु ना कही।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बही।
आपु तौ सैयाँ पार उतरि गये, हम तकति की तकति रहीं॥
दौरि कें पकरौं तो पकरि न आवै, घाटहिं देखि डरीं।
मन की तौ कछु कहि न सकत हों, मेरे दिल की दिलहिं रही॥

(109) (काफी)

चहुँ ओर नदिया रंग सों भरी, निकसन कों डगर ना रही॥
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बही।
हमरे संग की पार उतरि गयीं, हम हीं अकेली रहीं॥
आपुन तो सैयाँ पार उतरि गए, हम सों कछु न कही॥
जानकीदास रूप रस माते, मन आवै सो सही॥

(110) (काफी)

मैं तो नाहीं नाहीं करति रही, पिचकारी मेरें काहे कों दई॥
सूआ सारी जरद किनारी, अबहीं मोल लई॥

तुम पिचकारी कान्हा तकि तकि मारौ, मो पै न जाति सही॥
जाही सों घर–बाहिर कबहूँ, पग नहिं देत मही॥
सासु ननद मेरी शोर करैंगी, काहे को अकेली गई।
अब अपने घर जाउ 'आनन्दघन' जो कछु भई सो भई॥

(111)(काफी)

जुवनवा बैरी भये, कैसें दधि बेचन ब्रज जाउँ।
अति उतंग छतियन पर झलकत, कैसें इनहिं छिपाउँ॥
देखत ही वह दौरि परैगो, मोहन वाकौ है नाउँ।
अब नहिं आन उपाउ सखी री, तजिये गोकुल गाँउँ॥

(112) (काफी)

जहाँ जाउँ तहाँ कृष्ण कन्हैया, लियें पिचकारी डोलै॥
पीछे पर्यौ हमारे ही छैला, हो हो हो होरी बोलै॥
बरजोरी अबीर गुलाल मलै मुख, रहि रहि घूँघट खोलै॥
'परमानन्द' अनौखौ ही छैला, चितइ लेत चित चोरै॥

(113) (काफी)

है अनरीत बड़ी या ब्रज में, कोई न जाहि गुपालहिं हटकै॥
उनहिं न लाज हमहिं गुरुजन डर, बाट चलत मोरी गागरि पटकै॥
अब कैसें लाज रहै या ब्रज में, कर पकरै अरु चूनरि झटकै॥
बहुत सही अब जात सही ना, बाल अहीर कौ आँखिन खटकै॥

(114) (काफी)

मति जाउरी आजु कोऊ पनियाँ भरन, मग रोकत ढ़ोटा श्याम बरन॥
डारत रंग भिजोवत अंबर, मटुकी फोरत बीच धरन।
मलत गुलाल हार गल टोरत, डर लागत मोहिं कंत डरन॥
ग्वाल बाल सँग भीर सखीरी, आगें परत नहिं मेरौ चरन।

फागुन भरि मति जाउ कहूं कोउ, बैठि रहौ सब अपने घरन॥
झगरत लरत डरत ना नैकहु, कासों कहों को सुनै श्रवनन्।
'हरिबिलास' हरि ढीठ लँगरवा, सबसों लगै लँगराई करन॥

(115) (काफी)

जिनि जाउ री आजु कोऊ पनियाँ भरन,
ठाढ़ौ मग में कान्ह मारत पिचकारी तकि तकि॥
मैं तो बगदि आई दूरि सों लखि कें,
पट घूँघट की ओट करि करि।
सीस घुमन लागौ पिंडुरी कँपन लागीं,
हियरा करन लागौ न्यारौ धक धक॥
जाय चाहै ताकों मन बस करि लेय,
तारी बजावै गारी बकि बकि॥
जौ लौं फागुन यही ढँग रहिहै,
बैठि रहेंगी ब्रजनारीं थकि थकि॥

(116) (काफी)

ब्रज में खिलन मति जाउ, तुम पै कोऊ रँग डारि दैहै॥
ये ब्रजवासी बड़े बिसघाती, मारग में इठलैहैं।
तिनके सँग ह्वै जैहौ बावरी, गोकुल जान न देहैं॥
ग्वाल बाल सब मद के री माते, चहुँ दिसि सें घिरि ऐहैं।
इक इक रँग सौ सौ पिचकारी, तुम्हरेहि सीस चढ़ैहैं॥
इतनौ कहौ मेरौ मानौ दुलहिया, फिरि पाछै पछितैहैं।
'भूदरदास' श्याम मिलि जैहें, नैन सों नैन मिलैहैं॥

(117) (काफी)

तुमहीं कहा ब्रज में अनोखी भई,
कानि नहिं काहू की करति दई॥
जानत नहिं कछु चालि यहाँ की, आई अबहिं नई॥

मोहन मिलतहिं जानि परैगी, भूलैगी सबई।
छैल खिलारी रसिक होरी कौ, लीने सखा कई॥
देखत ही तोहि दौरि परैगौ, जानि नवेली नई।
हार तोरि रंग डारि चूमि मुख, चूरीं तोरि दई॥
तब तोसों कछु बनि नहि ऐहै, जब तेरी लाज गई।
'हरीचन्द' सो को ऐसी जो, नै कै नहीं गई॥

(118) (काफी)

चली चलि यों ही बकै दैया मारौ, होरी खेलै श्याम बंशी वारौ॥
मैं जमुना जल भरन जाति, भरि मूठ गुलाल की मारौ।
ता दिन सों दूखति मोरी अँखियाँ, नैक न जात निहारौ॥
फागुन के दिन चार सखी, मन में एक मंत्र विचारौ।
दैहौं बताय तबहिं घनश्यामहिं, होत सखिन सों न्यारौ॥

(119) (काफी)

श्याम होरी खेलन हमसों न आवै, जासों कहियो पलटि घर जावै॥
ऐसिन की परतीति कहा है, कपट की बात बनावै।
भीतर चरन धरन नहिं दीजो, चाहें जितौ ललचावै॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, जित चाहें तित जावै।
'नारायण एक मेरौ भवन तजि, अनत चहें कहुँ जावै॥

(120) (काफी)

जा सों बिन होरी खेलैं न जाऊँगी,
जाने मेरी चुनरी की कीन्ही है कैसी कुगति॥
मटकि मटकि भोंहैं मटकावै, कबहुँ दृगन के भाव बतावै।
ताहू पै अति मृदु मुसकावै, याही भाँति सारे जग कों ठगत॥
जो लों सखी बदलौ न चुकाऊँ, तो लों सखी अन्न–जल न पाऊँ।

ऐसे ढीठ कों नाच नचाऊँ, देखै तमासौ सारौ जगत॥
जौ इततें उतमें उऐ भानू, तौ याकी पगिया में रंग मैं सानू।
'नारायण' जाकी एक न मानू, ऐसो कहा मेरौ बाप लगत॥

(121) (काफी)

चलि वृषभानु किशोरी, श्याम सँग खेलन होरी॥
कंचन कलश रंग केशरि कौ, लै गुलाल भरि झोरी।
करि मुठभेड़ घेरि चहुँ दिसि तें, बसन लेहु सब छोरी,
मलौ मुख कुमकुम रोरी॥
बरबस पकरि श्याम सों पूँछौ, कहु गागरि क्यों फोरी।
चीर हर्‌यौ, मटकी क्यों पटकी, कबहुँ न दाव लगौ री,
तजौ अब माखन चोरी॥
जो माने माने नहिं 'किंकर', भामिनि भेस करौ री।
चलौ लिवाय नन्द के द्वारें, सब मिलि कें बरजोरी,
नचावत गावत होरी॥

(122) (काफी)

साजि कैं जो चली, रँगीली खेलन होरी॥
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साधि चली सुघरी।
नैनन अंजन आँजि कें, मानों बाढ़ि सिरोही धरी॥
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी॥
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही॥

(123) (काफी)

आवौ गुपाल सिंगार बनाऊँ, मुतियन माँग सिंदूर भराऊँ॥
जैसी तान तिहारे मुख की, वैसी तान मैं गाय सुनाऊँ॥
जैसी आप अधर धर फूँकत, निज अधरन पर फूँकि बजाऊँ॥
'सूर' श्याम तुम बनहु राधिका, मैं नँद जू कौ लाल कहाऊँ॥

(124) (काफी)

सब विधि श्याम सिखायौ, तेरे मन एक न आयौ॥
जिनि जा कान्ह मानि ग्वालिन सँग, फागुन अब नियरायौ।
सुनी न कान बानि ना त्यागी, ताकौ फल यह पायौ,
आजु भामिनि बनि आयौ॥
नंदरानी बानी रस–सानी, सुनि जिय हिय हरसायौ।
अरी बीर नेंक पीर निहारौ, दधि कौ घट ढरकायौ,
मेरे मुख अबीर लगायौ॥
कैसी करौं कहौ माँ तो सों, इनकौ रूप सुहायौ।
तिनके प्रेम रंग्यौ रंग होरी, मानत नाहीं मनायौ,
करौ 'किंकर' मन भायौ॥

(125) (काफी)

ब्रज कुंजन में जाइ पकरि लाईं, नंद को लाला॥
हा हा करावत पैयाँ परावत, ब्रज की बाल गुपाला।
एक सखी कर पकरि नचावत, बहुत बजावत गाला॥
पाँय पैंजनी अधिक विराजै, बेंदी भाल विशाला।
बेसरि की छवि कहाँ लगि बरनौं, झूमि रही मोती माला॥
आँखिन अंजन मुख बिच मंजन, लोग कहैं ब्रज बाला।
आनि जसोमति यह छबि निरखति, मोहन मुरलीवाला॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, खेलि रहे नंद लाला।
'सूर' श्याम छबि कहाँ लगि बरनौं, मोहि लईं ब्रजवाला॥

(126) (काफी)

होरी हो ब्रजराज दुलारे॥
बनि बनि आईं सबै मन भाईं बरसाने कीं, अहो प्राण प्यारे॥
बाजुहि निकसि विहँसि मुख पंकज, छिपन दुरन हिय हरन हमारे।
कै कर लेहु कनक पिचकारी, कै मुख सों कहौ हा हम हारे॥

उमड़ी प्रेम नदी चहुँ दिसि तें, तोरि तोरि व्रत नेम करारे।
करुणासिन्धु मिलन के कारण, लोक लाज कुल कानि बिसारे॥
झपटि लपटि गई श्याम सुँदर सों, चपल छटा छबि ऊपर वारे।
जुगल भटू भई लटू लाल पै, पिय प्यारी के चरण पखारे॥

(127) (काफी)

होरी हो ब्रज राज दुलारे॥
बहुत दिननि तें तुम मनमोहन, फाग ही फाग पुकारे।
आज देखियो सैर फाग की, पिचकारिन के फुहारे,
चलें जहाँ कुमकुम न्यारे॥
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, ओ द्वै बापनि वारे।
कै तौ निकसि कें होरी खैलौ, कै मुख सों कहौ हारे,
जोरि कर आगें हमारे॥
निपट अनीति उठाई है मोहन, रोकत गैल गलारे।
'नारायण' तब जानि परैगी, आवौगे द्वारें हमारे,
दरस हमकों दिखला रे॥

(128) (काफी)

होरी खैलों न काहे बरायें जात, का सखियन लखि घबराये जात॥
लाउ ननदी मेरी बोलि संगातिन, ठहरौ श्याम क्यों सकायें जात।
ना सकुचौ रंग कोटि कमोरिन, अतर न चोया चुकायें जात॥
ना अबीर थोरौ कमि हू गुलाल ना, देखौ मैं अबहीं दिखायें जात।
तुमतौ ललन बड़े ढीठ कहावत, केहि मिस आँखे छिपायें जात॥

(129) (काफी)

श्याम होरी खेलन आए हमारे॥
केसरि रंग भरें पिचकारी, उमगि–उमगि उमगा रे।
फेंटन भरें गुलाल कुवंर–नंद, लागत अधिक पियारे,
छैल ब्रजराज दुलारे॥

ग्वाल बाल संग शोभित शोभा, उर बिच उमँग अपारे।
बरजोरी रंगत नई मोरी सारी, मुख पै अबीर लगा रे,
टरत कहुँ नाहिंन टारे॥

(130) (गौरी)

गोरी, होरी खेलन कों आयौ श्याम, जापै रंग क्यों न डारौ री॥
राम वही जानें रावण मार्‌यौ, जानें कंस पछारौ री॥
खंभ फारि हिरनाकुस मार्‌यौ, जानें नखनि बिदारौ री॥
वामन व्है राजा बलि कों छलियौ, जानें गजकों उबारौ री॥
'सूरश्याम' यह बड़ौ ही खिलाड़ी, जाकों मति जानौ बारौ री॥

(131) (काफी)

अबीर मलौंगी कपोल तिहारे, जसुदा लाल ब्रजराज दुलारे॥
यह रितु फागुन छाय रही है, छैल छबीले हौ प्रान पियारे॥
रैन जगाय लेहु रंग रसिया, जो पिय आये हौ द्वार हमारे॥
'ख्यालखुसाल' भरे मन मोहन, जोबन उमँगि उमँगि उमँगा रे॥

(132) (काफी)

आजु जाहि रँग में बोरों री, लगौ है आजु हमारौ दाव री॥
पीताम्बर जाकौ छीनि लेहु अरू, लीलाम्बर पहिरावौ री॥
बाँह पकरि जाकें गुलचा मारौ, अब बनि आयौ मोरौ री॥
नकबेसरि पहिनाइ श्याम कों, सखियन बीच नचावौ री॥
लै केसरि जाके मुख लपिटावौ, कारे सों करौ गोरौ री॥
काजर देहु लगाय ढीढ कैं, गारी सब मिलि गावौ री॥
'परमानन्द' दोऊ कर जोरै, हाहा खाय तब छौरौ री॥

(133) (काफी)

पिचकारी सखी राधामोहन की, छीनि लो, छीनि लो, ए छिना लो॥
अपनी गैल मोहि नित उठि रोकै, जाहि नंद सौगन्ध खबा लो॥
बहुत दिनन में भेंट भई है, जाके नैनों में कजरा लगा लो॥
करि लेहु री अपनौ मन मानौं, जाके गालों पै गुलचा लगा लो॥

वृन्दावन की कुंज गलिन में, बहियाँ पकरि कैं नचा लो॥
'सूरश्याम' रस भीने बिहारी कौं, हियरा माँहि बसा लो॥

(134) (काफी)

नई रे नारि नये जौवन बारी, झूमति गागरि लै चली॥
सिर पर घड़ा घड़े पर जेहरि,नाहक जोवन दै चली॥
एक हाथ कुमकुम दूजै हाथ रोरी, अबीर उड़ावत लै चली॥

(135) (काफी)

धरैं शीश रँग भरीं मटुकियाँ, फिरहिं बाल ब्रज की गोरी रे॥
लेहु री लेहु आनि कोऊ गोरस, गुप्त कियें पट में रोरी रे॥
गहक बार मन मोहन रसिया, आप गये तिनकी ओरी रे॥
दान दिये बिन जान न पैहौ, बेचि गईं केतौ चोरी रे॥
माँड़ि मंजु मुख मुखहिं मलायौ, बालम की चोरा चोरी रे॥
आँख अँजाय चले नंदनँदन, कहत फिरत हो हो होरी रे॥

(136) (काफी)

बाबरी बनि आई, तुम्हें होरी कौनें खिलाई॥
नैनन में चक डोरि बसें, तेरे घूँघट में चतुराई।
पूछँति सास कहौ मेरी बहुअरि, अँगिया कहाँ मसकाई,
तुम्हें होरी कौनें खिलाई॥
गैया दुहाबन हम गई सासु मेरी, बछरा लात चलाई।
टूटो हार मसकि गई अँगिया, मुरकी है नरम कलाई,
हमें होरी काऊ ना खिलाई॥
बछरा दोष न देउ मेरी बहुअरि, छिपहि न बात छिपाई।
तुम तौ गई बहुअरि नन्द पौरकों, मिल गये कुँवर कन्हाई,
तुम्हें होरी कान्ह खिलाई॥

(137) (काफी)

आजु हों होरी हरिहिं खिलाऊँ॥

ब्रज की खोरि साँकरी घेरैं, गारी देउँ दिवाऊँ।
चोवा चन्दन और अरगजा, मूठि गुलाल उड़ाऊँ॥
अपने अपने घर सों निकसौ, अबीर झोरि भरि ल्याऊँ॥
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे मिलन कों, गारी गाइ रिझाऊँ॥

(138) (काफी)

कौन खिलारिन खेलैगी होरी॥
चलौ सो जोरि बटोरि जमुन तट, केसरि कुमकुम घोरी।
हम आवत सँग लियें ग्वाल सब, हिलमिल फागु रचौ री,
जहाँ नहिं काहु की चोरी॥
नींकी कही सही सोई जदुपति, पर विनती इक मोरी।
जो हारै 'किंकर' सो ताकौ, यह तुम पैज करौ री,
ग्वालिनी कहति निहोरी॥

(139) (काफी)

बनि आईं हैं चातुर नारि, होरी रंग भरी॥
सूआ सारी घेरि घाँघरौ, अंजन बेंदी भाल,
रोरी आड़ दिएँ॥
मुतियन की लर यों लटकति है, लट नागिन लहराय,
चोटी पीठि परी॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, अरू बाजत करताल,
नाचैं इन्द्रपरी॥
अबीर गुलाल के बादर छाये, रंग की परत फुहार,
भीजैं कृष्ण हरी॥

(140) (काफी)

आजु सखी ब्रज ओरी, साँवरौ खेलत होरी॥
मोर मुकुट मकराकृत कुडंल, भाल विराजत रोरी।
मुरली लकुट युगल कर राजत, कटि पट–पीत पिछौरी,
करत चितवन में चोरी॥

इततें आईं सुघर नन्दिनी, सँग लियें सखियाँ करोरी।
होड़ समेत परस्पर डारत, रँग अबीर की झोरी,
करैं मुख चंद–चकोरी॥
रस बस युगल रूप इमि जिमि नभ, घन–दामिनि इकठौरी।
सिंह जुझारि बसी यह सुन्दर, मन–मन्दिर में जोड़ी,
भाग तिनकौ है बड़ौ री॥

(141)(काफी)

ब्रज में दोऊ खेलत होरी॥
कर कंकन कंचन पिचकारी, केशरि रँग कियौ री।
छिड़कत रंग अंग सब भींजत, चितबनि में चित चोरी
लगौ चित सों चित जोरी॥
धनि वृन्दावन धनि वंशीवट, धनि यह फाग रच्यौ री।
सरस रंग रीझीं या ब्रज पै, वारि बैकुंठ दियौ री,
जोरि तिनका सी टोरी॥
नन्द–नँदन ब्रजराज साँवरौ, औ वृषभानु किशोरी,
'परमानन्द' रूप रँग भीजें, अबीर लियें भरि झोरी,
चलौ फेंके हरि ओरी॥

(142) (काफी)

कर लियें अबीर गुलाल, साँवरौ खेलत होरी॥
स्याम गह्यौ ललिता कौ नीलाम्बर, उनहूँ पीताम्बर गह्यौ है बहोरी।
छूटी अलक मुकुट लपिटानी, मनहुँ व्यालिनी ने चंद्र ग्रस्यौ री॥
केसरि कुमकुम कुसुम रंग लै, मिलि सब वसन सुरंग रंग्यौ री।
पकरि नचावन चहति गुपालहिं, देउ बैनु वृषभानु किसोरी॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, और सखी धुनि ढोल टंकोरी।
गावत चलीं हैं विभास ललित सुर, शिव विरंचि सनकादि छक्यौ री॥
मदन मयंक दिवाकर लज्जित, और कवी को बरनि सकौ री।
गावत सुनत चारि फल पावत, लखि हरि–पद द्विज 'सूर' तरयौ री॥

(143) (काफी)

आजु नगर में धूम मची है, हो होरी खेलत कुँवर कन्हाय॥
मची है कींच मग बीच वृन्दावन, परम पीतपट रहे हैं चुचाय।
बैंनी झुकी, अलक की झलकनि, मानों मेघ रहे झर लाय॥
चातक मोर कोकिला बोले, दादुर बोले हैं मदन जगाय।
ऋतु बसन्त फूले बन उपवन, द्रुम द्रुम लता रही लहराय॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, भेरि रबाब बीन सहनाय।
चंग उपंग खंजरी महुअरि, नूपुर धुनि सुनि नगर सिहाय॥
इन्द्र कुबेर वरूण सनकादिक, रवि–रथ ससि रथ चल न सकाय।
जोगी जती तपी मुनि ग्यानी, उनहूँ के जोग रहे विसराय॥
जल थल थकित सभी मग डोलैं, पंथिन के रहे पंथ भुलाय।
गोपी ग्वाल बाल सब खेलें, शिव विरंचि गति रही है लुभाय॥
सारद सेस महेश बखानत, उनहूँ पै हरि गति जानि न जाय।
चिरजीवौ ब्रजराज साँवरे,'सूर' विमल इतनौ जस गाय॥

(144) (काफी)

लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल॥
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल॥
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़िली, लालन के गल माल॥
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उड़गन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल॥
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल॥

(145) (काफी)

श्यामा श्याम सों होरी, खेलत आजु नई॥
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भई।
सखीं सखा भई, सखा सखी भए, जसुमति भवन गई॥

गोरे स्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढ़प, नाचत हैं थेई थेई॥
पलटौ रूप देखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
'सूर' स्याम कौ वदन विलोकत, उघरि गई कलई॥

(146) (काफी)

ब्रज में हरि होरी मचाई॥
इततें आई सुघरि राधिका, उततें कुँवर कन्हाई।
खेलत फाग परस्पर हिलमिल, शोभा बरनि न जाई,
नन्द घर बजति बधाई॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, अरू बाजै सहनाई।
उड़त अबीर कुमकुमा केसरि, रहत सदा ब्रज छाई,
मनहु मेघवा झर लाई॥
राधा सैन दई सखियन कों, झुंड–झुंड उठि धाईं।
झपटि लपटि गयीं श्याम सुंदर सों, बरबस मुख लपटाई,
लाल जू कों नाच नचाई॥
लीन्हों लकुटि पीताम्बर मुरली, सिर सों चुनरि उढ़ाई।
बेंदी भाल नैन बिच काजर, नक बेसरि पहिराई,
श्याम कों नारि बनाई॥
फगुआ दिये बिन जान न पैहौ, करियो कोटि उपाई।
लैहों काढ़ि कसरि सब दिन की, तुम चित–चोर कन्हाई,
बहुत दधि मेरी खाई॥
मुसकरात का मोरि मोरि मुख, कहाँ गई चतुराई।
कहाँ गये वे सखा तुम्हारे, कहाँ जसोमति माई,
लेत किन तुमहिं छुड़ाई॥
रास–बिलास करत वृन्दावन, ब्रज बनिता–जदुराई।
राधे–श्याम जुगल जोड़ी पर, 'सूरदास' बलि जाई,
प्रीत उर रहत समाई॥

(147) (काफी)

होरी खेलत विपिन बिहारी, लियें रँग की पिचकारी॥
ग्वाल–बाल लीन्हें रँग–भीनें, बेणु बजावत प्यारी।
ताल मृंदग बीन ढफ बाजत, नाचत दै दै तारी,
मुदित मन गिरिवरधारी॥
करि श्रंगार सकल बनि आईं,घर घर तें ब्रज नारी।
सैन दई घनश्याम सखन कों,पकरौ गोप–कुमारी,
बात नहिं जाति हमारी॥
रंग गुलाल ग्वाल लै धाये, सब बनिता रँग डारीं।
लपटि झपटि पट पकरि सखा सब, देत फाग की गारी,
निरखि विहँसत बनवारी॥
कोऊ कहै मेरौ हरवा टूटौ, अरू मेरी अँगिया फारी।
'हरिबिलास' हरि–फाग अनोंखौ, हरि लई लाज हमारी,
सदन सब तजौ पियारी॥

(148) (काफी)

रँग डारें मोहन हम पै भागौ जाय, कोऊ लीजो डगरिया घेरि री॥
चोया भी लइयो चँदन घिसि लइयो, कोऊ लइयो केसरि रँग घोरि री॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, कोऊ दीजो दुहइया फेरि री॥

(149) (काफी)

यह न चीर की चोरी, सम्हरि नेंक खेलियो होरी॥
ना यह शंख–दलन छिति–धारन, दसन–सिंधु झकझोरी।
ना प्रहलाद उबारन, मारन हिरनाकुस–उर कौरी,
नवल जिहिं कपट छल्यौ री॥
ना हम वीर सूर क्षत्री तन, जिन हित परसु धरौ री।
ना दसकंध अंध कामातुर, सकुल सपुत्र नस्यौ री,
तनिक प्रभु भौंह मरोरी॥

ना यह घट झटकन अटकन मग, दधि पटकन बरजोरी।
भाजि चलन हँसि मिलन उमँग अँग, दृग मटकन मुख मोरी,
नचन छबि काम करोरी॥
हम अबला अतुलित बल गिरिधर, भली रची विधि जोरी।
यह संयुग निरखै हँसि 'किंकर' हरसि बहोरि बहोरी,
प्रेम रँग बहत हियौ री॥

(150) (काफी)

होरी खेलै श्री राधे–नवल री सजनी, तट जमुना जी के तीर॥
नवल दुलहिया मद की माती, ओढ़ै कुसुम रंग चीर।
भरि पिचकारी मारन लागी, लै लै जमुना को नीर॥
ग्वाल बाल सब सखन संग लियें, और लियें बलवीर।
'परमानन्द' अनोखौ खिलाड़ी, आखिर जाति अहीर॥

(151) (काफी)

ऐसी होरी है रही ब्रज में, श्याम राधिका सों खेलत होरी॥
अबीर गुलाल के थार भरे हैं, केसर रंग सों भरी मेरी गगरी॥
अबकी चोट बचाऊँ मोरी आली, आजु बिरज सारौ भींजि रहौरी॥

(152) (काफी)

पिय मनमोहन के संग, राधा खेलत फाग॥
दोउ दिसि उड़त गुलाल अरगजा, दोउन उर अनुराग॥
रँग–रेलिनि झोरी झोलनि में, होत दृगन की लाग।
'हरीचंद' लखि सो मुख शोभा, अयन सराहत भाग॥

(153) (काफी)

चहुं दिसि धूम मची है, हो हो होरी सुनाय॥
जित दैखौ तित एक यही धुनि, जगत रह्यौ बौराय॥
उड़त गुलाल चलत पिचकारी, बाजत ढफ घहराय॥
'हरीचंद' माते नर–नारी, गावत लाज गँवाय॥

(154) (काफी)

अबकी फाग कौ रंग न बूझौ, धूम मची है श्री वृन्दावन में॥
श्याम बिहारी सुघर खिलाड़ी, खेलि रहे होरी कुंजन में।
तकि तकि मारत अंग निहारत, दाग लगावत गोरे वदन में॥
चोया चन्दन अतर अरगजा, फेंट गुलाल भरैं झोरिन में॥
मोकों कहा कोऊ ढूंढ़ि सकै है, मैं तौ छिपी हों साँवरे के मन में॥

(155) (काफी)

उठौ गोरी माँग सम्हारौ, क्या बैठी मन मार॥
बन में फूली सरस अमिलिया, फूलि रही कचनार।
दोऊ जुवना छतियन पर फूले, दिन देउ चार उधार॥
जोवन माँगे देउ दुलहिया, उपजौ अंग तुम्हार।
तुम्हरौ तौ कछु बिगरि न जै है, मन रहि जाहि हमार॥

(156) (काफी)

नित उठि मान मनावे प्यारी, नित उठि मान मनावे।
कौन सी टेव परी ब्रज सुंदरि, पिय कों पाँय परावे॥
नहिं बूझति समुझति न सुनति रिस, तनिक बात बढ़ि जावै।
जो तू कहे मैं परम सयानी, स्यानी कौन कहावे॥
यह दिन फाग सुहाग सखी री, सब काहू मन भावै।
'श्री विट्ठल' गिरिधरन लाल कों, काहे न रंग चढ़ावे॥

(157) (काफी)

चहु दिसि मैं फिरि आई, लाल नहिं देत दिखाई।
मधुबन गोकुल और बृन्दाबन, नहिं पाये जदुराई॥
नाच तमासे सब तजि दीन्हें, उनही सों डोर लगाई।
अब तुम आओ दरस दिखाऔ, उर अन्तर धुँधुआई॥
तेरी छवि पर हम लोई हैं, हर तन नैन समाई।

इतने हू पर पीर न आवै, यही तुम करत भलाई॥
कहा दोष हमरे सर थोपौ, हम हैं जाति लुगाई।
हम तेरे चरनन की दासी, मत लावौ निठुराई॥

(158) (काफी)

सखी कहौ कैसे धीरज आवै, मोहि कोकिल बोल न भावैं।
फागुन मास कौ ऐसौ महात्तम, पशु पंछी घर आवैं॥
ते बड़भागी हम ही अभागीं, रोवत नयन सुजावें॥
प्राण प्रिया परदेश बसत हैं, खबरि न कैसें हुँ पावें॥
कै पंछी बनि तहँ उड़िजावैं, कै धरती धँसि जावें॥

(159) (काफी)

दृगन झरना झर लायौ, साँवरौ अजहूँ नहिं आयौ॥
बृज बनितन कौ संग छोड़ि कें, मधुवन जाय बसायौ।
दासी करी पटरानी श्याम, गोपीनाथ कौ नाम लजायौ,
दास चेरी कौ कहायौ॥
लिखि पतियाँ छतियन बिच राखी, ऊधौ संदेसो लायौ।
कहारे करों ऐसो मीत विसासी, लिखि लिखि जोग पठायौ,
जहर बिस मोय पिलायौ॥
गृह 'विशाल' सबही हम त्यागौ, दृग अंजन न लगायौ।
अंग भभूति गले मृगछाला, श्रृंगीनाद बजायौ,
फागुन में अलख जगायौ॥

(160) (काफी)

मेरा पिय बिन जोबन करत जोर, मैं तड़प तड़प कर करूँ भोर॥
सूनी सेज पिया घर नाहीं, कसकि कसकि जिया रहत मोर॥
तास की अँगिया मसकन लागी, टूटन लागे बँद के डोर॥
गावैं 'गुदर' पिया अजहूं न आये, पपिहा पिया पिया करत शोर॥

(161) (काफी)

पिय बिनु नहिं मानें, उमग्यौ जोबन जोर री॥
देखि फाग ऋतु बन–द्रुम फूले, कियौ मदन घनघोर री॥
बाढ़ी अँग–अँग काम कसक अति, सुनि सुनि कोयल सोर री॥
'हरीचन्द' प्यारे बिन मारत, छिन छिन मदन मरोर री॥

(162) (काफी)

पिय अजहुँ न आये, बीती जाति बहार री॥
कैसें कै दिन बितवौं आली, जोबन करत उभार री॥
कहा करों कित जाऊँ बताऔ, यह समयौ दिन चार री॥
अली 'माधवी' पिय बिन व्याकुल, कोउ न सुनत पुकार री॥

(163) (काफी)

सखी देखौ आयौ है जुलमी फगुनवा, कब हुइ है हमरौ गवनवा॥
सब सखियाँ मिलि रंग मचावति, अपने री अपने भवनवा।
गाइ बजाइ लाइ पिय कों उर, खेलत सबही जहनवा॥
हम बिरहिन पछितात रैन दिन, बैठति उठति अंगनवा।
लालन आवन मदन सतावत, मानत नाहीं जुवनवा॥

(164) (काफी)

ननदिया मोहि ना सतावौ, मैं तौ विरहा की मारी मरी॥
ससुर हमारे असिया बरस के, सासु हमारी वारी।
सैयां हमारे पलना झुलत हैं, हम ही झुलावन हारीं॥
बरियो रे बँमना बरियो रे नउआ, जिन मेरी लगुन चढ़ाई।
माई बाप सब अपनी गरज के, को जानें पीर पराई॥

(165) (काफी)

कालि कहाँ हे कन्हाई, हमें राति नींद न आई॥
तुम्हरी तौ रैन चैन सों गुजरी, कुबजा सों प्रीति लगाई।

हम तड़पैं जैंसे जल बिन मछरी, मुरकी नरम कलाई,
करत हमसों चतुराई॥
प्रातहिं उठि मुख मंजन करिकें, मुतियन माँग भराई।
हम तौ आजु स्याम सँग सोवें, फुलवनि सेज बिछाई,
कहत अब बात बनाई॥
आजु भले आये मनमोहन, उनसों आँखि चुराई।
ऐसी प्रीति न अब निबहैगी, जानि लेहु जदुराई,
तुम्हें है नन्द दुहाई॥

(166) (काफी)

राति पिया चोरी चोरी गये, मेरे मन में रही एक बात॥
कोयल है उड़ि जाऊँगी बाग में, मो पै छोड़ौ कुई और बाज॥
मछली है धँसि जाऊँगी ताल में, मोकों डारौ लहरिया कौ जाल॥

(167) (काफी)

राधे नंदनंदन समुझाय रहीं, होरी खेलौ फागुन रितु आय गई॥
बरसाने की सुघर ग्वालिनी, पिय सँग झगरि रही।
अबकी फागुन होरी तेरे सँग खेलो, जान दे कान्हा भई सो भई॥

(168) (काफी)

गगरिया घर धरि आऊँ तौ लौं, ठाढ़े रहियो माखनयार॥
गगरी मैं धरि आऊँ चुनरी बदल आऊँ, करि आऊँ सोलह सिंगार॥
मिस्सी लगाय आऊँ टीका बेंदी करि आऊँ, भरि आऊँ मुतियन माँग॥

(169) (काफी)

गोरी बाँके जुबनवा छिपायें जाति, मन रसिक छैल के लुभायें जाति॥
बाट चलत चपला सी चमकति, पतरी कमरि बल खायें जाति॥
भौंह नचाय गड़ाय कें नैना, मन्द मन्द मुसकायें जाति॥

(170) (काफी)

अब मैं कैसें निकसों अँगनवा, गुइयाँ मेरौ छैला निहारै जुबनवा॥
सोवति ही सुख नींद अटरियाँ, सैयाँ कौ देखौ सपनवा।
जागि परी सैयाँ पास न पाये, भरि आये नीर नयनवा॥
बेगि बुलावौ पंडितवा कों सजनी, सैयाँ कौ देखें सगुनवा।
लिखि यह पाती भेजौ पिया कों, बेगि करावें गवनवा॥

(171) (काफी)

नाहक सैया मोहि गरवा लगावत, मैं तो उमरिया की थोरी॥
मैं भय खाय हाय बहु विधि तें, विनती करों कर जोरी॥
फागुन–गुन मन एक न मानत, अंग अंग झकझोरी॥
अधर–सुधा रस लैन झुके लखि, मैं बैठी मुख मोरी॥
झपटि लपटि गहि नैंक रिसाने, चूमि लियौ बरजोरी॥

(172) (काफी)

अँगिया बैंगनी लपिटानी, गोरे गात॥
यह अँगिया मेरे मयके सें आई, भेजी पुराने यार॥
जा अँगिया में मोती लागे, हीरा जड़े पन्नालाल॥

(173) (काफी)

अँगिया ना छुऔ, मैं तौ करोंगी कपोलनि लाल॥
यह अँगिया नहिं धनुष जनक कौ, छुअत टूटौ ततकाल।
यह अँगिया नहिं नारि गौतम की, परसि उड़ी ततकाल॥
कहा रे विलोकत भृकुटि कुटिल करि, नहिं पूतना की खाल।
यह अँगिया कालिय जिनि जानों, जाहि नथ्यौ तत्काल॥
गिरिवर उठाय भये गिरिधारी, नाहि जानों नन्दलाल।
जाऔ जी खाऔ सुदामा के तन्दुल, माखन चोर गँवार॥
इतनी सुनि मुसिकाय साँवरे, लीन्हों है अबीर गुलाल।
‘सूर स्याम’ मुसिक्याय साँवरे, सखियन कीन्हों है निहाल॥

(174) (काफी)

दैया मोरी अँखियन परि गयौ, ऐसे गुलाल खिलैया॥
अवधपुरी में जनम लियौ है, नाम धरायौ रमैया।
फूफू बहन नहीं सिखलायौ, नाच करायौ थैया थैया॥
जौ तुम होरी खेलन चाहौ, राम लखन दोऊ भैया।
कछुक दिना मिथिला में रहियो, मिलकर चारौ भैया॥
माई बाप के अधिक लड़ैते, नाम धरयौ है रमैया।
राम लखन और भरत शत्रुघन, कौसल्या के छैया॥
'मधुर अली' तुम डोलौ गलिन में, नाम धरायौ रमैया।
काहू सखी के पालें परौगे, नाच नचैहै ता ता थैया॥

(175) (काफी)

प्यारी होरी है कैं जोरी॥
जो तुम निधरक झुके ही परत हौ, मानत नाहीं निहोरी॥
कहा कहैंगी देखनवारीं, जो मेरी दुलरी तोरी॥
'हरीचन्द' मुख चूमि भजन की, बदी कौन नें होरी॥

(176) (काफी)

लागी री साँवरे की मोरी॥
घाट बाट घर बाहर मोहन, करत फिरत होरी होरी।
कै ब्रजराज कुमार रहैगो, कै वृषभानु किशोरी,
रारि अब बहुत बढयौ री॥
मैं जमुना जल भरन जाति ही, पहिरें सुघर पटौ री।
अबीर गुलाल की धूँधरि में सखि, मोहन मोहि गह्यौ री,
मैं हूँ मुरली गहि तोरी॥
एक दिवस मेरी आय अचानक, नाजुक बहियाँ मरोरी।
मैं लपटाय छुड़ाय भजी, अँगिया लै केसरि बोरी,

मैं हूँ मुख मारी रोरी॥
'सूर श्याम' की प्रीति अलौकिक, बरनि सकै कवि को री।
शेष महेश गणेश हू हारे, सारद की मति भोरी,
सदा जुग जुग जीवै जोरी॥

(177) (काफी)

जसुदा तेरौ कान्ह चबाई॥
मैं जमुना जल भरन जाति ही, घर में जानि धराई।
पात पात कर घर मेरौ ढूँढौ, सीकें को माखन खाई,
बँधीं मेरी धेनु छुड़ाई॥
दधि की मटुकिया धरी सीकें पै, दाबि ढाँकि धरि आई।
उन हरवाइ उतारि लई रे, खाइ परी सो खाई,
बची अँगना लुढ़काई॥
मैं दौरी दरवाजौ घेरौ, घेरौ बनाइ बनाई।
मैं अपने बस पकरि लिये हैं, उन चतुराई चलाई,
नैन बिच प्रीति लगाई॥

(178) (काफी)

भलौ री पेच तेरे रंग रस कौ, तेरौ खेल मो करिजवा में कसकौ॥
ऐंड़ी ऐंड़ी फिरति साँवरी, करि राख्यौ जाहि अपने री बसकौ॥
वृन्दाबन की कुंज गलिन में, बहुत भाँति जाहि हटकौ री हटकौ॥
'नासर' पिया सँग होरी खेलि आई, नयौरी खिलाड़ी भयौ दिन दसकौ॥

(179) (काफी)

साँवरे के चरित्र सुनौ री॥
एक समय ब्रज की सब बनिता, हरषि चलीं जल कों री।
मज्जन हेतु धँसी जमुना में, कोऊ श्यामल कोऊ गोरी
करत जल में किलकोरी॥

ताही समय ब्रजराज साँवरौ, जमुना तट पहुँचौ री।
चीर उठाय कदम चढ़ि बैठो, चढ़ि गयो नवल किशोरी,
मुदित मन आनँद सों री॥
लै डुबकी उघरी बहुरी जब, एक सखी उनमें री।
जमुना तट जब पट नहीं पायो, कहत सखिन सों यों री।
बसन सब कौन हरौ री॥
उनमें से एक चतुर नायिका, प्रेम अधिक रस बोरी।
इत उत देख चहुँ दिसि देखी, कहत कदम पर को री,
बसन सब याही हरौ री॥
बोले श्याम मधुर रस बतियाँ, तुम सब लाज तजौ री।
लाज छाड़ि उठि सन्मुख धावो, तब देहौं पट तोरी,
टेक सब जानत मोरी॥

(180) (काफी)

होरी खेली कहाँ जासों सारी फटी॥
केसरि कींच मची गलियन में, पिचकारिन की लागी डटी॥
अबीर गुलाल के बादर छाये, तेरी भौंहें बरौनी गुलाल अटी॥

(181) (काफी)

श्यामा ब्रज खेलति होरी॥
करि सिंगार नखसिख सों बनिता, सकल भई इकठौरी।
वृन्दावन में फाग मचायौ, रूप – सिन्धु वर गोरी,
वयस की हैं सब थोरी॥
नन्द सुवन तेहि औसर आये, लै गुलाल भरि झोरी।
घेरि लियौ ब्रज गोप कुमारिन, बेनु लई कर छोरी,
लेपि हरि आनन रोरी॥
मिलि मिलि यूथ नवाय श्याम कों, कर पकरौ बरजोरी।
वदन चूमि पुनि कंठ लगायो, औ वनमाला तोरी,
पाग केसरि में बोरी॥

कोउ गहि पानि कहति केशव सों, बहुत करी दधि चोरी।
'हरि बिलास' कोउ नारि सुनयनी, गारी देत मुख मोरी,
हँसति वृषभानु किशोरी॥

(182) (काफी)

श्री वृषभानु नवल नागरि सों, खेलत रंग रह्यौ री॥
अलि–सुत युग वरनौ बंकट छबि, जल सुत अधर धरौ री॥
मंजुल कटि युगांचल राजै, मानों शशि राह ग्रसौ री॥
हँसि मुसकाय सुघर सांरग सौ, रमणी कौ रूप धरौ री॥
श्यामा–श्याम सकल गुण आगर, सुख सागर सिरजौ री॥
'सूर' श्याम चरननि पर बलि बलि, यह सुख नहिं बिसरौ री॥

(183) (काफी)

अरी उठि देखि सखी, होरी मचि रही तेरे द्वार॥
दधि–सुत–वाहन दृग करि गामिनि, सर–सुत सौ मुख सार॥
वीर, अनुज टेरत है ताकों, उर भरि लियें साथ अपार॥
गुर को आदि लाल पट पूरण, लै प्रीतम मुख डार॥
हरि–भोजन तब दोय पै आवै, ताहू में दिन गये चार॥
'नारायण' हाटक तजि सजनी, भृम कौ रंग विहार॥

(184) (काफी)

कालि होरी गये हारि श्याम, आजु तुम फिरि आये॥
सुफलक–सुत–स्वामी–भगिनी–पति, मीत की नारि पठाये॥
मेघ–शब्द–जननी–पति–रिपुकुल, देव नाम संग लाये॥
नर–केहरि–रिपु की भगिनी कौ, नाम लेत न लजाये॥
सरि–सुत–मित्र–शत्रु, भ्राता, अरि, सौ मुख पान चबाये॥
'नारायण' सुरभि कुल अस्थल, क्यों अब चाहत हँसाये॥

(185) (पीलू)

जो यह फाग मच्यौ भव सागर, अजब खिलाड़ी कौ खेल री॥
नटवा एक कला बहुतेरी, रंग सबन बिच मेल री॥
समझि बूझि मन आदि अन्त तकि, सोई सोई रँग बिच मेल री॥

(186)(काफी)

जतन बिन मिरगा नें खेत उजारौ॥
पाँच मिरग और पचीस मिरगनी, मिलि चारौ के चारौ।
अपने री अपने रस के जे लोभी, करि दियौ न्यारौ न्यारौ॥
अम्बा खाय इमिलिया खाई, केशरि बाग उजारौ।
मिरगा कों किस विधि पकड़ा, करि दियौ न्यारौ–न्यारौ॥

(187) (काफी)

करिबे कौन बहाना, गवन हमरौ नगिचाना॥
पहलें तौ चूनरि मोरी मैली, दूजै पिया घर जाना।
तीजै डर मोहि सासु ननद कौ, चौथे पिया देहि ताना॥
प्रेम नगर की डगर कठिन है, वह रँगरेज सयाना।
एक बेर चूनरि मोरी रंग दे, तासों पिया पहिचाना॥
राह चलत सदगुरू मोहि मिलि गये, उन्हूँ को नाम बखाना।
मेहर भई उनकी जब मोपर, तब ही लगे ठिकाना॥

(188) (काफी)

चेतुरी मैं महा मद माती॥
जौ लगि मातु पिता घर प्यारी, खेलि कूदि इठलाती।
गवन की चेत करो ना तिनकी, सुनत हि नाम पराती,
मुखें कहु बोलि न आती॥
निज प्रीतम सों प्रीति नहीं है, औरन संग लुभाती।
नाम अमी रस त्यागि दियौ है, विषय हलाहल खाती,

कभी न हिये पछिताती॥
खेलत रही हों सखियन के साथें, आय गई पिय पाती।
देखत ताहि नयन भरि आये, बहिर गई है छाती,
कही कछु जात न बाती॥
कहत 'सिरी' पुर देखन धायौ, प्यारी गवने जाती।
जो सखियाँ निज प्रीतम चीन्हत, सोई सदा सुख पाती,
हिये में पिया के समाती॥

(189) (काफी)

नैहर में दाग लग्यौ चुनरी॥
ओढ़ि चुनरिया चली मायके, लोग कहें धन कहा फूहरी॥
ना कहुँ भेंट भई रंगरिजवा, ना पमरौ धुबिया करै उजरी॥
हाट लगी है सौदा करि लेउ, मँहगा साबुन है या नगरी॥
कहत 'कबीर' सुनौं भाई साधो, बिन सतसंग होय ना उजरी॥

(190) (काफी)

आई गवनवा की सारी, उमरि अजहूँ मोरी बारी॥
साज सजाय पिया लै आये, और कहरिया चारी।
बम्हना बेदर्दी अचरा पकरि कें, जोरत गँठिया हमारी,
सखी सब गावत गारी॥
विधि गति बाम कछु कहत परै ना, बैरिन भई महतारी।
रोय रोय अँसुआ पोंछति है, घर सों देत निकारी,
भई सबकों हम भारी॥
गोनों कराय पिया लै चाले, इत उत बाट निहारी।
छूटत गाँव नगर सों नातौ, छूटत महल अटारी,
करम–गति टरति न टारी॥
नदिया किनारे बलम मोरे रसिया, दीन्ह घूँघट पट टारी।
थर थराय तन काँपन लाग्यौ, काहू न दीख हमारी,

पिया लै आये गोहारी॥
कहत 'कबीर' सुनौ भाई साधो, यह मत लेहु विचारी।
अबकी गउना बहुरि नहिं अउना, करिलै भेंट अकुँवारी,
एक बेरि मिलि लै प्यारी॥

(191) (काफी)

यह दिन चार बहार री, पिय सों मिलि गोरी॥
फिर कित तू, कित पिय किन फागुन, यह जिय माँझ बिचार॥
जोवन रूप नदी बहती यह, लै किन पाँव पखार॥
'हरिचँद मति चूक समय तू, करि सुख सों त्यौहार॥

(192) (काफी)

बीती अवधि तेरौ खेल न ह्वै है, जुबना अकारथ काम न ऐहै॥
जो कछु रूप सँभारौ निहारौ, अंत समय फिर संग न जैहै॥
मिलन कों आईं संग सहेली, ऐसे पिया कों कौन मनैहै॥
गावें 'गुदर' पिया सासुरें जैह्वै, नैहर में को पार लगैहै॥

(193) (काफी)

क्या रे गुमान करै जिन्दगानी का॥
जिन साहिब ने जन्म दिया है, रूप दिया अति नीका।
रूप पाय अभिमान न कीजै, रंग रूप सब फीका,
बिना दरसन उस पी का॥
हिन्दू होय ब्रत पहिचाने, पूजै पेड़ तुलसी का।
पाप पाखंड दूर कर दिल से, यही धर्म का टीका,
यही तप है तपसी का॥
मुसलमान ईमान संभारे, रक्खै ध्यान नबी का।
रोजा नमाज बंदगी गुजारै, वो ही मुसलमान टीका,
पढ़ै कलमा उस नबी का॥

‘असरफ अली’ तुम भरि भरि दीजो, प्याला प्रेम–प्रीति का।
पीकर प्याला मगन होइ बैठे, ध्यान धरै रे वहीं का,
जो मालिक हम सबही का॥

(194) (ठुमरी)

कन्हाई माई, अँखियन होरी मचावै॥
अँखियन में अनुराग अरूणयी, अँखियन रंग भरावै॥
अँखियन में ललचाय लालची, अँखियन लालच लावै॥
‘नागरीदास’ बैठ अँखियन बिच, फिर अँखियन तरसावै॥

(195) (काफी)

देखौ सखी कैसा ये देश निगोड़ा, सारे जग में होरी या ब्रज में होरा॥
फागुन मास लगौ कहा सजनी, डरपत है मन मोरा।
अपने जियकी कासों कहिए, तन पिचकारिन बोरा,
मदन जल में जमु वोरा॥
हों जमुना जल भरन जाति ही, देखि बदन मेरा गोरा।
मोसों कहत चलौ कुंजन में, तनिक–तनिक से छोरा,
डारि अँखियन में डोरा॥
जियरा देखि डरानौं री सजनी, लाज शरम की ओरा।
क्या बूढ़े क्या लोग लुगाई, एक सें एक ठिठोरा,
काहू सों काहू को जोरा॥
निपट निडर नन्द कौ री सजनी, चलत लगावत चोरा।
कहत “गुमान” सिखाय सखन मेरौ, सगरौ अंग टटोरा,
न मानत करत निहोरा॥

(196) (काफी)

काहे को मान करत जोबन को, खेलन निकसी होरी रे गुइयाँ॥
अपने री अपने मंदिर सों निकसीं, कोऊ साँवरि कोऊ गोरी रे गुइयाँ॥

भरि भरि मूठि गुलाल उड़ावति, सासु ननद की चोरी रे गुइयाँ॥
होरी कौ साज संग लिये डोलैं, खेलत में कहा चोरी रे गुइयाँ॥

(197) (काफी)

कैसे मैं होरी खेलौ पिया संग, दुविधा रारि मचाइ रही रे॥
पाँच पचीस ने फागु रच्यौ है, ममता रंग बनाय रही रे।
नाचत लाज सरम के आगें, संशय भाव बताइ रही रे॥
करि सिंगार कुमति बनी बैठी, भरम के घुंघरू बजाइ रही रे।
ये तीनों ताल मृदंग बजावें, मैं मैं रागिनी छाइ रही रे॥
कपट कटोरा मधु विष भरि कें, तृष्णा मन को छकाइ रही रे।
जाही जीव कों बस करि अपने, हंस को काग बनाइ रही रे॥

(198) (काफी)

जामें आवागमन लागी डोरी, हमारें को खेलै ऐसी होरी॥
मन–मृदंग सुरति सारंगी, तन की बनाइ लै तंदूरी॥
राम–नाम के करि लै मँजीरा, कृष्ण नाम लागी डोरी।
इंग्ला–पिंगला बस करि राखौ, सुख मन ठाठ ठठो री॥
अनहद गुफा में बैठि कें कोऊ, निर्गुण ब्रह्म जपौ री।
पोथी पुराण भागवत गीता, चारहु बेद पढ़ौ री॥
चौंसठ तीरथ न्हाय कें कोऊ, पुष्कर में लट बोरी।
कहत ‘कबीर’ सुनो भाई साधो, यह आवागमन बचौ री॥

(199) (काफी)

होरी खेलैं चतुर सुजान, आतमराम से॥
पंडित खेलें पोथी पत्रा, काजी कुतुब कुरान से।
जोगी खेलैं जोग जतन से, ज्ञानी खेलैं ज्ञान से॥
कामी खेलैं कामिनी के संग, दामी खेलैं दाम से।
पतिव्रता खेलैं निज पति संग, वेश्या खलक जहान से॥

अति प्रचंड वेग माया को, सब जग मारत बान से।
करोड़ों के बीच बचे कोई बिरला, कबिरा बचा निज ज्ञान से॥

(200) (काफी)

देख ली हरि होरी तुम्हारी॥
लोभ गुलाल मलौ मेरे मुख सों, मोह की दीन्ही पिचकारी।
माया के रँग में ऐसी भिजोई, भूलि गई सुधि सारी,
पिया अपने कों बिसारी॥
काम–क्रोध के कुमकुम मुख पै, दै दै मारि पछारी।
आशा तृष्णा की गेंद बनाइ कें, ऐसी कुचन पर मारी,
हँसी ब्रज की सब नारी॥
पाप–कुटुम्ब की भरि कें गगरिया, बोझ धरौ सिर भारी।
तेरे सिवा कित जाय पुकारौं, को है अनोखौ खिलारी,
ऐसे खेल की मैं बारी॥

(201) (काफी)

नाथ मेरा क्या बिगड़ेगा, जायगी लाज तुम्हारी॥
तुम तो दीनानाथ कहावत, मैं अति दीन दुखारी।
जैसें जल बिनु मीन मरति है, सोई गति भई है हमारी॥
भूमि–विहीन पांडु सुत डोलें, धरणि धरम–सुत हारी।
रही न पैज प्रबल पारथ की, भीम गदा महि डारी॥
सूर–समूह सभी मिलि बैठे, बड़े बड़े ब्रत धारी।
भीषम, करण, द्रोण, दुःशासन, जिन मेरी अपत्ति विचारी॥
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, सो पति कहाँ बिसारी।
'सूर' स्याम पीछें पछितैहौ, जब मोहि देखौ उघारी॥

(202) (काफी)

साँबलिया तू बेगि खबरि लीजो मोरी, मैं तौ शरणागत हरि तेरी॥

बाप कहै बेटी ब्याहूँ द्वारका, भैया कहै चँदेरी।
जो शिशुपाल मौर धरि ऐहै, जरि बरि है जाउ ढेरी॥
सिंह शिकार स्यार लियें जावै, चहुं दिसि असुरन घेरी।
जरासन्ध शिशुपाल हुऐ हैं, जायगी लाज हरि तेरी॥
रूकिमनी जी ने पाती भेजी, विप्र के हाथ सबेरी।
पाती बाँचि विलम्ब न करियो, लइयो सँदेसौ बहोरी॥
कुण्डलपुर में देवी अंबिका, पूजन जात सबेरी।
तहँ चलि अइयो कृष्ण कन्हैया, जनम–जनम की चेरी॥

(203) (काफी)

प्रभु तेरी महिमा कौन बखानी, मूक भई सब बानी॥
वेद पुरान भागवत गीता, छबि बरनत सकुचानी।
मानुस तन की शक्ति कहा है, जो तुमकों पहिचानी॥
पूरन ज्ञानी भेद न जानी, सोलह कला वरदानी।
हरि गति कों यदि काहू जानी, गोपिन माँहि समानी॥
भीष्मक ब्याह रचौ कन्या कौ, शिशुपालहिं सुखमानी।
रूकमिन पाती भेजी द्वारिका, मन अपने हुलसानी॥
आरत बानी पढ़ि पाती की, हरि ने गवन प्रमानी।
पहुँचत ही बगिया में उतरे, सब राजन भय मानी॥
जरासंध शिशुपाल के देखत, कूच करौ सुख दानी।
आइ द्वारका ब्याह रचायौ, रूकमिन भई पटरानी॥

(204) (काफी)

विचित्र वृतान्त बनायौ, आनन्द मंगल छायौ॥
पृथ्वी भूमि रचाय सुघर, आकाश कौ मंडप छायौ।
रवि शशि सुंदर दिये लटकाये, तारन बिच चमकायौ॥
पर्वत खम्भ गाढ़े शुभ गढ़िकें, ब्रह्मन माल पहनायौ।

धरि अमोल मंडिन पृथ्वी बिच, सिन्धु कलश भरवायौ॥
रैन दिवस बिच बिच कर गूंथी, बंधनवार बंधायौ।
लाय मेघ सुन्दर किन छायौ, बिजली लंप जगायौ॥
फरस बिछाय ग्यान की चादर, मसनद भक्ति सजायौ।
लोभ मोह दोऊ जोरि मशालें, माया कों नाच नचायौ॥
'दया' लगत अस राम जनक के, आज विवाहन आयौ।
सखि री देखि राम विवाहू, बोलि कहा मन भायौ॥

(205) (काफी)

तन में अस रंग रचौ री॥
पिचकारी रूचिकारी सुमति की, श्याम के रंग में भरौ री।
हिल मिल ऐसौ फाग मचावौ, चहुँदिशि कींच करौ री,
श्याम पिचकारी मारी॥
वायु बिचार वहन रुचिकारी, मर्म अबीर उड़ौ री।
युक्ति साजि करि सखि सब आवति, समता भाल पुरौ री,
झलक छावै चहुँ ओरी॥

(206) (काफी)

घोल री मो पै रंग की घोला घोल, सासु सुनै देयगी बोल री॥
तास की अँगिया गुलाब की चुनरी, और धनुष की कोर।
रेशम बंद लगे अति सुंदर,ता बिच परी है झोल री॥
जानि गई सब संग की सयानी, मिलना किस विधि होय।
'समद' पिया सों यों जाय कहियो, कौन करै याकौ मोल री॥

(207) (काफी)

कान्हा रे बरजि हारी तुमकों।
तुम तौ अपनी गरज के हौ यार, दरद नाहीं तुमकों॥
होरी खिलन कौं आई राधा प्यारी,

ज्यों बादर की है लरज, गरजि रही बरसों॥
अबीर गुलाल के बादर छाये,
पिचकारिन भईं सरद, जरद भईं रँगसों॥
हमकों जोग भोग कुबजाकों,
होरी खेलौ सौतिनियाँ के संग, सरम नाहीं तुमकों॥

(208) (काफी)

मेरौ अब कैसें निकसन होइ री गुइयाँ, होरी खेलत कन्हैया॥
ससुरें जाउँ तौ सासु लड़ति है, मइके जाउँ भौजैया॥
इत डर उत डर मोहि सखी री, बीच में नचत कन्हैया॥
सारी भिंजोई मेरी चुनरी भिंजोई, और भिंजोई पीरी पगरिया॥
नन्दलाला कों मैं का करि भिजोऊँ, ओढ़ि आयौ कारी कमरिया॥

(209) (गौरी)

लगि जायगी मेरें चुभि जायगी, मति मारौ मेरें लगि जायगी॥
काँट कँटीली गुलाब की छरियाँ, गोरे बदन म्हारें चुभि जायगी॥
बेदरदा मेरौ दरद न जानै, तास की अँगिया मसकि जायगी॥

(210) (काफी)

रँग न डारि जसुमति के लाल, मोरी रंगि गई चूनरि सारी रे॥
अँखियन अबीर कुमकुमा कंचुकि, क्यों खिलवार अनारी रे॥
जौ खेलौ कछु बदि बदि खेलौ, ग्वालिन सहित हँकारी रे॥
जौ जीतौ किंकरी तिहारी, नहि 'किंकर' बनवारी रे॥

(211) (रसिया)

होरी खेलन दै ॥
गलिन गल्यारिन धूम मचावै, हम पै सही न परै॥
ऐसों की होरी तेरे नगर में, फागुन को जस लै॥
जोई जोई कहैगी सोई सोई करिहों, इतनी अरज सुन लै॥
'आनन्द' घन कों जाय भिजोऊँ, आजु यही प्रण है॥

(212) (काफी)

होरी खेलि आये हौ तुम, होरी खेलि आये हौ॥
नख–सिख अंग भींजि रह्यौ रँग में, रँग ही में सरसाये हौ॥
मन–मोहन ब्रजराज साँवरे, लागत अधिक सुहाये हौ॥
काजर चिन्ह गुलाल गाल पै, मुख मंडल करि आये हौ॥
'पुरुषोत्तम' प्यारे वा गोरी सों, कैसें आमन पाये हौ॥

(213) (विहाग)

श्याम मोरी चूनरि कुसुम रँगी रे॥
ऐसौ ढीठ बरजोरी श्याम मोरी, चूनरि कुसुम रँगी रे॥
गोरस गागरि फोरि डारी आली, दधि की कींच मची रे।
भरि पिचकारी छाँड़त मो पर, केसर रंग रची रे॥
मलत अबीर कपोलन मारत, कुमकुम रंग भरी रे।
छूटी अलकें नील झरत रँग, मानहुँ मेघ झरी रे॥
नैन चकोर रूप रस प्यासे, चितवन वदन–ससी रे।
मृदु मुसकानि 'राज' वह चितवनि, छबि उर दृगन बसी रे॥

(214)(विहाग)

बलम अपनी पगिया सुरँग रँगवा दे॥
हमरी चुनरिया चटक न होय जाय, यह रँगरेजवा बता दे॥
अरगज अँगिया कुसुम रंग सारी, चटक चुभीली सजवा दे।
नाहीं तौ ललन पिय लड़ोंगी तो सन मैं, होरी की मौज मना ले॥

(215) (काफी)

ऐसी चतुर ब्रज नारि, रंग में है रहीं बौरी॥
एक मन उड़त गुलाल, सवा मन केसरि घोरी।
राधे पै छिरकत स्याम, स्याम पै राधा गोरी॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ, गावत होरी।
राधा चली मुख मोरि, श्याम मोरी बहिंयाँ मरोरी॥

(216) (काफी)

ऊँचौ है गोकुल गाँव, जहाँ हरि खेलत होरी॥
चलौं सखि देखन जायँ, पिया अपने की होरी॥
बाजत ताल मृदंग और, किन्नर की जोरी।
गावत दै दै गारि परस्पर, भामिनि गोरी॥
बूका सुरँग अबीर उड़ावत, भरि–भरि झोरी।
इत गोपिन के झुंड, उतै हरि हलधर जोरी॥
नवल छबीले लाल, छबीली सूरत भोरी।
राधा चलीं मुस्काय, श्याम सों खेलन होरी॥
खेलत भयौ जो आनन्द, देखौ वृषभानु किशोरी।
'सूर' सखी उर लाय, हँसत भुज गहि झकझोरी॥

(217)(पीलू)

आयौ बसंत कहौ उन हरि सों, बौरे अंब बन फूली है सरसों॥
फूले कमल उमगे दोउ जुबना, गयो चितचोर कहाँ या ब्रज सों ॥
औरन सों वे हँसत खिलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों॥
ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे कों कुबजा के करसों॥
राह चलन दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरि सों॥

(218) (काफी)

होरी नाहक खेलूँ मैं बन में, पिया बिन होरी लगी मेरे मन में॥
सूनौ जगत दिखात स्याम बिनु, विरह–बिथा बाढ़ी तन में॥
काम कठोर दवारि लगाई, जिय दहकत छिन–छिन में॥
'हरीचन्द' बिन बिकल बिरहिनी, बिलपत बालापन में॥

(219)(काफी)

कासौं कहौं मैं जिय कौ हाल, मोहि कीन्ही साँवरिया ने बावरी॥
इक विरहा दूजैं लाज गुरूजन की, तीजैं मिलन कौं हौं आतुरी॥
विरह कौ सागर, सूझत नाहीं, मैं भई हौं भँवरवा की नाव री॥
गावै 'गुदर' उर बसहु बिहारी, मोहि छवि लागत है रावरी॥

(220) (पीलू)

पिया कौ मनाय लाऊँ पैयाँ परौंगी मैं, धरौंगी जोगिनियाँ कौ भेस री॥
गेरुआ बसन भसम तन लाऊँ, सीस बढ़ाऊँ लम्बे केस री॥
पिया बिन हिया मैरौ मानत नाहीं, ढूँढ़ौ नगर परदेस री॥
गावे 'गुदर' पिया अपनौ मै पाऊँ, सतगुरू दियो उपदेस री॥

(221) (पीलू)

बाट चलत बरजोरी रँग डारे, कौन कान्ह के परीं हम पालै॥
मारग चलत सखी नटनागर, पढ़ि कंकर मेरे अंगनि घालै॥
वाहि न लाज, न डर गुरुजन कौ, को समझावै ढीठ नन्दलालै॥
होरी खेलत पिया प्यारी बिहारी, झोरिन भरि भरि अबीर गुलालै॥

(222) (पीलू)

गारी न देउ जसुदा के लला, होरी खेलन आए हो तौ खेलौ भला॥
गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख सुनौगे भला॥
नंद जसोदा सहित बिकैहौ ,जो गिरि जाय मेरे कर कौ छला॥
बृन्दावन की कुंज गलिन में, दधि कौ दान न पै हौ भला॥
जो तुम चाहौ भलाई कन्हाई, अपनी डगर चले जाउ भला॥

(223) (पीलू)

गोकुल कैसे जाउँ री दइया, बीच बसै बटमारौ कन्हैया॥
ता मग नाच नचावत आवत, मानत नाहीं न नन्द दुहैया॥
एक तें एक चतुर गुण आगर, मधुबन देखौ न कोउ जवैया॥
गावें 'गुदर' पिय कैसें कि निबहै, ब्रज गलियन में धूम मचैया॥

(224) (पीलू)

ऐसौ चटक रंग डारौ कन्हैया, मोरी चुनरी में परि गयो दाग री॥
ग्वाल बाल मोहि चहुं दिसि घेरैं, केहि मग जाऊँ मैं भाग री॥
अबीर गुलाल लियें भरि झोरी, हम सों मचायौ है फाग री॥
'भूधरदास' श्याम मिलि जैहैं, हरि के चरन चित लाग री॥

(225) (पीलू)

काहे गुलाल सैयाँ हम पै डारौ, रंग सें चटक अँग रँग ही हमारौ॥
आवौ पिया मुख देखौ सेज पै, मुख जैसें चन्द्र जोवन जैसें तारौ॥
सिसकि सिसकि मेरौ मन बस करि लीनौ, अब क्यों न अँचरा उघारौ॥
'कृष्णानंद' लागि उर मेरे, आनन्द केलि मदन बिस्तारौ॥

(226) (पीलू)

बरजोरी करि भिंजवत मोरी सारी, गारी मैं देउगी अनौखे खिलैया॥
सासु ननद के डर न परत पग, अब घर कैसे मैं जाँउरी दैया॥
ऐसे ढंग करत डरत नहिं नेकहु, ब्रज में घर–घर लोग चबैया॥
'रामप्रताप' फाग के मिस तोरी, जानि गयी सिगरी चतुरैया॥

(227) (पीलू)

होरी कौ छैल मोहि ढूँढत डोलै, अब कित जाय छिपौ मेरी दैया॥
लाज भरी गारी वंसी में, मेरौ नाम लै गावै कन्हैया॥
सासु सदा मेरे बैर परी है, ननद निगोड़ी करति लरैया॥
कृष्णजीवन 'लछिराम' के प्यारे, फागुन मास बड़ौ दुख दैया॥

(228) (पीलू)

गारी दई और कांकर मारौ, अब कैसें घर जाउगे लला॥
कांकर मारि गली भयौ ठाढ़ौ, अबकैं बदलौ मैं लैऊंगी लला॥
छीनि लेंउँ तेरी लकुट कमरिया, तब कैसे इठिलाउगे लला॥

(229) (काफी)

अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं, जो श्याम आवेंगे ब्रज में पलटिकैं॥
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं, गारी मैं देउँगी घुँघटा पलटिकै॥
एक कुमकुमा ऐसौ मैं मारूँ, जो बंसीवारे की आँखिन करकै॥
जो श्याम हमसों रूठि जायँगे, बिनतीं करौंगी मैं पैयाँ पकरि कै॥

(230) (पीलू)

होरी को लँगर नहिं आयौ ननदिया॥
आवन कहि गये अजहूँ न आये, भरि जोवन तरसायौ ननदिया॥
अबीर गुलाल के बादर छाये, केसरि रँग झर लायौ ननदिया॥

(231)(काफी)

मन मेरे की आसा पूजी, आयौ मास फागुन कौ नीकौ॥
लाज सरम तजि सासु ननद की, दौरि गह्यौ कर सों कर पी कौ॥
अब मेरौ कोई कहा करैगौ, यह तो अवसर है होरी कौ॥
मैं न भयी मूरति ब्रजपति की, देखत दु:ख मिटैगो जी कौ॥

(232)(काफी)

मानों रे तुम्हारी ना मैं बतियाँ,
तुम तौ जाउ भवन उनहीं के, रहे सारी रतियाँ॥
अटपटी पाग लटपटे भूषन,
डगमगात शरमात, खुमारी भरी अँखियाँ॥
कपट कुचाल समझ कें तुम्हरी,
करिहों न मन परतीति, रीति की ये बतियाँ॥
होरी के दिनन पिया सौंतिनि के घर,
आवत हौ नित जात,जरावत छतियाँ॥

(233)(रसिया)

फाग खेलन बरसाने आए हैं, नटवर नन्द किशोर॥
घेरि सखी सब गली रंगीली,छाय रही जहँ छटा छबीली,
अब ढोल मृदंग बजाए हैं, नटवर नन्द किशोर॥
हिलि मिलि कैं सब सखियाँ आई,उमड़ि घटा अम्बर में छाई,

तब सखियन चोट चलाए है, नटवर नन्द किशोर॥
लै रहे चोट ग्वाल ढालनि पै,केसरि कींच मची गलियन में,
तब रंग अबीर उड़ाए हैं, नटवर नन्द किशोर॥
भई अबीर की घोर अँधियारी, दीखति ना कोई नर अरु नारी,
तब राधे सैन चलाए हैं, नटवर नन्द किशोर॥

(234)(काफी)

निर्दयी संग खेली होली, श्याम मोसों करौ न ठिठोली॥
अबीर गुलाल को रंग जुरौ नहीं, केसर कुमकुम रोरी।
काजर तेल मिलाय मलौ मुख, ताऊ पै भरि कैं कटोरी,
बिगरि गई सूरति मोरी॥
देखि कैं सूरति कौन कहैगो, मोहि व्रषभान किशोरी।
संग की सहेली सब देखि हँसैंगी, हिल मिल गाँव की गोरी,
ठिठोरी ऐसी निगोड़ी॥

(235) (काफी)

साँवरा कहीं रम रहा माई॥
कारे ही कारे जितने जगत में, सब ही हैं दुखदाई।
कारिन की परतीत न कीजै, सरबस लेंहि छुड़ाई
बुरिन सों होत बुराई ॥
मथुरा की भामिनि हैं बड़ी कामिनि, वश में किये यदुराई।
तृन सम प्रीति पाछिली तोरी, ता पै करत बड़ाई,
कहौ जा में कौन बुराई॥
ऊधौ जी तुम जाउ द्वारिका, हरि जी कों देउ समुझाई।
कृष्ण भई सो भई सो भई सो, वेगि खबरि लीजौ आई,
फाग सब बीतौ जाई॥

(236)

शिव गिरजा मिल खेलत होरी॥
इत गण उत अबला बहु डोलें, मन अति मोद भरौरी।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, करत रंग सरबोरी,
मलें अबला मुख रोरी॥
चोया चन्दन अतर अरगजा, भाँति भली छिरकौरी।
बाजत ताल मनोहर डौरू, कोऊ गण गावत होरी,
कोऊ अति नृत्य करोरी॥
गिरजा सैन निहार सखी एक, आतुर शिव तन दौरी।
अति दृढ़ बसन बघम्बर लीन्हौं, भाँति बहुत झकझोरी,
करें अबला बरजोरी॥
फगुआ लेउ बसन मम छाँड़ो, यों प्रभु बचन कहौरी।
गिरजा हँसति दिए मुख अंचल, उर आनन्द भयौरी,
शेष नहिं वरन सकोरी॥
नभ विमान चढ़ि सुर सब निरखें, गिरजा शंकर होरी।
सुमन बृष्टि जय जय धुनि छाई, राम पती चहुँ ओरी,
अभय निज दास करोरी॥

(237)

झूँठी बातें बनाना, कहाँ तुम सीखे हो कान्हा।
हमसे तौ छिप छिप कर कान्हा, सौतिन के घर जाना।
उनकों तो रंग–रंग के कपड़े, चुन–चुन के पहनाना,
हमारा दिल तरसाना॥
जान लिये सब रंग ढंग तेरे, ठग ठाकुर पहिचाना।
उनसै तौ हिल मिल कर बतियाँ, छतियाँ उन्हें लगाना,
हमें निस दिन तड़पाना॥

(238) (काफी)

अंजनी सुत प्रभु मन भायौ॥
लाल लंगोट बंधौ अति सुन्दर, माथे सिन्दूर लगायौ।
एक कर गदा दूजे द्रोणागिरि, अवधपुरी पै आयौ,
भरत ने बाण चलायौ॥
लागत बाण गिरौ धरणी पै, राम नाम मुख गायौ।
इतनी सुनि कै उठे हैं भरत जी, धुनि–धुनि शीश धुनायौ,
राम के काज न आयौ॥
कौन कौ पुत्र कौन कौ पायक, कौन पुरी सै तू आयौ।
कौन रजा की करत चाकरी, किन के काजै आयौ,
भरत ऐसे बतरायौ॥
अंजनि पुत्र राम कौ पायक, लंक पुरी सें आयौ।
सुग्रीव रजा की करत चाकरी, लक्ष्मण काज पठायौ,
संजीवनी लेने कौं आयौ॥
आउ बीर तू बैठि बान पै, बाण बिमान बनायौ।
लै द्रोणगिरि चलौ है गगन में, राम के पास सिधायौ,
शोक में हर्ष समायौ॥

(239) (काफी)

लाल गुलाल गोपाल हमारी, आँखिन में मति डारौ रे॥
केसरि रँग पिचकारी अहो पिया,आनन तकि मति मारौ रे॥
खेलि बसंत सरिस मन अटक्यौ, अटपटे खेल निवारौ रे॥
नागर नायक भव सागर सों “सूरदास” निवारौ रे॥

(240)(काफी)

प्रीतम सुधि बिसराई, हमें ऐसी होरी न भाई॥
जैसे मीन बिना जल तड़पै, दे निज प्रान गँवाई।
तैसे बिन प्रीतम प्यारे के, मरिहौं हलाहल खाई,

विरह तन दीनों जराई॥
आधी रात कोयलिया बोले, कूक सही ना जाई।
भोर भुरारे पपिया बोले, हूक उठै अधिकाई,
देइ सब होश भुलाई॥
घर–घर सखियाँ मंगल गावें, फूलन सेज बिछाई।
मोहि बिन कंत बसंत न भायो, कासों कहूँ दु:ख जाई,
बरै ऐसी होरी न भाई॥
कर–कर याद पिया अपने की, कामिन सुधि बिसराई।
प्रेमी कहै विरह व्याकुल तन, जोगिन भेष बनाई,
कहैं अँसुआ ढरकाई॥

(241) (काफी)

फागुन मस्त महीना, पिया बिन धड़कत सीना॥
जब सें गए पिया छोड़ विदेशवा, जोवन अति दुख दीन्हा।
रहि–रहि अंगन पीर सतावत, रोम रोम रस भीना॥
जैसे चातक स्वाँति के जल बिनु, नीर बिना जैसे मीना।
जैसें नारी सेज पिया बिन, तन से उठत पसीना॥
जाके हाथ सब तरह बिकाने, लोक लाज तज दीना।
"बटुकनाथ" ने कियौ क्या औगुन, जासें हमें तजदीना॥

(242) (काफी)

लाल फिर होरी खेलन आओ॥
फेरि वही लीला को अनुभव, हमको प्रगट दिखाओ॥
फेरि संग लै सखा अनेकन, राग धमारहिं गाओ॥
फेरि वही बंसी धुनि उचरौ, फिर वा ढपहिं बजाओ॥
फेरि वहीं कुंज वहै बन बेली, फिर ब्रजबास बसाओ॥
"हरीचन्द" अब सही जात नहिं, खबर पाइ उठि धाओ॥

(243)(रसिया)

गिरधर लाल रंगीले के सँग, फाग आज हौं खेलोंगी॥
सास ननद अरू गुरूजन के भय, लाजहिं पाँयन ठेलोंगी॥
चोवा चँदन अबीर अरगजा, पिचकारिन रँग झेलोंगी॥
"हरीचन्द" बृजचन्द पिया के, कंठ भुजा गहि मेलोंगी॥

(244) (काफी)

आज श्याम सैं मैं बैर करूँगी॥
कोई काली वस्तु जगत की,कबहू नाहीं विलकूँगी।
काली घटा की छटा कौं अटा पै, कबहू ना निरखूँगी।
भ्रमर के पर नौचूँगी॥
कोयल कूक, कूक मुरवनकी, श्रवनन नाहि करूँगी,
गगन दृगन सौं ओट करूँगी, चन्द्र कलंक हरूँगी,
रात में पग ना धरूँगी॥
दाँतन मिस्सी कवहूँ न लगइहौं, अँखियन कजरा न दूँगी।
कालिन्दी में पग नहि बोरूँ, मृग मद अंग ना मलूँगी,
नील पट धोय धरूँगी॥
काल देव काली माता का, पूजन अब न करूँगी।
सिद्धि के हेतु विरह में सजनी, काग शगुन ना लूँगी,
केश निज नौंच धरूँगी॥
दीपक बारि बैठ अंगना में, रैन को तिमिर हरूँगी
दरपन माँहि देखि अँखियन कौं, पुतरी काढ़ि धरूँगी,
जनम भर अंधरी रहूँगी॥

(245) (काफी)

कान्ह तोहि ऐसी मति कौने दई॥
देखि पराई नारि सलोने, होरी करत नई॥
डार गुलाल आज अँखियन में, भुज भरि अंक लई॥
केशरि की पिचकारी मार कें, बहियाँ पकर लई॥

(246) (काफी)

किस घर दीन्हों बकस मेरी माय, मेरा बाला जुवनवा योंही जायरे।
सूनी सेज मोहे निंदिया न आवे, कारी नगिनिया सी डस डस जाय रे।
रूठे पिया कों मैं कहाँ नों मनाऊँ, जब ही मनाऊँ तब रुठि रुठि जाय रे।
ओंरन सों पिया हँसत बोलत है, हमरो पिया हमसे रुठौ–रुठौ जाय रे।

(247) (काफी)

घर अँगना न सुहावै, पिया बिन मोहि न भावै॥
दीपक जोइ कहा करुँ सजनी, पिय परदेश रहावै।
सूनी सेज जहर ज्यों लागे, सिसक सिसक जिय जावै,
नैन निदिया नहिं आवै॥
कबकी जगी, मैं मग जोऊँ, निस दिन विरह सतावै।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हियरो अति अकुलावै,
हरी कब दरश दिखावै॥
ऐसो है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावै।
बा बिरियां कब हाँसी मोकों, हरि हंसि कंठ लगावे,
''मीरा'' मिल होरी गावै॥

(248) (काफी)

सांवरे तोसों विनय हमारी॥
भस्मासुर वरदान पाइकें, मन में कपट विचारी।
भस्मासुर कों भस्म कियो तुम, पल में आइ मुरारी,
बिथा शिवजी की टारी॥
जनक नंदनी हरी लंकापति, मान कियो अति भारी।
रावण मारि गरद करि डारौ, सुवरण लंका जारी,
भई तिहुँ पुर उजियारी॥
दुष्ट दुशाशन चीर घसीटत, कृष्णा बेगि पुकारी।

नगन द्रौपदी काहू न देखी, अम्बर दियो है बिहारी,
दृष्टि करुणा सों निहारी॥
केशी मारौ, कंस पछारौ, पटक पूतना मारी।
लाज बचायो ''जनार्दन प्रभु'' की, चरण कमल बलिहारी,
टारियो बिपति हमारी॥

(249) (काफी)

खेलत फाग किशोरी, श्याम मुख चन्द्र चकोरी॥
झुकि झुकि झूम झूम पट छोरन, झक झोरन झटकौरी।
नीरज मृदुल कलित कर चूमत, मोद मलै रस बोरी,
कपोलन मंजुल रोरी॥
सुनिधाँई अलबेली नबेली, कुंभन रंग भरौरी।
छिरकत मंद–मंद पिचकारिन, अबीर गुलालन झोरी,
भरें फैंकत चहुँओरी॥
'चुन्नीलाल'भाग बृजवासिन, नित प्रति नव उमयोरी।
धन धन भाग यशोमति धन तुम, परमातम सिर जौरी,
निकन्दन फंदन कोरी॥

(250) (काफी)

नयनों के डोरे लाल, गुलाल भर खेली होली॥
जागी रात सेज प्रिय पति सँग, रति स्नेह रँग घोली।
दीपति दीप प्रकाश पुंज छवि, मंजु मंजु हँस खोली,
मली मुँख चुम्बन रोली॥
प्रिय कटि कठिन उरोज परस कस, कसक भसकि गई चोली।
एक बसन रह गई मंद हँसि, दसन बसन अनबोली,
कली सी काँटे की तोली॥
मधु ऋतुराज मधुर अधरों की, पी मधु सुधि बुधि खोली।

खिले अलक मुंद गये पलक दृग, श्रम सुख की हद होली,
बनी रति सी छवि भोली॥
बीती रात सुजग बालों में, प्रातः पवन प्रिय डोली।
उठी सँभाल बाल मुँख लटपट, दीप बुझा हँसि बोली,
रही यह एक ठठोली॥

(251) (काफी)

जिन मोरी वारे सौ वहियाँ गही, मैं तो उनहीं सों फाग मचाऊँगी॥
अंवा वौरे टेसू फले, फूली अंग ना समाऊँगी॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, कान्हा कों ढफ पै नँचाऊंगी॥

(252)

लाज ही लाज अकाज भयौरी।
प्राण अधार नंद को नन्दन, मेरे ही ढिंग सें निकसि गयौ री॥
ना हँस बोलि कहन कछु पाई, ना नैनन भरि देखि लयौ री॥
ना मैं मिली विहँसि मुख पंकज, ना फागुन मिस भेंट लयौ री॥

(253)

मन मेरे की इच्छा पूजी, आयौ मास फागुन कौ नीकौ॥
मनमथ के रंग भई मूरत श्याम की, देखत दु:ख मिटे मेरे जिय कौ॥
गुरुजन पुरजन कहा करेगौ, यह तो औसर है होरी कौ॥
ननद जिठानी की कान न करिहों, जाय गहों कर सों कर पिय कौ॥
सवै श्रृंगार बनाय संवारो, और देउ केसरि को टीकौ॥
कृष्ण जीवन ''लछीराम''के प्यारे, जाय मिलोगे तन मन हिय को॥

(254) (काफी)

काहे हमसों रूठे विधाता, गुण अवगुण के हो तुम दाता॥
तुमही एक अमर जग स्वामी, अरु सब झूँठ जगत कौ नाता॥
जन जन की चूक सदा प्रतिपालत, जिम बालक कों पितु अरु माता॥
गावें 'गुदर 'जन शोक निवारण, गुण अवगुण कर सब जग त्राता॥

(255) (काफी)

जल तन शीत सतावे, निठुर तोहि लाज न आवै॥
दीनानाथ दीन हितकारी, जाको यश जग गावै।
सो लै चीर कहा बनि तनि के, पल्लव जाय लुकावै,
लाज तोहि नैक न आवै॥
जो अद्वैत अखंड अगोचर, अग जग ब्रह्म कहावै।
सूने भवन जाय ग्वालन संग, ''किंकर'' माखन खावै,
हमें यह अचरज आवै॥

(256) (काफी)

आइजा बलम तू हमारेई डेरे॥
जो तुम हम सें रूठ गये हो, पइयाँ परूँगी निहोरें निहोरें॥
जो तेरे मन में होरी खेलन की,दूर जिन जाओ रहो ढिंग मेरे॥

(257)(काफी)

मोरे पिय को जोबनवा ढ़रकि जात, एहो कासें कहों मैं जिय की बात॥
सूनी सेजि पिया घर नाहीं, ता पर बिरहा लायो घात॥
सुख सपनें की संपति सजनी, नैन खुले नहिं आबै हाथ॥
गावे ''गुदर'' मोहि चैन न आवै, जब सें पिया तेरो बिछड़ो साथ॥

(258) (काफी)

खेलत श्याम श्यामा फाग, बृज होरी की धूम मची॥
इत हैं गुपाल सखा सब संग लिये, उत बृषभान लली॥
वे छिरकत रंग सुरंग प्रिया दिसि, उन मुँख रोरी मली॥
लोचन लाहु लेहु लखि ''किंकर'', दोऊ भाँति भली॥

(259) (काफी)

बिहारी जिन मारो घूँघट पिचकारी, मोहि जान दै घर बलिहारी॥

सुनत नगर के लोग लुगाई, गावो गैल में गारी॥
बृजनारी वैसेई घर घर नित, चरचहिं प्रीति तुम्हारी॥
''रामप्रताप'' करत ठनगन नये, नहिं मानत मनुहारी॥

(260) (काफी)

मोरे रंगभरी पिचकारी मारी, बाट चलत या अनोखे लला॥
कर जोरत रही पैंया परत रही, कोटि करी मनुहारी॥
नई रे कुसुम रंग चूनर मेरी, सास ननद देइगी गारी॥
''रामप्रताप'' अबहुं नहिं मानत, हँसत है दै दै तारी॥

(261) (काफी)

रंग डारत कजरा ढ़रकि गयो॥
ताती छतियाँ घात आपनी, हाथ अचानक परिगयो॥
हों निकसी घर बाहर अपने, रसिया पालें पड़गयो॥
कहा कहों बलिहार चबाई, घर को काज बिसरि गयो॥

(262) (मालकोष)

आयौ आयौ पिय ऋतु बसन्त, दंपति–मन सुख बिरह अंत॥
फागु खिलावहु संग कंत, हा हा करि तृन गहति दंत॥
तुरत गये हरि लै मनाय, हरषि मिले उर कंठ लाय॥
दुख डार्‌यौ तुरतहिं भुलाय, सो सुख दुहु के उर न समाय॥
ऋतु बसन्त आगमन जानि, नारिन राखी मान–बानि॥
'सूरदास' प्रभु मिले आनि, रस राख्यौ रति–रंग ठानि॥

(263) (काफी)

प्रिय देखौ बन–छबि निहारि, बारबार यह कहति नारि॥
नव–पल्लव बहु सुमन रंग, द्रुम–बेली तनु भयौ अनंग॥
भँवरा भँवरी भ्रमर संग, जमुन करति नाना तरंग॥

त्रिविध पवन मन हरख दैन, सदा बहति नहिं रहत चैन॥
'सूरज' प्रभु करि तुरत गैन, चले नारि–मन सुखद नैन॥

(264) (काफी)

राधे जू आजु बरनौ बसन्त॥
मिलत मदन–विनोद विहरत, नागरी–नवकंत॥
मिलत सनमुख पटल पाटल, भरत मानहि जुही।
बेलि प्रथम–समाज–कारन, मेदिनी कंचन गुही॥
केतकी कुच–कलस–कंचन, गरे कंचुकि कसी।
मालती मद–चलत लोचन, निरखि मुख मृदु हँसी॥
विरह–ब्याकुल मेदिनी कुल, भई बदन–विकास।
पवन–परिमल सहचरी पिक, गान हृदय हुलास॥
उत सखा चंपक चतुर अति, कुंद मनु तन–माल।
मधुप मनि–माला मनोहर, ''सूर'' श्री गोपाल॥

(265) (काफी)

नन्द नदन वृषभानु कुंवरि सों, खेलत रंग रह्यो।
उड़त गुलाल कुमकुमा मानो, अंबर छाय रह्यो॥
अलि सुत युग वरण्यो वंकट छवि, जल सुत अधर लह्यो।
खंजन मीन मुक्ता हल राजत, मानो रबि रथ खैंचि रह्यो॥
गोपी ग्वाल सिमटि सब सुन्दर, सज्यो श्रृगांर नह्यो।
वरषत कंचन नीर कुसुम जल, मानो घन गरजि रह्यो॥
श्यामा–श्याम सवै सुखदाई, सुख सागर सगरौ।
"सूरदास" प्रभु मिल्यो कृपा करि, जिन हृदये बिसरौ॥

(266)(काफी)

आज मच्यो बृज फागु री, चलु विलम्ब न कीजै॥
नन्द किशोर दरश हित कारण, बाढ़ो जिय अनुराग री॥

लै सखी अबीर, गुलाल, कुमकुमा, भरि केशर रंग गागरी॥
भरि भुज भेट लेहु फागुन मिस, मेंट लेउ उर आगरी॥
जिहि ब्रह्मादिक ध्यान न पावत, "किंकर" तुम बड़ भाग री॥

(267) (काफी)

आज बृज खेलत होरी, राधे संग नन्दलाल॥
सुखमा सिन्धु नवल इत बनिता, उत गोकुल के ग्वाल।
कुसुम रंग अगनित पिचकारी, तैसें हीं उड़त गुलाल॥
इनकी पाग पिछौरी सुन्दर, उनकी चूनरि लाल।
क्षित जल धार वार यमुना की, तैसें हीं सरग पताल॥
बाजत चंग मृदंग झांझ ढ़प, मुरलि बीन करताल।
"किंकर" हिय हरषत सुर बरषत, अरूण कुसुम्वी माल॥

(268) (काफी)

उमड़े जोवन पर रंग न डारिए, जो मने करूं तोसौं बार–बार॥
यह विरहिन भई नींद की माती, जोवन भयो तेरे गरे को हार॥
गावे "गुदर पिय" वेग खबर ले, सूखे पात नहिं जुरेंगे डार॥

(269) (काफी)

आज होरी खेलत देखी छवि जो मोहन की, लागी सुन्दर मेरे मन में निपट॥
उर वन माल मकराकृत कुण्डल, कटि पीताम्बर शीश मुकुट॥
उत ठाड़ी बृज बनिता सकल डट, इत बृजराज कुमार किये हट॥
वे मारें पिचकारी तकि–तकि, ये फेंकत अबीर गुलाल झपट॥
ये उघटत वे निरतत हंसि–हंसि, ताता थेई ताता थेई उलट पलट॥
मौज निरख प्रभु की यह शोभा, शारद की गई बुद्धि उचट॥

(270) (काफी)

मान न करि वृषभान किशोरी, कृष्ण कुंवर जी से खेलत होरी॥
नन्द नन्दन तेरे द्वारे ही आये, अबीर गुलाल लिये भर झोरी॥
ब्रहमादिक जाको पार न पावें, सनकादिक नहीं भेद लयो री॥

शेष सहस्त्र मुख जिव्या जपत है, सो हरि पकरि रहे कर जोरी॥
धन बृज भूमि ग्राम गोकुल धन, धन वृन्दावन धाम है बोरी॥
“ठन्डीराम” सुख चैन से खेलो, धन्य राधे तेरो भाग्य बड़ोरी॥

(271) (काफी)

होरी खेलन के लियें नन्दलाल, मग नाचत आवत मटक मटक॥
कर ढपली गत मधुर बजावत, ताल देत पग पटक पटक॥
अंग अंग छवि कहाँ लगि बरनो, चढ़ोरी मदन को कटक कटक॥
‘नारायण’ मन हरत है मेरो, पेच पाग की लटक लटक॥

(272)(काफी)

रंग डारे रे कन्हैया मोपे मटक मटक, ऐसो ढीट लंगर नहिं मानत हटक॥
देखो सुंदर सारी बिहारी ने फारी, चुरियाँ करकाई झटक झटक॥
श्याम सुन्दर तोसों बदलो लूंगी, अब ही ले आऊँगी कटक कटक॥

(273)(विहाग)

सखी आज सोवत भेंट भई॥
चरण परसि औ दरस रूप छकि, पूँछत बात नई॥
अति हितकर हरि की बतियाँ लगीं, नींद निगोड़ी गई॥
सपने की मिलन रूप वह सुन्दर, हिये बिच आनि ठई॥

(274)(काफी)

यशुमति करति दधि मंथान अंक में,
निजलाल करावत पय पान॥
सुनु तजि उठि गई यशोदा क्षीर उफनत आनि,
माट इत हरि भंग कीन्हों, लगे माखन खान॥
नन्द नारि सकोप धाई, लख्यो कौतुक कान्ह,
दाम ऊखल उदर बांध्यो, मानि गोरस हानि॥

जासु डर तिहुं लोक कांपत, सुरासुर बलवान,
“हरिविलास” दयाल सोई, भक्त वश भगवान॥

(275) (काफी)

पूजन गौरि चलो सिय प्यारी।
संग सखिन के जनक नन्दनी, चली मुदित मन है फुलवारी।
गावत मंगल गीत मनोहर, पहिरे सवै सुरंग नई सारी॥
करि मणि जटित थार सुवरन के, दधि रोचन फल फूल सुपारी।
पूरण शशि सम प्रभा होत भई, जबहिं बाटिका सिय पगु धारी॥
तहाँ अचानक दृष्टि पर गये, श्री रघुराज धनुष कर धारी।
वरवस खिचो जात मन हरितन, देखि रूचिर बहु रूप महारी॥
एक एक ते कहति परस्पर, यह सांवल वर योग सिया री।
शंकर देखत ही मन मोह्यौ, सुधि न जात कछु तन की संभारी॥

(276) (काफी)

कन्हैया प्यारे अब न खेलूँ तोसे होरी रे॥
कालि चीर चुनरी रंग बोरी, सासु रिसानी मोरी रे॥
बेर बेर ननदी मोसे पूछें, किन रसिया लर तोरी रे॥
श्याम सखे ननदी संग लैकें, ऐहों बालम चोरी रे॥

(277) (काफी)

बेदरदी कान्हा काहे कों लगाई मुख रोरी॥
हमतो नारि नई गवने की, लाज नहीं कछु तोरे रे॥
तुम तो अबही बाल लला हो, हमरी वयस कठोरी रे॥
श्याम सखे जसुमत जू से कहियो, श्याम करत नई होरी रे॥

(278) (काफी)

गण डोलत चहुँ ओरी, रची गिरजे शिव होरी॥
व्याल यज्ञ उपवीत सुहावन, व्याल लंगोट कसोरी।
व्याल मुकट गलें व्याल विराजत, रूप विशाल बनौ री॥

शिव संग गण गिरजा संग गोरी, खेलत शिव संग होरी।
रतन जड़ित कंचन पिचकारी, तकि मारत शिव ओरी॥
अबीर गुलाल भरें सब झोरी, मलत कपोलन रोरी।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, धुंधि छाई चहु ओरी॥
चोया चन्दन अतर अरगजा, रंग ललित वरसोरी।
रंग ढ़रकत भई कीच बीच गिरि, ऐसो फाग मचोरी॥
बीन ताल मृदंग झाँझ ढ़प, धुनि घन घोर बजोरी।
डिमिक डिमिक डोरू में बाजत, राग फाग गायो री॥
सोवत है प्रभु शेष मंच पै, अदभुत चरित लखोरी।
हो सवार खग नायक ऊपर, गमन कियो गिर ओरी॥
गरूड़ निहार व्याल सब टरके, पशुपति नग्न रहो री।
देखि चरित्र हँसी सब बनिता, हर हरि नृत्य करो री॥
वे शुमार विस्तार जानिकें, कवि यश अल्प कथोरी।
गिरजापति सुत नाम रामपति, चरण शरण प्रभु तोरी॥

(279) (काफी)

कैसी करो ऋतु बैरिन आई।
बन बन बागन कोइल कुहकत, विरहा मदन चढ़ाई।
बोलत कोयल डार कदम्बन, पिया बिन कछु न सोहाई,
रैन सब सोचत जाई॥
सूनी सेज राति भई वैरिन, जियरा अधिक डराई।
हे घनश्याम हरो मम पीरा, पहले बाँह गहाई,
जात अब काहे छुड़ाई॥
फूले परास लगाई आग सी, कामिन जिय अधिकाई।
जित देखो तित सूनी लागत, को मोहि अंक लगाई,
रंग पिचकारी चलाई॥
"अमान सिंह" अब मान छोड़के, आ घर कुंवर कन्हाई।

मो राधा की बाधा हरि ले, ताकों नन्द की दुहाई,
हँसत सब लोग लुगाई॥

(280) (काफी)

आये सब क्षीर सागर तीर विधि महेश,
सुरेश धरनी अमर गण की भीर॥
विपत्ति वश सुर कर करत विनती बहत लोचन नीर,
दीन बन्धु सनाथ कीजै हरो वसुधा पीर॥
सुन विनय भई गगन वानी, अवनी मनुधरू धीर,
"हरिबिलास" हुलास करिहों, धारि मनुज शरीर॥

(281) (काफी)

दरशन करूँ भर नैन सखीरी॥
ललित त्रिभंग अंग द्‌युति अद्‌भुत, करों निछावर मैन सखीरी॥
घन सम तनु पट तड़ित छटा जनु, अधर बेणु द्रग सैन सखीरी,
मुकुट माल कुंडल की झलकन, हसन लसन मृदु बैन सखीरी॥
नन्द यशोमति दोऊ बड़भागी, सुत जायो छवि ऐन सखी री,
"हरिविलास" घनश्याम मनोहर, नहिं भूलत दिन रैन सखी री॥

(282) (काफी)

वरजौ नहिं मानत बार–बार॥
जब मैं जात सखी दधि बेचन, भागत कांकर मार–मार॥
लै लकुटी मटुकी महि पटकी, घूँघट देखत टार–टार॥
हरवा तोर्‌यो गरवा लगायो, कंचुकि कीन्हीं तार–तार॥
कपटी कुटिल कठोर श्याम घन, देखत छिपि तरू डार–डार॥
"हरिविलास" बृजराज दुलारो, तनु कारो गुण कार–कार॥

(283) (काफी)

मेरा मन मोहना बंशीवाला,
ऐसी मार गया पिचकारी, भींज गई सारी, दूर भया ठाड़ा॥

ऐसा ढ़ीट लंगर, नहिं मानत डर, वो तो करत अपनी मौज,
होरी खेलत नन्द का लाला॥
होरी खेलत जा, दूर निकस जा, वो तो नहिं मानत दई मारा॥

(284) (काफी)

रंग डारत लाज न आई, नन्दजी के कुँवर कन्हाई॥
पी पी छाछ भए मतवारे, महि मई धूम मचाई।
गुलचे खाय भूल गए सब, करन लगे ठकुराई,
सखि वाकों शर्म न आई॥
हाथ लकुटिया काँधे कमरिया, बन बन धेनु चराई।
जात अहीर सदा ही जानत, करन लगे ठकुराई,
छलीं जाने ब्रज कीं लुगाई॥
ऊखल के संग बाँध जसोदा, बेलन मार दिलाई।
वे दिन अपने भूलि गए सब, करन लगे ठकुराई,
सखी कैसा ढीठ कन्हाई॥
पार परोसन संग की सहेली, पांव पड़त सब धाई।
"चन्द्रसखी" भजु बालकृष्ण छबि, चरण कमल बलि जाई,
बनी रहे कृष्ण मिताई॥

(285) (तीन ताल)

आज दधि बेचन में ना जाऊँगी, बृन्दावन नटवर करत रारि॥
उड़त गुलाल लाल भये लोचन, भरि पिचकारी मारें भव मोचन,
खेलें बिन खेलें बिन कल ना परत॥
डगर चलत मोरी सिर की गगर फोरी, सारी चुनर मोरी रंग में बोरी,
"समद पिया" मैं तो गई री हार॥

(286) (तीन ताल)

जिन डारो रंग मानौं, गिरधारी मोरी बात।

लखि सास लड़ैगी, देगी गारी, हम हारी॥
गिर कैलास को, वास हम त्यागो।
हम अवला, अतिवारी, भीजें सारी॥
डमक डमक डमरु ढ़प बाजे।
स्वर संगीत उचारी, ललकारी॥
हरि रंग कहा कहूँ अब तोसों।
अगिनत देत है गारी, दै दै तारी॥

(287) (काफी)

का संग फाग मचाऊँ सखीरी, कुबजा संग गिरधारी रहत हैं॥
अँसुवन को सखी रंग बनायो, दोऊ नैना पिचकारी रहत हैं॥
विरह में कल न परत पल छिनहूँ, व्याकुल सखियाँ सारी रहत हैं॥
निसदिन कृष्ण मिलन कों सखियाँ, आस लगाये ठाड़ी रहत हैं॥
"अफसोस" पिया को नेह सुरतिया, निरखत नर और नारी रहत हैं॥

(288) (चलती)

छाप तिलक सब छीनी, मोसों नैना मिलाय के॥
प्रेम भटी की मदिरा पिला के, मोहि मतवाली कीनी॥
बलि बलि जैहों मैं तोरे रंगरेजवा, अपनी सों रंग दीनी॥
गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुरियाँ, बांह पकड़ गहि लीनी॥
"खुसरो निजाम" के बलि बलि जइये, मोहि सुहागिन कीनी॥

(289)(मालकोष)

बृजराज आज खेलत बसन्त, जिमि अगम निगम गावें अनन्त॥
सब गोरस मटुकी शीश धारि, बनि आई बन करिकें सिंगार।
लै संग सखा बृजपति कुमार, सब पोटलई ब्रज गोप नारि॥
कोई मीजै मुख लै लै गुलाल, कोई मटुकि लई कोई कंठमाल।
कोई केसर लेपन करत भाल, लखि हँसत परस्पर नन्दलाल॥
कोई तारी देत गारी सुनाय, कोई तन दुकूल लीन्हो छिपाय।

कोई सैन देत कर ढ़प बजाइ, कोई विनती करत सिर नाइ नाइ॥
ब्रज गोप वधुन संग करि विहास, सब मुदित गये निज निज अवास।
नित कानन या विधि अति हुलास, गावत वसंत मुख 'हरिविलास'॥

(290) (काफी)

आई बसन्त बहार पिया रंग चुनरि हमारी॥
बहुत दिनन सों चुनरि मोरी मैली, देख हँसे नर नारी।
चेरी तुम्हारी हों सब कोई जानत, सोच समझ बनवारी,
लाज मेरी कि तिहारी॥
कोऊ सास कोऊ ननद सों झगड़त, मोकौं तौ आस तिहारी।
अब की बार चुनरि मेरी रंग दे, रख ले लाज हमारी,
पिया तोरी बलिहारी॥
कोऊ गावें कोऊ नाचें, मैं याही सोच में ठाड़ी।
"रामचन्द्र" के लालन के गुन, मेरी सुरतिया बिसारी,
कहा तकसीर हमारी॥

(291) (काफी)

खेलें सन्त सभी मिल होरी॥
शंकर ताल मृदंग बजावत, ग्वाल ढफन की जोरी।
नारद कमला बीन बजावै, बैकुण्ठ में फाग मच्यो री,
मुखिया जगदीश बनोंरी॥
ध्रुव प्रह्लाद अम्बरीष सुदामा, ऊधो अर्जुन विदुर सजोरी।
गोपी ग्वाल विभीषण भीषण, इन सब रंग भरोरी,
त्रिलोचन पर छिरकोरी॥
नाम देवजी और कबीरा, कुबरी ने ठाठ ठठोरी।
रंका बंका नरसी मेहता, सूर ने ध्यान धरोरी,
खेलें हरि के संग होरी॥

(292) (काफी)

जाउ बलम जहाँ रैन गँवाई॥
ना मैं खेलूँ न खेलन दूँगी, तुम्हरी दूँगी दुहाई।
पांव पलंगवा पै धरने न दूँगी, लूँगी मुचलका कराई,
बलम तुम हो हरजाई॥
ना मोसों बोलो ना घूँघट खोलो, ना छुऔ नरम कलाई।
मानौ तौ मानौ नहिं कह दूँ बबा सों, सब कलई खुल जाई,
रात हमें नींद न आई॥

(293)(काफी)

रघुवर जी सौं कहियो मोरी॥
सुनो हनुमंत अंजनी नंदन, कहियो संदेसो निहोरी।
सीस निवाय चरण गहि लीजो, कीजो विनती मोरी।
राम जू सों दोउ कर जोरी॥
भृगुपति कीरति सुनी है जिनकी, तिनको धनुष जिन तोरी।
ते भुज बल अब कितहि पुरावत, रावन दुष्ट हनोरी
कहत यह जनक किशोरी॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिया, खान पान बिसरौरी।
बन उपबन में जाय परी हूँ, तेरो ही ध्यान धरो री।
राम राम मुख से कहोरी॥
कोटिक दूर लंक गढ़ तुमसें, जिन से सृष्टि रचौरी।
हा रघुनाथ कौशल्यानंदन शीघ्रहि कष्ट हरोरी।
भक्तन प्रतिपाल करो री॥
कहें हनुमान धीर धर माता लंका करूं जिम होरी।
रावण कुंभकरण सब मरिहैं, मेघहिनाद हनौरी
देउं तैंतीस बंध छोरी॥
तुलसी दास प्रभु तुम्हरे मिलन को, अवध आस रही थोरी।

प्राण दान दीजै रघुनंदन, गावत कीरति तोरी।
प्रीत अब करहु बहोरी॥

(294) (काफी)

मैं जो उमरि की थोरी, पिया मेरो मानत नाहीं॥
पिया कहै चलो रंग महल में, मेरी उमरि है थोरी।
मेरो कहो पिया मानत नाहीं, पिया चतुर मैं भोरी,
पिया मेरो मानत नाहीं॥
काची कली रस नाहिं रे बलमा, खोलि देखो मेरी चोली।
जो रस होय पिया पै मैं वारूँ, तोऊ न मानत मोरी,
पिया मेरो मानत नाहीं॥

(295) (काफी)

मोहना मोहि आन ठग्योरी॥
सखि को रूप धर्‌यो नंद नंदन, आयो हमरी खोरी।
मैं जानों कोई नवल सुन्दरी, आई हमरी ओरी,
धायके चरण गह्योरी॥
चरण पखारि मंदिर लै आई, हँस हँस कंठ लग्योरी।
सुन्दर वरण मधुर स्वर सजनी, सुनि वश जिया भयोरी,
प्रेम तन ह्वै रही वोरी॥
मोहिं लिवाय गयो कुंजन में, कर छलबल बहु तोरी।
अकेली मोहिं जान मन मोहन, तन मन आन गहोरी,
ढीठ छलिया नँद को री॥
ऐसो री यह कुंज बिहारी, याते कोऊ न बच्योरी।
''सूरदास'' ब्रज की सखियन में, परमब्रह्म प्रगट्योरी,
धन्य जिन प्रेम कियोरी॥

(296) (काफी)

होरी खेलत श्याम सों हारी॥

फोड़ दई मोरी सिरकी गगरिया, भीजगई मोरी सारी।
अबीर गुलाल मले मेरे मुख पर, रंग की भर पिचकारी,
अचानक मुख पर मारी॥
लपटि–झपटि मोरी बहियाँ गहत है, हँस हँस देत है गारी।
लै गुलाल गालन पर मारत, फारत चीर बिहारी,
कहों का लाज की मारी॥

(297) (काफी)

बरजो जशोदा अपने लाल कों, गारी देत मोहिं नई रे नई रे॥
होरी खेलत हैं लपट झपट के, मुख चूमत है दई रे दई रे।
बहियाँ मरोरी चोली मसकी, आज पत मेरी लई रे लई रे॥
चीर छिनाये सबही फिराये, लाज सवै सखि गई रे गई रे।
लाल पिया से पूँछो री सजनी, लाज हमारी लई रे लई रे॥

(298) (काफी)

फाग खेलन कों मेरो जिया चाहै, मैं वृज की कुंजन कों जाऊंगी।
रंग में रंगोगी उनको पीताम्बर सुरंग चुनरिया रंगाऊंगी।
जो तुम भये हो खिलाड़ी होरी के, मैं गलवा तोहि लगाऊंगी।
उमगि मिलोंगी आनंद घन सों, ख्याल खुसाल मनाऊंगी।

(299) (काफी)

पाँय परूँ कर जोरी, लँगर मोसे खेलो न होरी॥
रंग पर्‌यो मोरी चुनरी बिगर गई, आन परी दृग रोरी।
गाल–गुलाल मलो मति माधव, बैन सुनो यह मोरी,
लला न करो बरजोरी॥
नाहक आजु मोहि पर डार्‌यो, पिचकारिन रंग घोरी॥
सास ननद को मोइ डर लागत,आई हों मैं तोरी खोरी,
लला उनकी अब चोरी॥
खेलत संग हमें डर लागत, अबहिं उमर मोरी थोरी।

ढीठ भये तुम एक न मानत, मोतियन की लर तोरी,
छैल बहियाँ झकझोरी॥
प्रीत की रीत नहीं कछु जानत, ब्रज की नई हम गोरी।
''लालमणी'' ललिता मन मोहन, बोले सुधारस बोरी।
हँसे मग में मुख मोरी॥

(300)

बँसीवाला आइ जइयो म्हारे देस, थारी साँवरी सूरति बाला भेस॥
आवण–आवण कहि गया साँवरा, कर गया कौल अनेक।
गिणताँ गिणताँ घिसि गईं म्हारी, आँगुलियाँ री रेख॥
मोर – मुकुट पीताम्बर सोहै, घूँघरवाला केस।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर, कब आवौ इहि देश॥

(301)

धन्य–धन्य वृज की नरनारी,
जिनके आँगन नाचत नितप्रति, मोहन करतल दै दै तारी॥
परम प्रिया मनमोहन जूकी, प्रेम पगी रस विधप गँवारी।
जिन्ह के हाथ खात माखनदधि, लाड़ लड़ावत दै–दै गारी॥
मुरली धुनि सुनि भागत सगरी, लोक लाज गृह काज विसारी।
चाहत चरण धूलि नित तिनकी, दीन अकिन्चन प्रेम भिखारी॥

(302)

नैना नीचे कर काहू सों लड़ावैगी कहा।
करि श्रृंगार अटा चढ़ि बैठी काऊ रसिया की मुसक बंधावैगी कहा॥

(304)

नाथ मेरो कहा बिगरैगो, जावेगी लाज तुम्हारी॥
भरी सभा कौरव की बैठी, बड़े–बड़े बलकारी।

भीष्म, द्रोण कर्ण दुर्योधन, दु:शासन कुवद विचारी॥
पाण्डव पुत्र भये अति दुर्बल, ऐसी बात विचारी।
अर्जुन धरे ना धनु गांडिव को, भीम गदा नहीं धारी॥
अब तो कृष्ण कसर कछु नाहीं, करन चाहत है उघारी।
सूर के स्वामी वेग पधारो, देखो घात हमारी॥

(305) (काफी)

रँग डारौंगी वाही पै जाने तोर्‌यौ है धनुक,
सुनि आई री आजु नई होरी की भनक॥
करि श्रृंगार चलीं सब बनिता, कोऊ अबीर कोउ अरगजा मलत।
खेलत राम जानकी के सँग, उत आवत पिचकारी की सनक॥
एक कहै रँग डारों लखन पै, एक कहै या खिलाड़ी पै तनक।
एक उमँगि मुख मलत लाल कौ, एक हँसै दै तारी की ठनक॥
जो आनन्द मचौ मिथिलापुर, शेष शारदा बरन ना सकत।
'तुलसीदास' धनि धनि राजा दशरथ, धन्य धन्य मिथिलेश जनक॥

(306) (धमार)

गूजरि जोबन माती डौलै, हो हो कहि कहि बोलै॥
नैनन सैंनन बैंनन राधे, बतियाँ गढ़ि गढ़ि छोलै॥
यह रिझवारि लाल गिरधर के, मोहन लागी डोलै॥
रस की गाँठि परी जियरा बिच, चतुर होय सो खोलै॥

(307) (धमार)

ए मद छकी ग्वालिनि तेरौ जुबना जोर,
हँसि हँसि घूँघटरा क्यों न खोलै॥
फागुन मास में मान करति है, काहे मुख सों सूधें क्यों न बोलै॥
रूप कौ भार दिना दस कौ री, बाँट गुमाननि तौलै।
औसर पाय कै आनँद करिलै, काहे बन बन ऐंड़ी बैंड़ी डोलै॥

(308) (धमार)

होरी कौ छैल मदमातौ डोलै॥
सुरँग गुलाल कुमकुमा भरि भरि, केसरि रँग लै बोरै॥
हों कैसे निकसों गैल सखी री, आय सुधाइ पकरि बहियाँ झकझोरै॥
'चन्द्रसखी' यह ढीठ महरि कौ, कंचुकी बन्द तकि तोरै॥

(309) (धमार)

मारू जी मतवारौ ढोलना,
एक कंत सँग रँग लियें डोलै, जोबन की, ए मदछकी जोबन की।
अरज करों मुख माँड़ि सबन कौ, है कोऊ सारँग जादूगर कौ॥
रँग बरसै जैसें मेहरा, बरसन लागी अबीर–गुलाल की बादरी।
सुरजन तुम घर नवल फाग है, दुरजन के घर होरी है सूनी॥

(310) (धमार)

लाग्यौ ही आवै मेरे गोंहन॥
हौं तरुनी कोऊ और न बज्र में, अब कोऊ भटू समुझावै या मोंहन॥
एक दिन निकसी मैं द्यौस द्वार है कैं, वह लाग्यौ उठि कें मेरे गोहन।
मोहि न दोस, दोस इन नैननि, मैं काजर छाँड़यौ है या सोंहन॥
होत चबाउ नगर घर घर में, सासु ननद मानति नहिं सोंहन।
'धाँधी' के प्रभु बरजौ न मानत, प्रथम फाग मोही सन॥

(311) (धमार)

मैं क्या करों री, कैसे रहति कुल कानि या ब्रज में माई॥
एक जोबन मद छक्यौ ही रहत, दूजें निडर करन कों हो होरी आई।
नयौ जोबन सुन्दर नारिन मिलि, पकरि करत मन भाई।
'गुलबा' के प्रभु माधौ मन मोहन, रँग की धूम मचाई॥

(312) (धमार)

ए री मेरी गैल न छाँड़ैं साँवरौ, क्यों कर पनियाँ जाउ।
हौं लाजनि डरपति रही, मेरौ धरहि न कोऊ नाउँ॥

जित देखौ तित देखियै री, रसिया नन्द कुमार।
मारग में ठाड़ौ रहै मोहि, पलकन करत जुहार॥
लकुट लियें आगें चलै री, पंथ निहारत जात।
मोहि निहारै आनि के सखि, चितवत मृदु मुसक्यात॥
जमुना जल गागरि भरौं री, जब सिर धरों उठाय।
उड़ि अंचल कंचुकि गिर्‌यौ, मेरौ हियरा लखि ललचाय॥
गागरि मारै काँकरी री, एड़ी छुआवत लात।
इन बातनि कैसें बनै मोहि, रोकत आवत जात॥
ब्रज घर घर चाँचरि मच्यौ री, प्रकट होत अनुराग।
अब कहु कैसी बीति है, मेरे सिर पर आयौ फाग॥

(314) (धमार)

दधि बेचन कैसें जाउँ, गोकुल धूम मची है।
फागुन मास कौ दृश्य अनोखौ, सब ब्रज एक मयी है॥
नहिं कोऊ ऊँच नीच कों समुझे, भेद की गेंद बनी है।
कान्हा ग्वालन बीच मगन है, प्रेम की डोर बँधी है॥
एक लँग ग्वाल एक लँग गोपी, दुहुँ बिच खूब अड़ी है।
कृष्ण कन्हैया लखै तमासौ, रँग की कींच मची है॥
साँझ भई सब घर कौं लौटे, जसुमति द्वार खड़ी हैं।
सबकों एक रूप में पावत, छाती उमँगि उठी है॥
भाव एकता घर घर छायौ, सबकी एक रुची है।
धन्य भाग या गोकुल नगरी, हरि लीला सँचरी है॥

(315) (धमार)

गाँव रसवादी के डर डरियै, पनियाँ कैसे जाउ।
सुनियत है बंसीवट बारे, धूमधाम घमसान॥
या डर सों घर सों नहि निकसों, धरति न बाहिर पाँव

गात छुअत वह ढीठ 'तोषनिधि', लोग करत बदनाम॥

(316) (धमार)

गोरी गोकुल गाँव न बसियै, जौ लों होरी फागुन मास।
बाहिर दुरजन लोग चबाई, घर में बैरिन सास॥
जौ खेलों तौ पिय अपने संग, मन में अधिक हुलास।
जाहु चले बलिहार बिहारी, पिया मिलन की आस॥

(317) (धमार)

लाड़िली मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ द्यौस लाड़िली, बैठी हौ भौंहें तान॥
मानि सिखावन लेहु आपने, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान॥

(318) (धमार)

होरी खेलियै ए जी, हम तुम सँग मोहन, भरि जोबन महाराज सों॥
चोया चन्दन और अरगजा, मैं तौ रंग छिरकौंगी सूही पाग पै॥
फगुआ माँगन चली हैं नंद घर, फगुआ लैहों अपनी मौज सों॥

(319) (धमार)

मोहन तुम जिनि जानों ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं॥
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हरी गोकुल नगरी॥
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरीं॥
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी॥

(320) (धमार)

सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी॥
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी॥

(321) (धमार)

होरी खेलन आईं, बनि बनि बृज की बाल॥
हाथन पिचकारी रँग रँग लैकें, झोरिन लियें हैं गुलाल॥
गावति चली हैं सहज ही सुन्दरि, अति अनुराग बढयौ तेहि काल।
झुरमुट दै करि घातनि चहुँ दिसि, घेरि लिये नंदलाल॥
एक नें पकरि नचाय ठाडो़ कीन्हों, एक नें अंजन बेंदी भाल।
राधा प्यारी के पाँय परौगे, तब छूटौगे लाल॥

(322) (धमार)

हो होरी खेलन आईं, आजु आई॥
बरसाने मधुबन की नारीं, लाज छाँड़ि पति तजि तजि धाईं॥
करि सिंगार चलीं ब्रज बनिता, चालि चलति गज गति हू लजाई।
अंचल की ढालें मुख ऊपर, नैन की सैंननि बान चलाईं॥
इत गोपाल सखन सब सँग लियें, केसरि कुमकुम लियें हैं लुगाईं।
ऐसी भीर भई है परस्पर, नंद पौरि और जमुना के ताईं॥
गोकुल घेरि लियौ चहुँ ओरन, हरि पकरन की घात लगाई।
ग्वाल बाल सब भये हैं दुचीते, ललिता पकरि हलधर जू कों लाई॥
फगुआ देति लेति नहिं सुंदरि, विनती करत त्रिभुवन पति राई।
कोऊ सखी मिलि गुलचा मारै, अरू दोऊ हाथन हाहा खवाई॥
बड़े हो प्रवीन परे अबलनि बस, भूलि गये सिगरीं चतुराई।
'सूर' सखिन के जब बस परिगे, राम स्याम दोऊ आँखे अँजाई॥

(323) (धमार)

आई गई सब, गोरी गोपाल बनीं, छैला आजु होरी के खेल में।
सारी सुरंग पै केसरि रंग की, बूँद परै तौ कहा मन मोहै॥
एते पै लाल गुलाल मलौ मुख, या छबि कों बरनै कवि को है।
घेरि लिये चहुँ ओर सों ग्वालिनि, मानों मुनी बिच पींजरा सोहै॥

(324) (धमार)

होरी खेलै लाल, ढफ बाजै ताल, जैसे झनन झनन झन नन नन नन॥
तेल फुलेल अबीर अरगजा भ्रमर उड़त, जैसें भन नन नन।
निकसीं कुँअरि ए झुमरि खेलन होरी, हस्ती छुटत जैसे सन नन नन॥
कँचन की पिचकारी लाई भरि भरि, डारति सुरँग सबके तन नन।
केसरि रंग की कींच मची है, उमड़ि घुमड़ि धन नन नन नन॥
बृन्दावन की कुंज गलिन में, ग्वाल बाल सब सखन संग।
'तानसेन' के प्रभु हो होरी खेलें, आनँद भयौ सबके मन नन॥

(325) (धमार)

हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल॥
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल॥
इत उझकत पियरौ पट पहिरैं, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल॥
'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फाग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल॥

(326) (धमार)

लाल तुम होरी खेलत बरजोरी चलत, मग निपट छाँड़ि दई लाज॥
बाट घाट बृज बाल न निबहत, रारि करत बे काज॥
'रामप्रताप' न बसिहैं या बृज, कहेंगी महर सन आज॥

(327) (धमार)

होरी खेलत श्याम भवन में।
बृन्दावन सुखधाम जु कहिऐ, मचि रहौ फाग गलिन में॥
इत प्यारी उत कृष्ण मुरारी, नित नई चौप सखन में।
पिचकारिन झर ल्यावै साँवरौ, उड़त गुलाल गगन में॥

रंगी जुगल हरि रास रच्यौ है, राग होत हैं कुंजन में।
साँवरे रंग सुरंग रँगे अरु, झलकत अबीर करन में॥
ग्वाल बाल सब सखन संग लियें, सीतल होत तन मन में।
"चन्द्रसखी" भजु बाल कृष्ण छबि, नँदलला है रँगन में॥

(328) (धमार)

दंपति रास रच्यौ या ब्रज में, चलहु जाय देखन हो होरी।
इत श्री मदनगोपाल लाल, उत यूथ यूथ मिलि राधा गोरी॥
केसरि बहुत मँगाय अबीर उड़ाय, और लीन्हों भरि झोरी।
ललिता मूठि चलाय दुहुन बिच,दीठि बचाय गाँठि गहि जोरी॥
अँचल खस्यौ है जानि सकुचीं दम्पति, हँसि हँसि कर भौंह मरोरी।
चतुर सखी मिलि हँसी है हाथ दे, पाई है आजु दुहुन की चोरी॥
फगुआ देहु मँगाय "मैन" प्रभु,फेंट पकरि यों कहत किशोरी।
खेलि फाग हिलि मिलि रस बस करि,आये हैं जीति नंद की पौरी॥

(329) (धमार)

होरी तौ का संग खेलियै हो, मो बालम परदेसीरा॥
अब रितु आई बसंत की हो, फूलन लागे टेसुरा।
हमरे बलम सों यौं जाय कहियो, गोरीधन ढारे आँसूरा॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, किस विधि पठवों संदेसुरा।
बालापन की अबलों निबही, अब निबहै सो साँचीरा॥

(330) (धमार)

ए मनाऔ राजन रा मानो जी म्हारो राज॥
एजी थारे घोड़िला की बाजी घोड़ा टाप,
ए हथानो म्हारो टोपनों जी म्हारो राज॥
एजी थारे बिछुअन बाजी झनकार,
ए अनवट झोखा लैं रहौ जी म्हारो राज॥
एजी थारै सालूरा में दीखै गोरा गात,
ए रंगाय दै बाला चूनरौ जी म्हारो राज॥

एजी थाने होरी तो कीन्ही छै विदेस,
ए गनगौरें पूजन आवणौं जी म्हारो राज॥

(331) (धमार)

बृज में है रही होरी श्याम राधिका सै खेले होरी।
अबीर गुलाल के थार भरे हैं केसरि रंग सों गगरी॥
अबकी चोट बचाउ साँवरे सब बृज भीजि रहौरी।
ए अब रँग बरसत सरसत सुख अद्‌भुत छवि सोभा इकठौरी।

(332) (धमार)

जगावति राधा प्यारी – सोइ रहे बनवारी॥
घर घर तैं बनिता सब आईं, हाथ लिएँ पिचकारी॥
ए अब रंग की घोरा घोर मची है, मगन होत बृजनारी॥
फागुन भरि कोऊ जाउ कहूँना, देखौ ठाठ मुरारी॥
ए अब गोकुल की सकल गलियन मैं, भरि रही रंग किआरी।
तब चलियो वृज राज दुआरें, डटि रही भीड़ अटारी॥

(333) (धमार)

भटकि रहे प्राण हमारे, जब से श्याम सिधारे।
बारह बरस संग संग खेले, सुखसों दिवस गुजारे॥
ए अब ऊधौ ध्यान धरौ नटवर कौ, सपनेहिं पाँइ पखारे,
प्रात होत सुपलक सुत भेजौं, लइओ मधुवन द्वारे॥
ए अब गोकुलवासी व्याकुल डोलैं, कहाँ गए प्राण हमारे।
हमकों उन बिन कल न परति है, तड़फत नैन विचारे॥

(334) (धमार)

झूमि सब आई हैं गोपी झपटि रहे नंदलाल।
ज्यों घन में चमकैं चपला अति त्यों चमकै ब्रजबाल॥
ए अब अनुपम नेह निरखि मोहन प्रति सुर मुनि भए निहाल।

जुरि मिलि चाले नंद भवन कों, गाइ रहे मृदु ख्याल॥
ए अब फगुआ माँगि रहे हैं नंद घर, नाचत हरि संग ग्वाल।
फागुन मास बड़ौ सुखदाई, रचौ फाग गोपाल॥

(335) (धमार)

जमुन जल सजनी री कैसे जाँउ।
साँबरे अंग लड़िकवा के डर, बाहिर परत न पाँव॥
आरसी देख और मुँख देखत, मनही मन में लजाँउ।
एक गोरी दूजें जोवन माती, रोक करै सब गाँव॥

(336) (धमार)

खेलन आए नंद गाँव सें, रंग भीने बरसाने॥
बिन अंजन कजरारी अँखियाँ, चढ़ी मदन खरसाने॥
मृग मद रंग अरगजा चोवा, नर नारिन सब साने॥
कृष्ण जीवन "लछीराम" के प्रभु, प्यारे प्रेम मगन हर्षाने॥

(337) (धमार)

ना दैया मैं अब न जाऊँगी बीच ठाढ़ो दधि को छिनैया कन्हैया॥
नाम ठाम वाको भूलि गई हो, कहत है वृज को बसैया॥
डर लागत है कांपत हो यातें, बाँह गहे कोउ देखे लुगैया॥
आन पड़े जब मोपै महरवां, कवन हटकैया कन्हैया॥

(338) (धमार)

मदन मोहन नन्द को लाल, हाथ लिये गुलाल बाल॥
ग्वालवाल निपुण नाल, मची बृज में होरी॥
गोरी नाचत गावत हँसत कोऊ, अरगजा अंग मलत कोऊ॥
भाँति भाँति खेल ख्याल, रचहिं बाम भौरी भौरी॥
उड़त अबीर फेंकत रंग, कुमकुमा कोऊ मारत अंग॥
लालन ललिन भरे उमंग, मलहिं बदन रोरी गोरी॥

(339) (जकड़ी)

भवानी नगर कोट बारी॥
देवी नगर कोटि बारी,
नगरकोट नागर रचि राखौ कोयल बोलै बानी॥
पहिरें देवी सारदा नवल गुदी में हार,
गजरी के नीचें चुरीं चटकीली चार,
बाजूबंद पहिरें चारि काँकरि करैली चाल जी।
सुए पिये चोलना पै मगजी छिटकि रही,
घूमदार घाँघरे पै डोरी सी लटकि रही,
देवी के दरस कों दुनियाँ तरस रही,
पैजनियाँ झनकार ॥ दुर्गे नगर कोट॥
बैठी देवी पारवती आवति सुगन्ध ब्यारि,
लक्ष्मी जो आई देव तैंतीस ने ऐसे कही,
छप्पन कोट जोगिनी और चण्डिका हैं जाके पास जी।
आठों पहर ठाढ़ी सब सारदा के जोरें हाथ,
तुही सिखावन हारी ॥ दुर्गे नगर कोट०॥

(340) (जकड़ी)

राधेश्याम कों मिलाय दै री, सहेली गुण मानोंगी तेरौ,
ललचै दरसन कों मन मेरौ॥ राधेश्याम कों॥
आवत विषय ज्वार, जाहि कैसें धोवै ताहि,
कालि जो करत सोई, आज करो मेरौ काज,
बिना रामचन्द्र के, भरत ने न कीन्हों राज जी।
वही मेरौ हाल, मैने तोसों कही खोलि लाज,
जीउ डूबौ जात ज्यों, समुद्र में जहाज जात,
नेंक ठोकर लगाय दै री॥ राधेश्याम कों॥
एक सखी बोली नेंक, हौ है वीरा तेरौ काज,

धीर के धरें तें राम, जानकी कों ब्याहि लाये,
धीर के धरे तें उमा, महादेव वर पाये जी।
धीरज में गोकुल, गोपाल जस राखि लाये,
धीरज में ब्यास जू ने चारि वेद गीत गाये,
ऐसे मन समुझाय लै री॥ राधेश्याम कों॥
पीताम्बर लकुट, मुकुट अरू मंद हास,
दरस किये तें पाप, जनम के भागि जात,
ठाड़ी हिड़बिड़ाति, मन में उदास भई जी।
तौलौं आय बाँसुरी, बजाई पिय प्यारी पास,
छूटि गई नारी–व्यारी, लैन लगी पूरी साँस,
काशी में बसेरौ धुनि, गावैं 'श्रीलाल दास'
चरण कमल लपिटाय लै री॥ राधेश्याम कों॥

(341) (रसिया)

आज होरी खेलत नन्द किशोर।
चलौ सखी गौबरधन की ओर॥
घर–घर सें बनिता बनि आईं, अपने री अपने जोर।
सब सखियन में राधे सोहैं, मोहे मुकुट मनोज॥

(342) (विहाग)

माई मैंने सपने में परने गुपाल॥
सपने में न्हाई सपने में धोई, सपने में कीन्हों सिंगार।
सपने में पहरी हरी हरी चुरियाँ, नक बेसरि गल हार॥
हरदी सुरंग देह सब राँची, हाथन मेंहदी लाल।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, वर पाए गोपाल॥

(343)(विहाग)

साँमरे तेरी शरण अब आयौ॥
मैं भटक्यों बाहिर भीतर, चैन कहूँ नहिं पायौ॥

यह संसार स्वार्थ में डूबौ, प्रेम शुद्ध नहिं भायौ।
प्रेम भाव वह कहाँ विलानौ, जो गोपिन दर्सायौ॥
दिन नहि चैन रात नहि निंदिया, हेरत जन्म बितायौ।
वह शुभ घड़ी निकट प्रभु दीजौ, युगल चरण शिर नायौ॥

(344) (विहाग)

सॉंवरे मन नहीं धीर धरै॥
बहुत दिननि सौं भैंट भई ना, तासौं कल न परै॥
मन मसकों तौ छाती भभकै, चिन्ता ज्वाल जरै।
कौन घड़ी वा छवि कौ निरखौं, जासे काम सरै॥
तुम बड़ भागी हम हैं अभागी, दूसर मन न भरै।
अब तौ तनिक निहार मनोहर, जासौ विपति टरै॥

(345) (विहाग)

कोऊ मधुवन की डगर न बतावै॥
रथ तौ मेरौ आली दूरि निकसि गयौ, चलत गगन दरसावै।
आयौ क्रूर लैन उन हरि कों, जो ठाकुर कहवावै।
है कोऊ सूर हमारौ बृज में, चलत श्याम बिलमाबै।

(346) (विहाग)

भयौ अब पौढ़न को समयौ।
पौढ़े श्यामा श्याम युगल दोऊ, सुख नहीं जात कहौ॥
इत ढुरि गयीं द्रुमनि की छईयाँ, उत ढुरि चंद गयौ॥
सुखद सेज पर दोऊ पौढ़े, बाढ़ौ प्रेम नयौ॥

(347) (विहाग)

रे मन मूरख जनम गंवायो॥
करि अभिमान विषय रस राँच्यौ, स्याम सरन कब आयौ॥

यह संसार फूल सेमर कौ, सुन्दरि देखि लुभायौ।
चाखन लाग्यौ रुई गई उड़ि, हाथ कछू नहिं आयौ ॥
कहा भयौ अब के मन सोचै, पहिलें नाहिं कमायौ।
कहत "सूर" भगवंत–भजन बिनु, सिर धुनि धुनि पछतायौ॥

(348) (विहाग)

है गए श्याम दौज के चन्दा॥
मधुबन जाइ बने मधुबनियाँ, कुबजा डारौ प्रेम को फन्दा॥
गोकुल सें सब प्रेम बिसारौ, छोड़े बिलखत जसुमति नन्दा।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, पहलौ प्रेम परौ अब मन्दा॥

(349) (विहाग)

ऊधो फूली साखि उजारी॥
पाँइ परीं उन चरननि लोटीं, तौऊ दया न धारी॥
जब रथ हाँकि चले मधुबन कों, सिसकि रहे नर नारी।
बुरौ होइ वा सुफलक सुत कौ, जाने अपति बिचारी॥
बारह बरस तौ सुख सों बीते, अब ही बखत भयौ भारी।
अब तुम लौटि जाउ मथुरा कों, पठवहु फूल हजारी॥

(350) (विहाग)

देखौ दधिसुत मैं दधिजात॥
कर पर कीर कीर पर पङ्कज, पङ्कज के द्वै पात॥
एक अचम्भौ सुनरी सजनी, जल सुत पै जल जात।
सुन्दर बदन विलोकि श्याम कौ, नन्द मैहरि मुसकात॥
अति आश्चर्य भयौ गोपालहिं, फूले अंग न समात।
ऐसौ ध्यान धरत जो हरि को, "सूरदास" बलि जात॥

(351) (चाल)

नन्द कौ लाल चबाई, आज पनघटवा धूम मचाई॥

पनियाँ क्यों भरिए डरिए जिय, मरिए लाज न ढीट ढिटाईं
रंग बोरत छोरत चोली बंद, पुनि पुनि मृदु मुसकाई॥
गोकुल में कहों कानि कौन विधि, को राखे अब हो होरी आईं
अवरे समूह अहीरन के घर, भई है नई ठकुराई॥
करत अनीति नीत सब छाँड़त, रंग बरसत और सुख सरसाईं
बरज न सकत लखत ऐसी गति, मानों सब की मति बौराई॥

(352)

ननदुईया हो बैंदी मोपै दईउ न जाइ॥
जब दीनी तब सास रिसानी, या दौरनियाँ की सहीउ न जाय॥
बैंदी भाल सुहाग निसानी, पिय चाहें पै दिवरै न जाय।

(353)

लंगरि कजरा दै बजारैं मत जइए – तेरौ ढाड़ौ है माखन यार॥
छींकत पनियाँ हम चली, मेरे बाएँ बोलौ काग।
कै सिर फूटै गागरी, कै मिलहि पुरानों यार॥
ग्वाल बाल हुरिआने डोलै, गावत गीत मल्हार।
गोकुल की सँकरी गलियन में, करि रहे हाल बेहाल॥

(354)

निरदई क्यों रंग भिंजई, प्यारे तोहि नेक न आई लाज।
सारी सुरंग छुई अँगिया मेरी, अबहीं मोल लई॥
जाही सौं घर बाहिर भीतर, पगु ना धरत अली।
जाहु चले बलिहार बिहारी, और भई सो भई॥

(355) (चाल)

बालम काँकरिया मति घालौ, हमारैं लागि जै–है रे॥
लागि जैहै पीर हुई है, सेजरिया दुख पै है॥
अरज सुनों पिया चोट न मारौ, ननदी बोल सुनै है॥

(356)

रसिया ना मानै मेरी अँखियन भरत गुलाल॥
अछन अछन पग धरै अलवेलौ, निरखि नवेली बाल॥
नयौ रे फाग जोवन गर्वीलौ, करत अटपटे ख्याल॥
जाहु चले बलिहार बिहारी, भुजबल होत निहाल॥

(357)

कजरा करि गयौ रे बदनामी॥
बैल भरे काजर के आए, करि दै मोल जिठानी॥
एक रेख काजर की दीनी, सो लोक मुलिक ने जानी॥
कठिया गैहूँ कनिक पुरानों, और चम्मिल को पानी॥

(358)

अबना दैउँगी मोरे यार काजरा॥
जा कजरा ने ऐसी कीनौ, मसक डारी छतियाँ, मरोरि डारे गाल॥
जे बृजवासी बड़े उतपाती, मलत गुलाल मेरे मुख सों लाल॥
फागुन भर हुरियाने डोलै, करत ठिठौली मौसौ डारे जैमाल॥

(359) (रसिया)

बालम महीं जा, सारी रैन जागै महीं जा॥
कोठे ऊपर कोठरी, जहाँ बैठौ करूआ नाग।
काटे पै हू बचि रही, काहू छैला के भाग॥
कोठे ऊपर कोठरी, तामै गढ़े सुनार।
पाइल गढ़ि दै बाजनी, मेरौ यार सुनै झनकार॥
कोठे ऊपर कोठरी, तामै खड़ी सुखाऊँ केस।
यार दिखाई दै गयौ, धरि जोगी को भेस॥

(360)

मेरी बैंदी को करियो तलास, छैला खेलत बैंदी गिरि गई

बैंदी की बैंदी गई, और जोवन बारा बाट॥
सावन, भादों ऊनए, और रिमझिम बरसै मेह।
झूला झुलामें कामिनी, और गामें गीत मल्हार॥
ऊँचौ सहर पटना बसै, और नीचे लगत बजार।
पाट पुहावन धन चली, बारौ लौहरों दिवर लियें साथ॥

(361)

मोहन कहा रचना रचि डारी, मचि रहौ घर घर में कुहराम॥
सुफलक सुत मथुरा सें आए, श्याम चले बृज धाम॥
नर नारी सब रथ को घेरै, हमहूँ चलै संग श्याम॥
अद्‌भुत प्रेम देखि गोपिन कौ, चकित भए बलराम॥

(362)

नैंक होलै पलिंग पर आउ, छैला पायल मोरी बाजनी।
सास जगै ननदुईया जागै, और जगैं नगर के लोग॥
ऊँची अटरिया ईंट की, और सिड़ियाँ लगी दो चार।
छैला सिड़ियन सिड़ियन चढ़ि गई, और चौमुख दियरा हाथ॥
छैला दियरा तखालै धरि दियौ, और पलिंग दियौ सरकाइ।
आइत पाइत गैंडुआ, सिरहाने तकिया चार॥

(363) (पेंड़ा)

बालम बेसरिया को लटकन, छैला टोरि डारौ रे॥
लटकन टोरी गूँज मरोरी, जा सुनरा के छोरा॥
यह लटकन मेरी मात निसानी, मलिन कियौ मन मोरा॥

(364)

सॉवरिया, कहूँ देखा रे बाला॥
कौन मढ़ाई तेरी सिंगी रे सेली, काहै मढ़ाई मृगछाल॥
सौने मढ़ाई तेरी सिंगी रे सेली, रूपे मढ़ाई मृगछाल॥

(365)

ननदी अब का चढ़उँ अटरियाँ, बिराने है गये सईयाँ॥
और दिना मोसै मुख हू न बोले, आज गही मोरी बहियाँ॥
कौन जतन अपमान बचइहौ, परत तुम्हारे पइयाँ॥
बात गए फिर बात मिलै ना, रखियो लाज गुसईयाँ॥

(366)

सालूरा में मौतीरा झिलि रहौ, झिलि रहिए नादान ननदी॥
दो गोरी दो साँमरी, चारों मिलि पनियाँ जाँइ॥
अगिली कै काँटौ लागौ प्रेम को, और पिछली मुरि मुरि झोका खाइ॥
दो गोरी दो साँमरी, चारों बजारैं जाँइ॥
गोरी बिसायौ काजरा, और साँमलरा मुख पान ननदी॥

(367)

लाल मुख मलि डारौगी एसों के फागुन में परू के फगुन में,
तब जो गए तुम भाग॥
जिन सखियन कौ मान करत है बे हू गई सब भागि॥

(368)

तेरौ लाल करि रहौ जोर जुलम, राह बाट में घेरे सवन॥
दधि बेचन हम कैसे जाइँ, वह फैंकै दही और फोरै मथन॥
जे ऊधम कहौ कैसे सहैं हम, सब पर करि रहे टेढ़े नयन॥
अब माता हमरी विनय सुनौ, कछु धारौ धीर नहिं छोड़ौ घरन॥
इन्है लाल न समझौ मेरी बहिन, इनके नाम को जपि रहे सुर मुनिजन॥
सुनि जसुदा के गम्भीर वचन, सब चकित भईं परी हरि चरनन॥

(369)

तुम मथुरा काहे कीन्हौ गमन, जसुदा के प्रिय प्यारे सुवन॥
हम सब तज दीनौ खान पान, कहाँ पामैं अपनौ बिछुड़ौ ललन॥

यह दिन फाग सुहाग भरौ, अब को खेलै फाग को देहि रतन॥
कुबिजा सौं अनुराग बढ़ायौ, सब गोकुल पै करे टेढ़े नयन॥
नर नारी करि रहे विचार, यदि नहिं आमै सब छोड़ौ भवन॥
अब देखौ कान्ह हमें चैन नाहि, हम तेरे ही नाम को करती रटन॥

(370) (चाल)

मोहि न सुहाइ चुनरि पचरंगी॥
यह चुनरि मेरे मैकें से आई, गुरु मेरे ने दई रंगवाइ॥
यह चूनरि मेरे धुमिल है गई, सतगुरुजी ने मेरी दई बदलाइ॥
चुनरि ओढ़ि में गई रे बजारैं, काल बिचारौ फिरि फिरि जाइ॥
कहत "कबीर" सुनौ भाई साधो, बार बार मेरे आवे जाइ॥

(371) (चाल)

मन मतवाला जपूँ कैसे माला॥
ग्यान गुदरी के दस दरवाजे, आखिर की खिड़की में पड़ गया ताला॥
न्हाइ धोइ आसन पर बैठी, भ्रमर जाल में हाल बेहाला॥
यह चंचल मन बस नहि मेरे, मेरी समझ में जम गया पाला॥
कहत "कबीर" सुनौ भाई साधो, दरशन दीजै मोहि दीन दयाला॥

(372)(रसिया)

उठि मिलि लै राम लखन आए, उठि मिलि लै॥
रामहूँ आए लखनहू आए, मातु जानकी संग लाए॥
रावण मारि बाकी लंक उजारी, राज विभीषण दै आए॥
मकुना हाथी जापै जरद अम्बारी, हनुमत चँवर ढुरत आए॥
"तुलसीदास" आस रघुवर की, अवधपुरी आनंद छाए॥

(373)(रसिया)

उठि मिलि लै हरि मथुरा चाले॥
हरि चाले दाऊजी चाले, बे तौ बूढ़े नंद बाबा चाले॥

बारह बरस गोकुल में बीते, बे तौ नेह टोरि मथुरा चाले॥
गोपी रोवें ग्वाल पुकारैं, बाकी गइयाँ हू आँसू डारै॥
मात जसोदा कान्हैं बुलावै, तोहि कहा सूझी हम को मारै॥
हँसना चोर जाकों खसना साथी, इन सौ नहिं पालौ डारै॥

(374) (चाल)

लोभी वृजराज अजहुँ नहि आए॥
तीन कोस पर ऐसे विलमे, करत न्याय सब सुधि बिसराए॥
मात जसोदा व्याकुल डोलै, काहू सौति ने लये भरमाए॥
राधा प्यारी सोच करति है, वा कुबिजा सौं नेह लगाए॥

(375) (चाल)

देत लिलार बिरह रस बैंदी गोरी॥
भिण्ड सौ सहर तखत राजा कौ,
बसत सराउँगी जामै और बिलवार॥
अम्ब की पाड़ि, बाग निबुलन कौ,
टपकत निम्बू, जामे चुअत अनार॥
ताल की पाड़ि, फकीर कौ तकिया,
घोंटत भंगिया, पियें बिलवार॥
तुम चिर जीवौ, राजा "बखतसिंह"
तुम्हरे राज, गोरी खेलत फाग॥

(376) (विहाग)

श्याम तेरी मूरति नैन बसी॥
सोवत देखी जागत देखी, पाई न ऐसी छबी॥
नेकहू ठौर बची नहिं साजन, मो मन ऐसी धँसी॥
अन्दर बाहर भयौ श्याम मय, मानहुँ मंत्र डसी॥

(377) (विहाग)

हेली कैसे बचों, मेरे नंदनंदन पीछें परौ।
ऐसी सीख दै मेरी सखी सयानी, वाके रंग न रचौ॥
कबहुँक कर में ढफ गहे री, उठै दोहरा गाय।
कबहुँक देखि नैन ललचावै, उठि हा हा खाय॥
नाम और कौ लै सखी री, टेरै मोहि सुनाय।
हों समुझों जो वह कहै री, कछु न रहे बताय॥
नैनन देखत ही बनैगी, बनत नहीं कछु आन।
हौं डरपौं जिय आपने, उत 'जगन्नाथ' सुज्ञान॥

(378) (विहाग)

भींजै म्हारी चूनरी हो नंदलाल।
मति मारौ केसरि पिचकारी, हा हा मदन गोपाल॥
बसन उड़त सो सब तन निरखत, कौन निडर यह ख्याल।
'रसिक बिहारी' छैल छबीलौ, ढीठ भयौ है गोपाल॥

(379) (विहाग)

माई मैंने देखे नंदकुमार॥
गोपी नाचैं ग्वाल रिझावैं, हरसैं सब नर–नारि॥
बंसुरी बारौ ओझिल है गयौ, ढूँढै जसुदा द्वार।
राधे आई रँग भरि लाई, छिरकैं केसरि फुहार॥
जसुमति मैया ढूँढै कन्हैया, निरखै नैन निहारि।
आँखि मूँदि के टेर लगावै, कहाँ हो मेरे दुलार॥
इतनी सुनि के हरि उठि आये, लीन्हों प्रेम पसार।
'नारायण' प्रभु अन्तर्यामी, लीन्हैं भगत उबार॥

(380) (विहाग)

पिया बिन सूनौ छै म्हारौ देस॥

फरकि रही म्हारी दायीं पुतरिया, मलिन भयौ म्हारो भेस॥
अवधि वदी हरि अजहूँ न आये, पीना है गये केस।
"मीरा" के प्रभु गिरधर नागर, तजि दियौ नगर–नरेस॥

(381) (रसिया)

ए रे कान्ह आयौ नहीं, बीति गई रतियाँ॥
बिन मनमोहन कल न परति है, धड़कि उठीं मेरी छतियाँ॥1॥
छिन आँगन छिन बाहिर भीतर, छिन छिन चढ़त अटरियाँ।
"मीरा" के प्रभु गिरिधर नागर, काहे सुरति बिसरियाँ॥2॥

(382)(चाल)

कोऊ कछू कहौ मन लागा रे॥
प्रीति करै तो ऐसी रे मोहन, सौने बीच सुहागा रे॥
मनुआ कहत फकीरी लादौ, तन गुदरी मन धागा रे॥
सोय गये पिय जागत नाहीं, भोर भये उठि भागा रे॥

(383)

जतन बतइयो हरि, कैसे धीर लावै॥
तुम्हरे ही रँग में हम सब राँची, एक ही रँग सुहावै।
इह पार गोकुल उह पार मथुरा, सेवा कर फल पावै॥
हम अदना हैं तुम विधना हो, गोविन्द के गुन गावै।
धन्य गुसइयाँ धनि तेरी महिमा, पुनि भाखत सुख पावै॥

(384)

तैनें कहूँ देखे नन्द गुपाल हमें बताय दै।
माई नैंक हमें बताय दै॥
मैंने घर –घर ढूँढौ, सबकों पूँछौ,
छिपे कहूँ गोपाल॥
हमें बताय दै॥

उन बिन भटकैं, छबि कों तरसैं,
जमि रही मूरति विसाल॥
हमें बताय दै॥
उन कानन कुँडल, कटि पीताम्बर,
माथे मुकुट पन्नालाल।
हमें बताय दै॥
सबै आस सिरानी, फिरौं बौरानी,
कहाँ पाऊँ गोपाल॥
हमें बताय दै॥

(385) (विहाग)

ऊधौ स्याम कहाँ पहुँचाये, हम सब फिरत भकाये॥
जबसें छोड़ी गोकुल नगरी, सुधि बुधि सब बिसराये।
जैसें जल बिन मछरी तड़पै, तैसें ही हम बिलखाये॥
आस दई अभिलास बढ़ाई, बातनि में भरमाये।
सब ब्रजवाला ढूँढै लाला, जसुमति आस लगाये॥
गोपी टेरें ग्वाल पुकारें, गइयन रुदन मचाये।
अब तो हेरौ हे जदुनंदन, दधि माखन संग खाये॥
कान्हा तौ कुबजा सों रीझे, हमकों परत लखाये।
ऊधौ तुम कछु जतन विचारौ, हमरौ मान न जाये॥

(386)

तेरे सुख की सोज हम लै हैं, मोहन जानें नहिं दैहों॥
मथि मथि सोधौ धरौ भवन में, सो अंगनि लपिटै हों।
ये जो संगी सखा तिहारे, तिनकों अबहिं भजै हों॥
ज्यों ज्यों करि फागुन दिन आयौ, सबही के मन भायौ।
तोहि नहिं छोड़ों प्यारे छैल छबीले, सूनी बाखरि आयौ।
इत उत हेरत कहा नन्द के, चलौ गेह की मइयाँ।
सूधें सूधें कहति लाड़िली, नातरू गहि हों बहियाँ॥

आजु सबेरें हों उठि बैठी, कुचन कंचुकी फरकी।
अरू केसरि घोरत में मेरी, फर फर बायीं भुज फरकी॥
'छीत स्वामी' यहि अवसर कौ, सुख कहत नहीं बनि आवै॥
देखत बाबा नंद उजागर, मोहन वदन दुरावै॥

(387)

सखी बड़े भागन तें फागुन आयौ,
होरी खेलौं श्याम संग जाय॥
स्याम भिंजोई मेरी सुरंग चुनरिया,
मैं भी भिजोऊँ उनकी पाग॥

(388)(चाल)

मैं तो डारौगी रंग गुलाल ए सइयाँ, सालूरा जंजाल है॥
माह गये फागुन रितु आई, होरी की आई बहार॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रंग की परत फुहार॥
अपने पिया सों होरी खेलों, बीती जाति बहार॥

(389) (रसिया)

चलौ सखी आजु खेलें होरी कन्हैया घर॥
अपने री अपने भवन सें निकसीं, कोऊ साँवरि कोऊ गोरी।
एक तें एक जोबन मदमातीं, सब ही उमरि की थोरी॥
चोया चंदन अतर अरगजा, कोऊ गुलाल भरि झोरी।
चपल ढीठ चपला सी चमकें, झमकति बदन मरोरी॥

(390)(रसिया)

आजु होरी रे मोरे बालमा॥
होरी तौ खेलै गोरी थोड़े दिनन की, डारि गयौ रंग झोरी॥
चोया चंदन और अरगजा, केसरि माटनि घोरी॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और नगारे की जोरी॥

हमरे संग की होरी खेलें, हमहिं कहा लागी चोरी॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, चिरजीवहु यह जोरी॥

(391)

मैं तो होरी खेलौंगी राज, अपने सुघर बालम जू के साथ॥
एमन टोढ़ी राग खमाचा, आड़ाना काफी।
सारंग सोरठा और रेखता, रहौ है विलावल छाय॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, नाचत गोपी ग्वाल।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, नूपुर की झनकार॥

(392) (चलती)

राज छम छम छम गोरी डगर चलति,
पग धरित लगति अति प्यारी हो॥
आऔ रजा हम चौपड़ि माड़ैं, तुम पंसा हम सारी हो।
खेलत खेलत रैन बीति गई, तुम जीते हम हारी हो।।
सौने को गुडुआ मौंज करै, जल भरन चलीं पनिहारी हो।
सिर पर घड़ा घड़े पर झाड़ी, हाथों में रस्सी न्यारी हो।
अनबट की तेरी सपथ करों, तेरे बिछुअन की झनकारी हो।।
एड़िन महावर लागि रहो, याके हाथों में मेंहदी न्यारी हो।।
माथै पै बैंदी सोहि रही, याके दाँतो में मिस्सी लागी हो।
'दामोदर' छबि कहाँ लो बखानों, काऊ रसिया की प्यारी हो।।

(393)(चाल)

ए री माँ हो, मटुकि गई फूटि,
बड़ी ननदी अरे सुनि लीजिए, छोटी ननदी अरे सुनि लीजिए॥
दौरानी जिठानी मो सौं, बोलें बोल कुबोल॥
नंद लला के झकझोरन सों, गई रे हाथ सों छूटि॥
कर की चुरीं सब करकि मुरकि गईं, मुतियन लर गई टूटि॥
सुन री सखी जा नंदलला सौं, लागी लगन गई छूटि॥

(394) (चाल)

अब जल कैसें जइयै, मचि रही मग धूम॥
छिरकत रंग नंद कौ ढोठा, धाय लेत मुख चूम॥
गोपी हू नाचैं बाके ग्वालहू नाचैं, होरी की है रही धूम॥

(395) (चाल)

अब हों पानीरा न जै हों, आगें मचि रह्यौ फाग।।
सारंगी तम्बूरी बाजे, अरू झपताल रे,
बीन तौ रबाब बाजे, नाचै नंद लाल।।
एक तौ उपाधी वाके, संग गोपी ग्बाल रे,
हाथ पिचकारी, अरु, फेंटन गुलाल।।
आगे आगे ननदुलि चलियो, पीछें वाकी सासु रे,
पानीरा भयौ है मेरे, जिय कौ जंजाल।।
जमुना के तीरें तीरें, आवैं गोपी ग्वाल रे,
"सूरदास" भैटें प्रभु, नीकौ बनौ ख्याल॥

(396) (तीन ताल)

ऐसी होरी न खेलौ मोसें साँवरे॥
जाउ घर अपने तुम जाउ घर अपने,
मैं गारी देउँगी गारी देउँगी गारी देउँगी॥
बृन्दावन की कुंज गलिन में गौएँ चरावै,
बारी मन मुसिक्यावै, पकरि बहियाँ झकझोरी झकझोरी॥

(397) (चाल)

रंगिडारी स्याम म्हारी चूनरिया॥
तुम तौ ढोटा नंद बबा के, हम बृखभान की गूजरिया॥
नंद के अनौखे लाला होरी खेलन कों, अब नहि आऊँ तेरी नागरिया॥

(398)

पकरि जा मोहन लै जा रे॥
जौ तेरी माखन खायौ सखी री, ऊँचे छीके धरि जा रे॥
जौ तुम कहियत राधे खरी सुहागिल, अब की बार बकसि जा रे॥

(399)

मैंने तेरा बड़ा मुलाहिजा कीन्हारे, अरे चलि जा रे, लंगर दगाबाज॥
हौं कृष्णा सों बोली ना चाली, कृष्णा मोसों लड़ा,
बरजि जसोदा अपने कन्हैये, मारग रोकैं खड़ा॥

(400) (तीन ताल)

कोऊ कुँवर कान्ह कों बरजै॥
अति ही चपल छलबल न करत अब,
लाग्यौ ही रहत संग तजत न एक छिन,
छल बल करत न डरत काहू सों, कहो कैसें जल भरियै॥
अति ही चबाई आई, ब्रज की लुगाई आई,
नाहक कलंक लाई, कृष्ण रंग रंग की।
दुहाई लगाई माई, दूरि जाई बाँसुरी,
बजाई न सुहाई माई, करत अपनी तरजै॥

(401) (तीन ताल)

जा गली रे कान्हा मति आउ रे॥
कैसी करौं ब्रजराज साँवरे, कीजै, कौन उपाउ रे॥
मैं जमुना नित जाइहों मोहि, हरि दरसन कौ चाउ रे।
सासु ननद लखि जायगी रे, यह चोरी की घात रे॥
हौं डरपति जिय आपने कोऊ, लेय हमारौ नाँउ रे॥
माहु निलज दिन फाग कौ, रसवादी गोकुल गाउँ रे॥
पग बेड़ी कुल कानि की अरु, कठिन प्रेम पुर वास रे।
सोई कीजै प्रभु 'लछीराम' अब, जामें न लोग हँसाव रे॥

(402) (तीन ताल)

मोहि मिलि गये कुंवर कन्हाई॥

हों दधि बेचन गई वृन्दावन, लौटि के देखी भीड़ गूजरिन।
रंग की मचि रही घोर गैल में, दाबि पाँव भजि आई॥
बृज की होरी लखि भई बौरी, कछु ना परत दिखाई
जहँ देखौ तहँ धूम फाग की, सबकौहि रंग समाई॥
गोपी ग्वाल फिरैं मदमाते, भूख प्यास बिसराइ
दोऊ दलनि बिच झड़ी लगी है, कान्ह रहे मुसिकाइ॥
साँझ भई सब घर कों लौटे, रंग में रहे चुचाइ
गोकुल की महिमा अपार लखि, कवि बरनत सकुचाई॥

(403)

कन्हैया जान दै तोरे पैयाँ परति हौं रे॥
हार टूटि गयौ हीरा बिखरि गये, चौपट मटुकी फोरी॥
ग्वाल बाल सब मद के री माते, घर घर फाग मच्यौ री॥
हम तेरे चरनन की दासी, अबै उमरि की थोरी॥

(404) (तीन ताल)

मेरौ मन मुरली मधुर सुनि भटकौ॥

सोवति ही सुख रंग महल में, कान परी मन सटकौ॥
दम्पति रास रच्यौ जमुना तट, लसि शोभा मन अटकौ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, राधा हरि कों झटकौ॥
लीला बिच मोहन उठि धाये, गोपिन मन भयौ खटकौ।
सब ठाड़ी बौरी सी देखें, छिपि गयौ ढोटा नंद कौ॥
ढूँढ़ौ बहुत पतौ नहि पायौ, जमुना तट सिर पटकौ।
रंगभूमि की महिमा अद्‌भुत, हरि गोपिन संग लपटौ॥

(405) (तीन ताल)

मोहि नंदलाल रंगि डारी॥
लै गागरि घर सों जो चली, भरने जमुना जल झारी।
मारी पिचकारी मेरे सर रर ए, मेरी भींजी चूनरि सारी॥
बाट चलत घूँघट पट खोलत, मेरी और कंचुकी फारी।
मलत गुलाल लाल मुख ए, मैं तो रही सकुच की मारी॥

(406) (चाल)

रंग डारौ, न मोपै रंग डारौ, हो नंद जूके लाला।
ए मदन गुपाला, हमारी तेरी ना बनें॥
ए कान्हारे, अबही बिरज में आई, कि होरी मचाई,
घर जानैं न देइ बंसी वाला, ए मदन गुपाला, हमारी तेरी ना बनें॥
ए गूजरि री, छबि तेरी अधिक सुहाई, करै चतुराई
और बोलत बचन रसाला, ए मदन गुपाला, हमारी तेरी ना बनें॥

(407)(चलती)

तुम छके छैल से डोलौ॥
मनमोहन मदमाते छैला, मन आवै सोई बोलौ।
अंत जायके रास रचावौ, हमरी डगरि कबहुँ नहिं आवौ॥
जाय रहौ उनहीं के मोहन, बतियाँ गढ़ि–गढ़ि छोलौ॥
जानी मोहन प्रीति तुम्हारी, कपट गाँठि नहि खोलौ॥
'हरीचन्द्र' मिलिबे के कारन, बतियाँ हंसि हंसि बोलौ॥

(408) (ठड़ऊआ)

बरसानें बनि आयौ रे, मोहन नंदलाल॥
आपुन बैठि कदम तर रे, ग्वाला दिए हैं चढ़ाय।
दौनहिं दौना रहि गये, दधि दियौ है लुटाय॥
उड़त गुलाल लाल ब्रज रे, सब मथुरा लाल।
लाल धार जमुना की, ब्रज रचि दियौ लाल,

ऐसी होरी खेलै साँबरौ, अपनी ससुराल॥
ज्यों मेंहदी के पात नये, रंग रहौ है चुचाय।
उठतौ यौवन आयौ, तिलतिल ठहराय॥
जब सें मुरलिया बाजी रे, मोकों नहिं चैन,
घर अंगना न सुहावै, पल–पल कटै न रैन।
'सूरदास' जस गावै, जा सों रैनि बिहाय॥

(409) (चलती)

चलौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रंगीली होरी॥
निकसीं भवन–भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी॥
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।
फगुआ हमारौ दीजै, हंसि माँगतीं बृज वाला॥
बाजै रबाब भेरी, ढपताल और मृदंगा।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा॥
नंदनंदन श्री गिरधारी, बृषभानु की दुलारी।
'रसखान' खैलैं होरी, चिरजीव रहे यह जोरी॥

(410) (रसिया)

मथुरा की कुंज गलिन में, होरी खेलि रहे नंदलाल॥
पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कृष्ण मुरारी,
उत्तर दक्खिन गोपी–ग्वाल॥
उन भरि पिचकारी मारी, नई सारी सुघर बिगारी,
मुख मलि दियौ अबीर गुलाल॥
नये रंग के हौद भराये, छकरन में अबीर लदाये,
यहाँ मचों नवेलौ फाग॥

(411) (चलती)

आजु मची श्याम रंग होरी,

संग नवल राधिका गोरी॥
करन कनक पिचकारिन भरत आवै,
धावत आवत रंग डारत सबन पर।
अबीर गुलाल मुख मलत चलत,
ऐसी चपल चाल चित चोरी॥
'कृष्णानंद' हरखि निरखि सुर नर नाग,
अमर सिहात लखि गोपिन कौ अनुराग।
सुरपति सारदा सराहत सुहाग भाग,
यह ब्रज सुबस बसौरी॥

(412) (काफी)

रंग हो हो, हो हो, हो होरियाँ॥
इत बने नवल किशोर ललन पिय, उत बनीं नवल किसोरियाँ॥
ये नव नील जलद तन सुन्दर, वे श्यामल मृदु गोरियाँ॥
इनकें अरून बसन तन राजत, उनकें पीत पिछौरियाँ॥
राखी हैं करनि दुराय सबै मिलि, केसरि कनक कमोरियाँ॥
छलबल करि दुरि मुख लपिटावत, चंदन बंदन रोरियाँ॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, मधुर मुरलि धुनि घोरियाँ॥
नाचत गावत करत कुलाहल, परम चतुर मृदु गोरियाँ॥
याही रस निवसौ निसि वासर, बँधी हैं प्रेम की डोरियाँ॥
'माधुरी' के प्रभु सुख के कारण, प्रगटी हैं भूतल जोरियाँ॥

(413)

कहां जाय रे रसिया नैना लगाय॥
तेरे काजै बन बन भटकी, चील भई मँडराउँ॥
तेरे काजै बागें भटकी, बागें तमासें आउँ॥
तेरे काजैं जोगिन है गई, अंग भभूत रमाउँ॥

(414)

हो मदमाते छयलवा नैंना उनींदे तेरे॥
अंत जायके फाग मचायौ, कबहुँ न आयौ घर मेरे॥
अंजन रेख खची अधरन पर, लाल कपोल भये रे॥
जाहु चले जहँ रैन बिताई, क्यों मो सों रार करै रे॥

(415)

बिरहा के दरद ने मारी, बाई जू जाकी नवज दिखाउ॥
ऊँची अटारी ईंट की रे, तापर चढ़ौ न जाय।
वा निरमोहिया सों यों जाइ कहियो, गोद धरै लै जाय॥
आधी राति पहर को तरकौ, सोवै सब संसार।
विरहा की मारी जागती, जाकी पतरी कमर बल खाय॥

(416) (चाल)

लगत लिलार जा बेंदी बिन सूनौ मेरौ॥
घर मैंने झारौ अंगना बुहारौ,
सैयाँ की सेज मैंने डारी फटकारि॥
सासु मैंने पूँछी ननद मैंने पूँछी,
सैयाँ सों पूँछौ मैंने छाती सों लगाय॥

(417)

हमारी हो देखति ननद जिठानी।
तुम महाराजा रंग के रसीले, हमहूँ नारि सयानी।
बरजोरी जिनि करौ, सूधैं होरी खेलौ, हम हैं नारि बिरानी॥
एक तौ तकत दूजै निरखत हौ, तीजै मृदु मुसकानी।
औरन पै रंग डारौ वसन पै,हम पै डारत पानी॥

(418) (चाल)

सैया मेरे तुम जिनि अबहिं मरोरै, अबें नादान रे सैंयाँ॥
बारह बरस की हम भई सजनी, तेरह बरस सैंयाँ।
लै डोरा जब नापन लागे, बलम भये करिहइयाँ॥
आवन दें और जान दै रे बारी, बड़ी होन दै मोय।
मुख पर फूलै केतकी, अरू छतियन लाल अनार॥

(419) (चाल)

सैया मेरे बाँधों लाल गिलोलि, सुअना बालि लै लै जाय॥
चन्द्र पुरूष हम खेती कीन्ही वारी, सूरज पुरुष खरिहान।
दोऊ जुबना के बैल बनाओं, सैंया को करौंगी किसान॥
नीम के नीचें चौंतरा री वारी, ता पै बैठौ सुअना।
जो जा सुअनें मारिहैं रे, ता पै मरौगी जहर बिस खाय॥
हरे पंख कौ हरियला रे, सौ सौ फेरी देइ।
सुअना बैठौ डार पै रे, कली कली रस लेइ॥

(420) (चाल)

कहूँ जोगीरा है गये, मोरे बालमा॥
जोगीरा की हेरा फेरी, मोहि नीकी लागै रे।
नित उठि आवै जोगी, मोरे आँगना॥
तेरी तौ मढ़ैया जोगी, देऊँगी छवाय रे।
तोहि तौ बनाऊँगी, गरे कौ ढोलना॥

(421) (चाल)

मतवारों ने घेरि लई, पिला के प्यालियाँ॥
कच्ची कली मति टोरौ, झुकें उसकी डालियाँ।
उसके सीने पै डारौगे हाथ, देयगी वो गालियाँ॥
गंग जमुन के बीच, बसें कलवारियाँ।
उनके सैंया चले पदरेस, झुकी उनकी डालियाँ॥

(422)

आयौ मेरौ बाल सनेही नहिं आयौ रे॥
बैठी कामिनि मांग सम्हारै, मलि मलि अतर लगायौ रे॥
करि सिंगार चतुर अलबेली, अँखियन कजरा लगायौ रे॥
चुनि चुनि कलियन सेज बिछाई, जागत अँखियाँ सुजायौ रे॥
सुअना हाथ हम पाती भेजी, नित उठि काग उड़ायौ रे॥
फागुन भरि सब मौज करति हैं, हमको जोग पठायौ रे॥

(423)

घुँघरू हो प्यार के मारे बजत म्हारे घुँघरू॥
घुँघरू घुँघरू मति कहौ री वारी, घुँघरू जहानाबाद।
पहरनवारी बारी आगरें री, बाकौ छैल फिरोजाबाद॥
गाड़ीवान के छोहरा रे वारी, बायों बैलि मरोरि।
गोरी की नाजुक देह है रे, वाकी कमर लचक बल दे॥
सिकली गर के छोहरा रे वारी, लाख रूपैया लेउ॥
गोरी चली घर आपने वारी, नैंन सिकिल कर देउ।
ए सुनरा के छोहरा रे बारी, जो माँगै सो देउ॥
गोरीकों गढ़ि दै हारवा रे बाकौ, छैल बलैयाँ लेइ॥

(424) (रसिया)

देखौ री गोरी होरी को खिलैया॥
मैं दधि बेचन जाति वृन्दावन, रंग डारी चूनरि कन्हैया॥
'राम प्रताप' ढीठ नहिं मानत, हंसि मन करत ढिठैया॥

(425)

पौरि वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री॥
उड़त गुलाल लाल भए बादर,
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिन दमकै री॥
खेलत हैं दामिनि घन सुन्दर,

कृष्ण रसिक संग री।
‘दया सखी’ फागुन के दिननि में,
सावन सरसै री॥

(426)

मैं जाइ खेलौंगी हो होरी फगुआ, मैं जाइ खेलौंगी होरी रे॥
केसरि घोरूँ मैं रंग बनाऊँ, मेरे हाथ कटोरी रे।
अपने पिया की मैं पगिया छिरकूँ, सैंया ने अँगिया बोरी रे॥

(427) (चाल)

कौन सौं लगाये नैना॥
एकन सें गोरी मुख हू न बोलें, एकनि दै गई सैना॥
बहुतन सौं गोरी हंसि हंसि बोलें, एकन बिन बेचैना॥
कहत ‘कबीर’ सुनो भाई साधो, हरिचरनन चित दैना॥

(428)

ए महादेव ए भोला, सदाशिव ए भोला,
बंगला छबाय देउँ पाननि कौ॥
आक धतुरे के बाग लगाये,
लक्ष लुटाय कियौ घर चौरा॥
सेरूक भांग बिखेरि दई है,
झींकत जात बटोरत ए गौरा॥
हों हंसि कें एक बात कही है,
डौरू कों डारि कितै गयौ ए भोला॥

(429) (काफी)

एक दिन राम आप बतरामें, कैसे भव कौ भार हटामें॥
जब से सीय ब्याह कैं आए, नित नये ध्यान उर आमें।
हमने जन्म लियो धरनीतल, संतन कष्ट मिटामें॥

दिन नहीं चैन रात नही निंदिया, कैसे धीरज लामें।
इतने मैं ब्रम्हा जी आए, क्षण में शोक नसामें॥
हम जानी तुम अन्तरयामी, चाहत सब सुख पामें।
चिन्ता एक लगी है उर में, कैसे भेद जतामें॥
जग के कर्ता राह बतामैं, हम हौनी भिजवामैं॥
जाही सौ सब काज सरैगो, जग में कीरत छामें॥

(430) (काफी)

नटवर गोपिन नाच नचावे, गलियन बीच घुमावै॥
हरि कौ ऊधम लखि बृजबाला, जसुदा कों गुहरावै।
तैरौ लाला अजब रसाला, माला चीर चुरावै॥
आज सिदौसी हों उठि बैठी, दधि माखन बगरावै।
मैं कछु कही खाट सें बांध्यौ, नित नये जादू ढावै॥
घर में जावे माखन खावै, संग में ग्वालन लावै॥
पर घर जावै रार मचावे, नाक चना बिनवावै॥
रोज उल्हैने सुनि जसुदा जी, ऊखल से बंधवावै।
सत्ता नारायन की देखी, रस्सी हू घटि जावै॥

(431) (काफी)

माई लखि न परै यदुराई, सोवत सों जगि आई॥
गोकुल ढूँढ़ौ मधुवन ढूँढौ, चहुँ दिसि हम फिरि आई।
पतौ न पामैं नंद नदन कौ, हम पर रंग कन्हाई॥
नाच तमाशे सब तज दीने, उनसें ही डोर लगाई।
जल्दी आओ रूप दिखाऔ, उर अन्तर धुँधिआई॥
तेरी छवि पर हम सब मोही, हटत न नैन समाई।
इतने हू पर पीर न आवे, काहे बनत कसाई॥
टेर सुनी अन्तरयामी नें, तुरतई बँसुरी बजाई।
धन्य जसोदा तेरे कान्ह कों, क्षण में शोक मिटाई॥

(432) (काफी)

केशव काहे कौं, तरसावै, हमें खान पान न सुहावै॥
कुआंर मास की पुरनिमां कों, लीला रास रचावै।
बंसी घोर सुनाई सबन कों, आधी रात बुलावै॥
व्रिन्दावन तेरी पुण्य भूमि की, महिमा को कहि पावै।
रास रचौ जमुना के तट पर, गोपिन संग नवाचै॥
बीच रास के हरि उठ धाए, गोपिन कौ समुझावै।
तुम जइओ सब अपने घरन कौं, नाहक कल लग जावै॥
सुनि बिछुरन हरि के समीप सौं, गोपी रूदन मचावै।
लीलाधारी युक्ति विचारी, राह चलत छुपि जावै॥
लखि यह दृश्य सभी पछतामैं, का मुंह लै घर जावै।
आरतवानी सुनि गोपिन की, आइ के प्रीति दिखावैं॥

(433) (तीन ताल)

मेरौ मन नंदलाल सों अटकौ॥
बौरानी सी फिरति कुंजनि में, सुधि नाहिं घूँघट पट कौ॥
मन हरि लियौ नंद कौ ढोटा, मोर मुकुट को लटकौ॥

(434)

साँवलिया मेरौ मीत रे साँवलिया॥
बलम चले पदरेस कों रे, ऊँची अटरिया छवाय।
सुरजी कातै सूतनें, जाकौ निरबेरत दिन जाय॥
चंदन डार लहालही रे, वा पै सुअना लखाय।
पंख पसारै उड़न कों रे, यह रस भीनें रहि जाय॥
कोठे ऊपर कोठरी रे, वामें कारौ नाग।
काटत हू सौं बचि गई रे, काऊ रसिया के भाग॥
सजन सकारें जायेंगे, नैन मरेंगे रोय।
विधना ऐसी कीजियो, भोर कबहुं ना होय॥

(435) (तीन ताल)

कहुं छिपि गये आजु कन्हाई॥
जाऊ घर ढूँढ़ौ बाऊ घर ढूँढ़ौ, गोकुल ढूँढ़ि वृन्दावन ढूँढ़ौ।
आस पास के नरवा ढूँढ़े, जमुना लों फिरि आई॥
जसुदा पूँछि नंद जू पूँछे, गैल चलत की ग्वालिन पूँछी।
पेड़न के पंछी सब पूँछे, पतौ न उन जदुराई॥
फागुन ने अनुराग जमायौ, गोपी ग्वालन फाग समायौ।
भोजन पान सबई बिसरायौ, उन ही तें डोर लगाई॥
देवी देवता सबई मनाये, घर घर में हम अलख जगाये।
जसुदा जू सों करें निहोरे, हम पर होहु सहाई॥

(436) (तीन ताल)

हेली मोहि मोहन मीत मिलाय॥
अलबसिया रसिया अति सुन्दर, राखौ कंठ लगाय॥
ब्रज–रसिया उर अन्तर बसिया, वा बिन रहो न जाय।
'नागरीदास' छैल सुखमा कौ, जागी रैन बिहाय॥

(437) (लेद)

ए हो कान्हा हम जानी॥
नेह तो तुम्हरौ लग्यौ उनहीं सौं, हमसौं करत सयानी।
जा दिन तें यह रास रच्यौ है, ता दिन तैं पहिचानी॥

(438)(रसिया)

गिरधारी पिचकारी मोरें क्यों मारी रे, निपट अनारी मोरी आँखिन में॥
बरजि जसोदा अपने लाल कों, क्यों नहि राखति आँखिन में॥
चोवा चंदन अतर अरगजा, अबीर भरें दोऊ काँखनि में॥
'चन्द्रसखी' भजु बालकष्ण छवि, लखि लीनौ मैंने लाखन में॥

(439)

जो तुम मथुरा जाउ, श्याम कल कैसे आवै॥
हमसें तुमने नेह बढ़ायौ, बीच नेह काहे जावै॥
मातु जसोदा नें तुम पाले, उनकौ दूध लजावै॥
सब बौरी भई तुम्हरे बिरह में, कैसे धीरज लावै॥
वचन देउ तौ घर कों लौटें, नंद की सोंह खवावै॥

(440) (चाल)

अब रितु आयौ फागुन कौ, मै तो खेलौंगी पिय संग फाग॥
खेलौंगी आपु खिलाऔंगी लाल कों, भरि भरि मूठ गुलाल॥
संग की सहेलीं मोसों रूसी रूसी डोलै, मोहि भरोसौ गुपाल॥

(441) (रसिया)

मैया कैसे लावें धीर, प्राण दरशन कों भटकि रहे॥
ढेर दिना उनकों गये बीते, खबरि कछू ना पाये।
हमरे मन में ऐसी भ्यासी, वे कहुँ विलमि रहे॥
जसुदा के घर भये इक ठौरे, सब मिलि कहन लगे।
हरि दरशन बिन कल न परति है, सुधि बुधि खोय रहे॥
सोच यही है चलत चलत लों, सबकों वचन दये।
हाथ जोरि उन चरननि लोटे, तौ हू न संग लये॥
एक सखी मथुरा तें आई, बाने भेद दये।
कान्हा तो कुबजा सों रीझे, क्यों सिर पटकि रहे॥

(442) (चलती)

मोहन रोवत राति बितामें, कब आओगे हमरे देस॥
आस दई परतीति जमाई, घटौ कछुक अंदेस।
अवधि बढ़े हू पै ना लौटे, झेले कठिन कलेस॥
मन में मोहन तन में मोहन, मोहन संग प्रदेस।

वे दिन भूलि गये का मोहन, रातिन कियौ प्रवेस॥
खबरि मिली तुमरौ कुबजा संग, बाढ़्यौ प्रेम विसेस।
तुम्हरी करनी कौने बरनी, रीझे कुबरी भेस॥
विनय हमारी सुनौ मुरारी, अन्तिम मूक संदेस।
इतने हू पर जो ना आये, रंगें गेरूआ केस॥

(443) (चलती)

बाबा मोहन सों करि प्रीति, हमारे मान गये मारे॥
गुन गाये दघि दूध लुटाये, आसा पर वारे।
कौन सी चूक परी मेरे मोहन,ध्यान कछू धारे॥
अरज करी उन पाँयन परि परि, लिखित पत्र डारे।
बहुत करी तब उधौ भेजे, घाउ नौन डारे॥
सबरी आसा भई निरासा, विलपत दिन सारे।
मन हमरे ऐसी आवति है, हौमें प्रान सकारे॥
गोपिन की सुनि आरत बानी, जसुदा उच्चारे।
ऐसें कबलों बखत गुजारौं, धावौं मथुरा द्वारे॥

(444) (चलती)

ऊधों कैसे साधें जोग, मनोहर हत्थी ठोकि गये॥
बारह बरस गोकुल संग खेले, सुख सों बीति गये।
कछु कुचालि हरि में भरि आये, तासों विलमि रहे॥
चलत चलत नों धीर बँधाये, पुनि विश्वास दये।
तीन कोस पै ऐसे विलमे, सब कछु भूलि गये॥
हम ढिंग आवें बात बतावें, मन परतीति जगे।
रोवत रोवत नैन सूजि रहे, पिंजर सूखि गये॥
गोकुल आवें मन भरि जावें, हम उन प्रेम पगे।
बातनि में भरमायौ चाहें, तौ ये प्राण गये॥

(445) (रसिया)

जाकी अंगिया बार बार फरकै॥
कुच फरकैं बाकी बाँयी भुज फरकै, सिर की चूनरि सरकै॥
पिय परदेस मास फागुन कौ, सोचत आँसू ढरकै॥
'परमानंद' आस पूरन भई, पिय पाये भुज भरिकै॥

(446) (रसिया)

रस लै रे रसिया फाग कौ॥
लोग चबाउ करें घर घर में, मेरी तेरी लाग कौ॥
अबकी समुझि परैगी नंद के, बिन होरी अनुराग कौ॥
आजु फाग बलिहार बिहारी, मानो भाग सुहाग कौ॥

(447) (रसिया)

रसिया कों नारि बनाओं री॥
कटि लँहगा गल माँहि कंचुकी, सिर सों चुनरि उढ़ाऔ री॥
हाथन मेंहदी पाँव महावर, नकबेसरि पहनाऔ री॥
'नारायण प्रभु' तारी बजाय कें, जसुमति निकट नचाऔ री॥

(448) (रसिया)

म्हारौ रसिया बालम होरी रे॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और नगारे की जोरी रे॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भरि भरि झोरी रे॥
'चन्द्रसखी' भजि बालकृष्ण छवि, चिरजीवौ यह जोरी रे॥

(449) (रसिया)

लाल तोहि तौ बुलाय गई नथबारी,
वाकौ ऊँचौं अटा खिरकी न्यारी॥
अतलस कौं लहँगौ भल सोहै, ता पर सुरख रंगी सारी॥
पाँयन पायल छमछम बाजै, सीस धरैं गगरी भारी॥

चितैं चटक नैना चमकावति, होड़ करत बिजुली हारी॥
जल भरि जाति भवन अपने कों, टेरि गई तोहि गिरधारी॥
तरे अनेक चरन गहि तेरे, अब हरिजन की है बारी॥

(450) (रसिया)

मेरे सिर पर गागरि भारी रे, उचाय दै गिरधारी॥
तुम तौ ढौठा कान्हा नन्द बाबा के, हम वृषभानु दुलारी॥
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर सारी॥

(451) (रसिया)

ढफ बाजै मेरो यार निकट आयौ॥
सुमन सखी मेरो नाम सुमिर कैं, मधुरे सुर गारी गायौ॥
मेरे घर के द्वार खड़े हैं, अबीर गुलाल मारग छायौ॥
'हरीचंद' अब घर न रहौंगी, मिलि करिहौं पिय मन भायौ॥

(452) (रसिया)

मैं तो चौंकि उठी ढप बाजन सों॥
सोबति ही सुख सेज अटरियाँ, जागी गारी गाजन सों॥
'हरीचंद' पिय भोरहिं होरी, खेलन आयौ साजनि सों॥

(453) (रसिया)

तेरी बेसरि कौ मोती थहरै॥
या लटकन में मेरौ मन लटकै, धीरज नहिं ठहरै॥
'हरीचंद' तेरी सुर्ख लहरिया, देखत मेरौ मन लहरै॥

(454) (रसिया)

कबसे तुम छैल बने रसिया॥
बन बन धेनु चरावत डोलत, हाथ लकुट अरू कटि कछिया॥
गुलबैगी कोऊ गाल गुलगुले, लाल लाल अरू किसमिसिया॥

(455) (रसिया)

बाट चलत मसकै मेरौ पांव, जाकौ कैसौ स्वभाव॥
ग्वाल बाल लै मेरे घर आवै, मेरे ही अंगना धूम मचावै।
घुसि करै शोर, और तोरै किवार॥
पनघट पै कोई जान न पावै, घट तोरै और कंठ लगावै।
लपिटत आवै गरै कैसौ हार॥
निशि दिन करत बात चोरी की, जानत नाहिं रीति होरी की।
आखिर तौ गौअन कौ ग्वाल॥
'सालिगराम' तनिक हंसि बोलै, गुप्त गाँठि हृदय की खोलै।
यह राधे तेरौ रिझवार॥

(456) (रसिया)

मदमातौ रे करत मोसों बरजोरी॥
झूमि झूमि करतलहिं बजावत, आवत छैल गैल मोरी॥
'राम प्रताप' पकरि बहियां मेरें, घूँघट खोलि मलै रोरी॥

(457) (रसिया)

छाँड़ौ छाँड़ौ श्याम मेरी बहियाँ, मैं परति तिहारे पैयाँ॥
तुम चंचल चपल गिरधारी, ब्रज रसिया अजब खिलाड़ी,
हम अबला निपट अनारी, मेरी बारी उमरि लरिकैयाँ॥
मुसिक्याय प्रेम बस कीन्हों, मेरी नस नस को रस लीन्हों,
पर हित बस गोरस छीनौ, सखी या ब्रज में नहि जैयाँ॥
मेरी तासे की अँगिया फारी, सारी सब टूक टूक करि डारी,
कहाँ आनि फँसी दई मारी, यही बार बार पछितैयाँ॥

(458) (रसिया)

मत डारौ लाल गुलाल, मत डारौ॥
बरजोरी न करौ ब्रज रसिया, खेंचौ न चीर हमारौ॥

बरजोरी करत मुरकि जाय बहियां, टूटि जाय खँगवारौ॥
'रामसखे' की यही वीनती, घूँघट पट न उघारौ॥

(459) (रसिया)

हरि लियें रे लकुट खेलैं होरी॥
पहली होरी अबध में खेली, जहाँ सीता राम बनी जोड़ी॥
दूसरी होरी गयाजी में खेली, जहां गजा गजाधर की जोड़ी॥
तीसरी होरी प्रयाग में खेली, जहां बैनीमाधौ की जोड़ी॥
चौथी होरी वृन्दावन खेली, जहाँ राधाकृष्ण बनी जोड़ी॥

(460) (रसिया)

मेरी अँखियन बीच गुलाल, डारिबो,कौनें सिखायौ री॥
कसकत है नैनन की कोरन, निकसत नाहिं निकारौ री॥
घूँघट के पट खोल न पाई, बानें आन झुकायौ री॥
जो डर डरपत "हीरासखी" री, सोई आगे आयौरी॥

(461) (रसिया)

छैला के हाथ अबीर, मेरो मुंह मलदीनों ननदी॥
बरज रही बरजो नहिं मानत, आखिर जात अहीर॥
"ललित किशोरी" निपट हठीलौ, ऐसे भयौ बेपीर॥

(462)(रसिया)

बृज गैलन नेंक चलो गोरी॥
तू री अजान भेद नहिं जानत, करत कान्ह यहाँ चित चोरी॥
'रामप्रताप' न निबहत मग कोऊ, निपट कठिन खेलत होरी॥

(463) (रसिया)

भैय्या मिलि तौ लै गरे सों नेंक आजु, परब आयौ होरी कौ।
सालिगराम की बटियन में, कहु कौन बड़ी है को छोटी।
जो बड़ छोट की बात करै, ताकी मति मोहि लगै खोटी॥
समता बिनु राखें, रहि जैहै कहाँ समाज॥

परब आयौ होरी कौ॥
धन–जन–कुल–पद काया के मद, छनभंगुर हैं कोरे हैं।
जो भकुआ इन भरम भुलाने, बड़े भाव के भोरे हैं।
इन कागज की नइयनु तें, सरिहै कहा काजु॥
परब आयौ होरी कौ॥
सात सुरन की सरगम में, कहु को सुर ऊँचौं को नीचौ।
जो सुर जब सम पे चढ़ि बोल्यौ, ताने प्रान सदा सींचौ।
सातौ सुर साधें ही, बजिहैं मधुरै साज॥
परब आयौ होरी कौ॥

(464) (ठड़उआ)

सब कारे अजमाए, उधौ सब कारे॥
कोयल के सुत कागा पाले, हंसि हंसि कंठ लगाए।
बड़े भए जब उड़ने लागे, कुल अपने कों धाए॥
कारे कारे विषधर कहिए, काचे दूध पिआए।
कुंज गलिन में राधा डसि लईं, नेकु तरस नहिं खाये॥
कारे कारे भौंरा कहिए, कली कली फिरि आए॥
टूटी कली गिरी धरती पै, फेरि बाग नहिं आऐ॥
कारे कारे मेघा कहिये, सावन भादों छाए॥
कारे बलम हमारे कहिये, फेरि सेज नहिं आए॥

(465)(रसिया)

जब तें धोकौ दैकें गयौ, काऊ के संग नाहिं खेली होरी॥
परसों की कहि गए, मानि गई मैं कैसी भोरी।
बीतो सिगरो बरस, चुनरिया रहि गई है कोरी॥
ऊधौजी तुम जाउ द्वारिका, लै पाती मोरी।
लइयो बेगि लिवाय, उमरिया रहि गई अब थोरी॥
हम दैंइगीं प्राण गमाय, गात की है जाइगी होरी।

कहियो यों समझाय, दरस बिनु तरसै बृज गोरी॥
बृजबाला दईं हैं त्याग, प्रीत याने कुबजा सों जोरी।
कहैं कवि "घासीराम", सदा यह बनी रहै जोरी॥

(466) (ठड़उआ)

हरदौल कला तेरी जागि अरे॥
घोड़ा मारि तिलंगा मारे, और मारे चपरासिय रे॥
कौने तेरो मठ बनवाऔ, कौने तेरो मठ नहिं रे,
और कौने कलंगी फेरी रे॥
राजा तेरौ मठ बनवाऔ, राजा तेरौ मठ नहिं रे,
और रानी कलंगी फेरी रे,
कौन की लाल कनात लगी है, कौन की लाल कनात न रे,
और कौनें तम्बू ताने रे,
रानी की लाल कनात लगी है, रानी की लाल कनात न रे,
और राजा तम्बू तानै रै॥

(467) (रसिया)

सांची मानि सहेलिनि परसों, बलमा लैवे आवैगौ॥
पूरी और कचौरी करिलै, तोसा बाँधि गैल कों धरिलै।
हाल हि हाल बिदा की बिरियां, को पकवान बनावैगौ॥
घाट दुपट्टा चोली रंगिलै, बड़े भ्रात सों साड़ी मंगाइलै।
रंगबिरंगे साज सजाइलै, पार परोसिन सबहि मिलाइलै॥
हाल हि हाल बिदा की बिरियां, कौन बाजारें जावेगौ॥

(468) (रसिया)

कौनें बदी ऐसी होरी रे छैला॥
ज्ञान के रंग में ध्यान की केसरि, हित के हाथन घोरी रे छैला॥

पंचरंगी चुनरि इकरंगी करिकें, कीन्हीं रंगनि सराबोरी रे छैला॥
'जानकी दास' हा हा करि हारी, तौ हू रसिक नहिं छोरी रे छैला॥

(469) (काफी)

दीजै मनुआँ लगाय, साँवरे सों यारी कीजै॥
वाकौ नाम अधम उद्धारन, गावत मुनि समुदाय॥
भवसागर सों तरन जो चाहौ, वाकौ यही उपाय॥
'जानकीदास' अभय सुख ह्वै है, दीन्हों गुरू ने बताय॥

(470) (रसिया)

ब्रज की तोहि लाज मुकट वारे, ब्रज की तोहि॥
चन्द्र–सूरज तेरो ध्यान धरत हैं, धरत ध्यान नवलख तारे॥
इन्दर कोप कियो जब ब्रज पै, तब गिरवर नख पै धारे॥
"पुरूषोत्तम" प्रभु की छवि निरखत, गाइ गोप के रखवारे॥

(471) (रसिया)

होरी आई रे नन्द के घर भैया॥
कैसी गोरी कैसो रसिया, कैसो पलंग कैसो तकिया॥
सांवली गोरी गोरो रसिया, लाल पलंग पचरंग तकिया॥
रूठि गई गोरी रूठि गयो रसिया, रोवे पलंग सिसकै तकिया॥
मानि गई गोरी मानि गयो रसिया, हाँसे पलंग खिलकै तकिया॥

(472) (रसिया)

गोरी लागोरी करजिवा नजर भाला॥
सांवली सूरत बैन रसीले, भोरी नजर जादू डाला॥
"रामप्रताप" चलत मग झूमत, योवन तेरो मतवाला॥

(473) (रसिया)

हो होरी आई, मोहन पर रंग डारो॥
केसर घोरौ लै जाय बोरो, कहूँ न रहै रंग कारो॥
ढूँढ़त ग्वाल गोपालहिं डोलत, कित गयो नन्द दुलारो॥
जा मोहन अपने के ऊपर, लै लै सरबस बारो॥
फगुआ लेउ मँगाइ श्याम सों, राधे के पाँयन पारो॥
आँखि आज मुँख माड़ौ रोरी, याके गालों पर गुलचा मारो॥
तब छाँडो़ कहै अपने री मुँख सों, हा हा हा हौं हारो॥
जन गोविन्द बलवीर बिहारी कों, नेक न उर सों टारो॥

(474) (रसिया)

लयोरी मेरो जियरा रसिया ने।
मैं जल भरन यमुना पर, रसिया ने रोको पनघटवा॥
"रामप्रताप" पकरि बहियां मोरी, रसिया ने बिगारो मेरो जुवनवा॥

(475) (रसिया)

पीरी परि गई रसिया के बोलन सों॥
याद परीं सब रसकी बतियाँ, बढ़ि गयो विरह ठठोलन सों॥
चलि न सकी जाकी रही ठौर ही, डोली नैक न डोलन सों॥
"हरीचन्द्र" सुधि परी फेरि पिय, प्यारी के घूँघट खोलन सों॥

(476) (रसिया)

हम चाकर राधारानी के॥
श्री नंदनंदन ठाकुर के, वृषभानु लली ठकुरानी के॥
निरभय रहत बदत नाहीं काहू, उर नहिं डरत भवानी के॥
"हरीचन्द्र" नित रहत दिवाने, सूरत अजब निवानी के॥

(477) (रसिया)

मैं तो उनहीं कों रंग भिजोऊँगी, जिन मोरी अंगिया दई भिजोइ॥

संग की सखी सखा सब संग लै, मैं तो कुँज गलिन कों जाऊँगी॥
गारी दूँगी और रार भी करूँगी, मैं तो राधा कन्हैया बनाउँगी॥
बदला लूँ तो अबीर उड़ाऊँ, जद अचपत होरी गाउँगी॥

(478) (रसिया)

चलौ अइयो रे श्याम मोरी पलकन पै॥
तू तो रीझो मेरे नवल जोवना, मैं रीझी तेरी चितवन पै॥
तू तो रीझो मोरी लटक चाल पै, मैं रीझी तेरी अलकन पै॥
"पुरषोत्तम" प्रभु की छवि निरखै, अबीर गुलाल की झलकन पै॥

(479) (रसिया)

गलियन बीच धूम मचावे री॥
ग्वाल बाल संग लिये कन्हैया, नित उठि भोरहिं आवै री॥
हाथ अबीर गुलाल फेंट में, गगरिन रँग ढ़रकावै री।
वंशी बीन डफ साज बजावै, दै दै तारी गावै री॥
सुनि सुनि ऊधम अतिहिं रसिक कौ, जियरा अति डरपावै री॥

(480) (रसिया)

ब्रज मंडल देस दिखाओ रसिया॥
तेरे ब्रज में गौउयें बहुत हैं, पी पी दूध भई पठियाँ॥
तेरे ब्रज में मोर बहुत हैं, कूकत मोर फटें छतियाँ॥
तेरे ब्रज में ज्वार बाजरा, हरी हरी मूँग उड़द कचियाँ॥

(481) (रसिया)

गोरी कौन रसिक संग रात बसी॥
भरी खुमारी नैन खुलत नहिं, सिर सों सारी जात खसी॥
बैनी सिथिल खसित तेरे भाल तें, चलत डगमगी अधिक लसी॥
पिय संग निसि जागी, चोली ढीली भई कसी॥

(482) (रसिया)

मैं तो मलौंगी गुलाल तेरे गालन मैं॥
मलि गुलाल आँखे आँजोंगी, चोटी गुहोंगी बालन में॥
आज कसक सब दिन की निकसैं, बेंदी दे तेरे भालन में॥
"हरीचन्द्र" तोहि पकरि नचाऊँ, मीर बनूँ ब्रज बालन में॥

(483) (रसिया)

मोहि दै दै दान घूँघट बारी॥
कुँज बिहारी तो ढिंग ठाडौ़, छाँड़ि लाजि कामिन प्यारी॥
घूँघट खोलि गुलाल मलन दै, मुँख चूमन दे री प्यारी॥
"चन्द्रसखी" भजु बालकृष्ण छबि, रसिक शिरोमणि गिरधारी॥

(484) (रसिया)

तोकों डारौंगी कमद, चढ़ि आउ रसिया॥
मेरे घर की गैल कठिन है, पाछे से चढ़ि आउ रसिया॥
माधो पिया मैं तेरी बलिहारी, मुरली की टेर सुनाउ रसिया॥

(485)

भजु रे मन सिया रघुनन्दन कों॥
विश्वामित्र को यज्ञ सफल कियो, कठिन धनुष के भंजन कों॥
जामवंत सुग्रीव नील नल, कपिदल पार उतारन कों॥
दशरथनन्दन आनद कंदन, काटत जम के फंदन कों॥

(486)

गोरी चूनरि कुसुम रंगाइलै री॥
यह बसन्त जोवन मदमातौ, नेह सुरंग बरसाइ लै री॥
जोवन जाय बहुरि नहिं ऐ हैं, फगुआ खेल खिलाइ लै री॥
लागहु मान कान होइ प्रमुदित, जोवन सुख उपजाय लै री॥
मिलिहैं बहुरि नेम सौं रसिया, जिय की हवस मिटाइ लै री॥

(487) (ढड़उआ)

अरे हाँ यार, जाइ लै दै झमियाँ।
जाइ लै दै झमियाँ, झमियन पै मन लागि रहौ॥
अरे हाँ यार, जाकी गोरी गोरी बहियाँ।
जाकी गोरी गोरी बहियाँ, हरी हरी चुड़ियाँ,
आगे अँगुरियाँ, पाछें पछिलियाँ,
बीच बँगलियाँ, दसौ अगुरियाँ,
मुदरी सोहे, बाजूबंद गाढ़े॥
अरे हाँ यार, अतलस कौं लहँगा।
अतलस कौ लहँगा, घूम घुमारौ,
लागी किनारी, ऊपर सारी,
दस गज कौ, डंडिया॥
जाइ यार बुलावै, का फरमावै, अरे हाँ यार जाइ यार बुलावै
पान खबावै, पीक डरावै, लौंगन को हरवा॥
जाय बाग तमासें, जाय बाग तमासें सोरह निब्बू,
परसै शिम्भू, और कदम छइयाँ॥

(488)

अरे छम–छम–छम पगु धारै, जोवन की माती।
करि सिंगार महल चढ़ि बैठी, सैनन यार बुलावै।
सैन दएं रसिया नहिं आवै, पकरि बांह लै जावै॥
पकरि बांह मढ़हा में ले गई, नौ रंग पलंग बिछावै।
नौ रंग पलंग सेज फुलवन की, हंसि हंसि कंठ लगावै॥

(489)

बाजि रही पैजनियाँ, छम–छम बाजि रही॥
कौने बनाइ दई पाँव पैंजनियाँ, कौने बनाई करधनियां।
कौने गढ़ाइ दऔ गरे को हरवा, कौने नाक नथुनियां॥

ससुर बनाइ दई पांय पैजनियाँ, जेठ बनाई करधनियां॥
दिवर गढ़ाइ दऔ गरे को हरवा, सैंया नाक नथुनियाँ॥
कैसे टूटी पांय पैजनियाँ, कैसे टूटी करधनियां।
कैसे टूटो गरे को हरवा, कैसे नाक नथुनियां॥
पांय हले सों पांय पैजनियाँ, कमर हलें करधनियां।
खेलत उड़ि गऔ गरे को हरवा, पोंछत नाक नथुनियां॥

(490) (रसिया)

नैंनिन में पिचकारी दई, मोहि गारी दई, होरी खेली न जाय॥
तेरे लंगर लंगराई मों सों कीन्ही, केसरि कींच कपोलनि दीन्हीं,
ले गुलाल ठाढ़ौ मृदु मुसिकाय॥
नैंक न कानि करत काहू की, आँखि बचावत बलदाऊ की,
पनघट सों घर लों बतराय॥
औचक कुचनि कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस पै डारै,
अंग लपटि हंसि हा हा खाय॥
होरी के दिनन मों सों दूनों दूनों अटकै, 'सालिगराम' कौन जाय हटकै,
यह ऊधम सुनि सासु रिसाय॥

(491) (रसिया)

तेरौ छैला गुपाल, नैननि में तकि मारै गुलाल॥
गोकुल गलियन धूम मचावै, आपु नचै और मोहि नचावै,
तारी बजाय सब आय गये ग्वाल॥
कर सोहै कंचन पिचकारी, भरि भरि सो मेरी छतियन मारी,
देखत है मेरो रूप लुभाय॥
रपटि परी हों केशरि कींचें, बे भये ऊपर हों भयी नीचें,
या ऊधम कौ कौन हवाल॥

(492) (रसिया)

आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया॥
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया॥

कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥
अपने री अपने घर से निकसीं, कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में घोरी रे रसिया॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और नगारे की जोड़ी रे रसिया॥
कै मन लाल गुलाल मँगायो, कै मन केसर घोरी रे रसिया॥
सौ मन लाल गुलाल मँगायो, दस मन केसर घोरी रे रसिया॥
'चन्द्रसखी' भज बालकृष्ण छबि, जुग–जुग जियौ यह जोड़ी रे रसिया॥

(493) (रसिया)

होरी खेलन आयौ श्याम, आज जाहि रंग में बोरौ री।
कोर–कोरे कलस मंगाए, बामें केसर घोरौ री।
रंग–विरंग करौ, याकों, कारे सैं गोरौ री॥
पार परौसिन सब मिलि कें, आंगन में घेरौ री।
राधा जी के करै निहोरे, तब जाय छोड़ौ री॥
हरे बाँस की बांसुरिया, जाहि तोर मरोरौ री।
तारी दै दै जाहि नचावौ, अपनी ओरौ री।
'चन्द्रसखी' की यही बीनती, जब करै निहोरौ री।
हा–हा खाय परै जब पैयाँ, तब जाहि छोरौ री॥

(494) (रसिया)

मृगनैनी तेरौ यार नवल रसिया॥
बड़ी–बड़ी अंखियां नैंनन कजरा, तेरी टेढ़ी चितवन मन बसिया॥
अतलस को याको लहँगा सोहै, झिलमिल सारी मेरे मन बसिया॥
छोटी सी अंगुरिन मुँदरी सोहै, याके बीच आरसी मन बसिया॥
बांह–बरा बाजूबंद सोहै, याके हियरें हार दिपत छतियां॥
रंग महल में सेज बिछाई, याको लाल पलंग पचरंग तकिया॥
'पुरुषोत्तम प्रभु' देख विवस भये, सबै छाँड़ि ब्रज में बसिया॥

(495) (रसिया)

मैं तो सोय रही सपने में, मोपै रंग डारौ नन्दलाल॥
एक दिन श्याम मेरे घर आयो जी,
ग्वाल बाल कोई संग न लायो जी,
पौढ़ि गयौ पलिका पै मेरे संग, टटोरन लागो मेरे अंग,
दई पिचकारी भर–भर रंग।
पिचकारी के लगत ही, मो मन उठी तरंग,
जैसे मिश्री कंद ने, घोरि पिलाइ दई भंग,
घोरि पिलाइ दई भंग, गाल दोऊ कर दिये लाल गुलाल॥
खुले सपने में मेरे भाग, कि मेरी गई तपस्या जाग,
मनाय रही हंसि हंसि फाग सुहाग।
हंसि हंसि फाग मनावती, चरन पलोटत जाँउ,
धन्य धन्य या रैनु कों, फिर ऐसी नहिं पाँउ॥
फिर ऐसी नहिं पाँउ, भई सपने में माला माल॥
इतने में मेरे खुल गये नैंना रे, देखूँ तो कछु लैना न दैना रे,
पड़ी पलिका पै मैं पछितात, कि मीड़त रह गई दौनों हाथ,
कि मन की मन में रह गई बात।
मन की मन में रह गई, है आयौ परभात,
बजो फजर को गजर तो, रहे तीन ढ़ाक के पात,
तीन ढ़ाक के पात, रही कंगालिन की कंगाल॥
होरी को रस रसिक हि जानें रे, रसकौ क्रूर कहा पहिचानें रे,
जो रस देखौ ब्रज के मांहि, सौ रस तीन लोक में नाहि,
देख के ब्रह्मादिक ललचाँय।
ब्रह्मादिक ललचावते धन्य धन्य ब्रज धाम,
गोवरधन दस बिसे में द्विजवर 'घासीराम'
द्विजवर 'घासीराम' सदा वे कहैं रसीले ख्याल॥

(496) (रसिया)

अंग लिपट हंसि हा हा खाय, होरी खेली न जाय॥
भर भर झोर अबीर उड़ावै, केशर कुमकुम मुख लपटावै,
या होरी कौ कहा उपाय॥
कोरे–कोरे माटन केशर घोरी, पचरंग चूनरि रंग में बोरी,
घर जाओं सुन सास रिसाय॥
घूँघट में पिचकारी मारै, सारी चोली, लंहगा फारैं,
मुख सौं आंचल देय हटाय॥
ग्वाल–बाल सखियन ने घेरो, अतर अरगजा नैनन गेरो,
कनक कलस रंग सिरसों च्वाय॥
सखियन पकरे नन्द के लाला, लाली रूप बनायौ बाला,
काजर मिस्सी दई लगाय॥
साड़ी और लंहगा पहरायौ, टिकुली सेंदुर मांग भरायौ,
सीस ओढ़ना दयो उढ़ाय॥
हाथन मेंहदी पांय महावर, बिछुआ पायल पहरें गिरधर,
अदभुत शोभा बरनी न जाय॥
कानन झुमका बालाबारी,नथुनी बलकी बेसर धारी,
सोलह सिंगार दियौ है रचाय॥
जसुदा ढ़िंग लालन घर धाई, देत उरहनौ बहुत खिजाईं,
'अवधबिहारी' मन ललचाय॥

(497) (रसिया)

मति मारै दृगन की चोट, रसिया होरी में,
मेरे लग जायगी॥
अवकी चोट बचाय गई सधिकैं, कर घूँघट की ओट,
भलाजी देखो कर घूँघट की ओट। रसिया०॥
हम तो हैं गोरी लाज लजीली, तुम में हैं बड़े खोट,

भलाजी देखो तुम में हैं बड़े खोट। रसिया०॥
रसिक गोविन्द वहीं जाय खेलौ, जहां मिलै तेरी जोट,
भलाजी देखो मिलै तुम्हारी जोट, रसिया०॥
"चन्द्रसखी" भजु बाल कृष्ण छबि, हरि चरनन की ओट,
भलाजी देखो हरि चरनन की ओट, रसिया०॥

(498) (रसिया)

यमुना तट श्याम खेलत होरी॥
दौरि दौरि पिचकारी चलावत, रंग अबीर भरें झोरी॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़फ, बरसत रंग उड़त रोरी॥
मोर मुकट मकराकृत कुण्डल, सोहत है सुन्दर जोरी॥
हिल मिल फाग परस्पर खेलत, फेंकत है भरि भरि झोरी॥
"सूरदास" प्रभु रसिक सिरोमणि, चितवन श्याम बसी मोरी॥

(499) (रसिया)

होरी आई रे कान्ह ब्रज के बसिया॥
अपने री अपने भवन से निकसीं, कोऊ साँवर कोऊ गोरी।
आइ अचानक कृष्ण मुरारी, पकरी बहियां मोरी,
जाय कहैं हम नन्द बबा सौं, कान्ह करत बरजोरी॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़फ, नाचत छोरा छोरी।
ताता थेई ताता थेई, ता थेई ता थेई थेई,
धाकिट धुमकिट, धमक धमाकट,
कट किट कट किट किटक किटाकिट, किट धा किट धा॥

(500) (रसिया)

चलौ सखी जमुना पै, मची आज होरी,
नन्द के ने घेरि लई, राधा गोरी॥

लियें कर में गुलाल, आयो जसुदा को लाल,
चलै अलबैली चाल, नाचै दै दै के ताल,
मारै पिचकारी, कहै होरी होरी॥
मेरी एक नहीं मानी, गई भरने को पानी,
नन्द के ने आनि, बहियाँ झकझोरी॥

(501) (रसिया)

यशोदा नन्द कौ हमें तो जोगिनियाँ बनाइ गयौ री॥
आप तो ओढ़ें साल दुशाला, हमें तो कामरिया उढ़ाइ गयौ री॥
आप तो खावे मांखन मिसरी, हमें तो उपवासा कराय गयौ री॥
आप तो जाय द्वारिका छाये, हमें तो गोकुल में बसाइ गयौ री॥
आप तो जाय रहे कुबरी संग, हमें तो बिरहिनिया बनाय गयौ री।।

(502) (रसिया)

देखो भींजे न चोली, भिंजोई मोरी सारी रे।
नन्दगांव के ग्वाल कहेंगे, बरसाने की होरी॥
बड़े रसीले सैंया हमारे, सब देखें वह करैं इशारे।
मारे सरम के न बोली, भिंगोई मेरी सारी रे॥
तन नाचै मन नाचै गोरी, आज बनी मेरे मन की होरी।
तन मन सैं मोरे मन के राजा, होरी के दिन खेली होरी॥
सम्हल सम्हल पिचकारी मारो।
केशर रंग में बोरी, भिंजोई मोरी सारी रे॥

(503)

सुनौ अरजी हमारी, नटवर गिरधारी,
तोसौं बिन होरी खेलें न जाउँगी॥
बरस बाद आयो यह फागुन,
अब तो अबीर लगाउँगी,

अब कित जात नन्द के जाये,
मारों भरि पिचकारी, मारों भरि पिचकारी॥
रंग में रगूंगी मैं, संग में नचूंगी मैं,
फाग संग तेरे गाऊँगी।
यह त्यौहार न छोड़ोंगी सूनों,
चाहे दीजै तू गारी, चाहे दीजै तू गारी॥

(504)

तेरौ कैसौ सुभाउ, डगर चलत मोहि छेड़ै॥
कान्ह गलियारे धूम मचावै,
कुअटा पै करै किलोल।
रस्सी टोरै, गागरि फोरै
और ऊपर से झकझोरै॥

(505)

राज रंग में बोरी, यह अंगियां मेरी कसिदना काढ़ि,
राजरंग में बोरी॥
यह अंगियां मेरी माइके सै आई हां....
झुरि झुरि मरै जिठनियां, घर द्वौरनियां जरै सौतिनियां,
राजरंग में बोरी॥

(506)

सुरमानीबलम तोरी आंखरिया, हम पर जादू डार गयौ॥
आप लिये शरबत के प्याले, हां...
हमें पियाइ गयौ भांगड़, भांगड़ भांगड़िया॥

(507)

छैला जाइ सोवन दै जाकी नींद कौने हरी रे॥
निसि अँधियारी कारी कोठरी रे, जा मैं दियऊ न बाती रे।
बहियाँ पकरि जब लै चलौ, कोऊ संग न साथी रे॥

ऊँची अटरियाँ झंझन किवरियां हां...
चन्दन के, चन्दन के लगे किवार॥

(508)

हौं ना गई महाराज–बागैं हौं ना गई॥
निम्बू तोड़ अताफल तोड़े हाँ
नारंगी – नारंगी पै सुरति गई॥

(509)

घर कैसे जाउँ घर कैसे जाउँ वाही कदम तर ठाढौ॥
गारी गावै धूम मचावै हां..
लै लै गावै मेरो नाउँ–मेरो नाउँ॥

(510)

छोटी ननद जगाइ गई मेरी गुईयां, नींदा की मारी सोइ जइयो॥
आधी रात पहर कौ तरकौ हाँ....
पीरो दुपट्टा उड़ाइ गईयां उढ़ाइ गईयां॥

(511)

अब तुम राखौ लाज गिरधारी–गज पै भीरा परी है भारी॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर हां.....
टेर सुनत ही पाइ उघारे आइ गए बनवारी॥

(512)

रस भौंरा बागै मत जाउ–आवै बास मरूअरे की॥
कौन लगाइ दए निम्बू नारंगी हां...
कौने लटकाए अनार–आवै बास मरूअरे की॥

(513)

फुलझरियां राजा बरसै, मेह गोरी भींज गई गलियन में॥
भींजि गई भींजि जान दै हाँ....
जाकौ सलूआ कोऊ लीजो बचाइ – कोऊ लीजो बचाय॥

(514)

मैं कैसे आऊँ रूनुक झुनुक पाइलवा बाजने॥
हौं कैसे आऊँ मितवा मोरे सास ननद की चोरी हां...
झपट घुंघटवा नलवा लागौ रैन रही है थोरी॥

(515)

गोरी हटवस पनियां जाइ यार बरजौ नहिं मानै बालम कौ॥
सिर पर धरि लई ऐंढुरी–गोरी धन–सिर पै धरि लई ऐंढुरी हाँ
बहियां पै धरि लईं लेज–यार बरजौ नहिं मानै बालम कौ॥

(516)

तुम हंसि हंसि जोरी प्रीत यार इन बोलन कौ निर्वाह करौ॥
भले भले सबने अपनाए – दुर्जन कौन सुहाए हां...
कोइल मीठै वचन बोलि कै – जग में नाम करौ॥

(517)

ना पहिचानौ हो बीरा – वीरा तेरौ दुर्बल बहुत सरीरा॥
ना हम देखे सहर अजुध्या – ना सरजू के तीरा हां..
ना हम देखें संग राम के जासों धरती धीरा॥

(518) (लेद)

कन्हैया मेरौ वारौ री वारौ,
काली के फन पै लेत तान, तुम तन मन मेरौ वारौ री वारौ॥
मारौ टोल गैंद गई दह में, अरे हां काली नाथौ छिन में नाथौ छिन में॥

(519) (लेद)

मोहि बरसाने जाना, मेरे यारौ पियरवा रे॥
विन्द्रावन की कुंज गलिन में हां....
भई राधे श्यामा, श्यामा, श्यामा॥

(520) (लेद)

लाड़िले बन को चले गए, कुबरी ने जादू रचौ॥
केकई चाहै राज भरत कौं पिंरजहिं राम रूचै हां....
मात कौशिल्या फिरै हकबकी, दशरथ प्रान तजे॥

(521) (लेद)

मनुआँ समुझि लै रे, तोहि आखिर पार उतरना॥
गहरी नदिया अगम बहति है,
हरि चरनन में चित दैना, चित दैना॥

(522) (लेद)

रघुवीरा बदन दृग देखि कें, छबि थाके हो नैना॥
जे दोऊ कुँवर जनकपुर आए, सखीं कहैं सुन बैना॥
लता ओट जानकी निहारैं, दै अंचल पट सैना॥

(523) (लेद)

क्या ठाड़ौ रहिए रे राजा बाँये, गुरज पर क्या ठाड़ौ
मेरी तोसौं लगन लगी है
उतरि जमीं पै आउ – जमीं पै आउ॥

(524) (लेद)

धन ठाड़ी अपने द्वार पूछै बामना।
आउ मेरे बमना बैठि मेरे अंगना,
मेरे पिय के सगुन बताउ पूछै बामना॥

(525)(लेद)

मैं कुअटा पनियाँ न जाउँ रे बालम ना जाउँ,
तेरे नैना लगे,मैं ना जाउँ रे बालम,ना जाउँ॥
सास बुरी घार ननद हठीली,
जे सैयाँ, बड़े विसइया, बालम ना जाउँ॥

(526) (लेद)

दोऊ नैना लागे जोर मोरे बालमा॥
अम्ब की डार कोयलिया बोली, बन में बोले मोर, बोले मोर॥

(527)

जंगाली अजब बहार चुरियां जंगाली।
आगें आंगलियां पाछें पछिलियां
बीच चुरिन कौ जोट, चुरिन कौ जोट... चुरियां जंगाली॥

(528) (लेद)

पी प्याला और मगन मस्त रहु, पर तिरियन सों डरा रहौ।
खाइलै पीलै मौजैं कर, पोसाक पहिरलै अति खासी,
भरे बाजार में घोड़ा नचाए लै, जही बात है आछी॥

(529) (लेद)

काहे कों प्रीत करी हम सों, बरजोरी बालम मोरे॥
रूनुक झुनुक चली आवती, अपने अपने सौभाग्य सौं।
कर सों कर बहियाँ सों बहियाँ, कररर चुरियाँ चरकीं॥
छैला छोड़ि दै गल बहियाँ, प्यारे रैन रही है थोरी॥

(530) (लेद)

जाहि लगौ सबद सोई जाने, दुसरा क्या जानै रे भाई॥
ध्रुवलागी प्रहलादै लागी, लागी मीरा बाई॥
बलख बुखारे ऐसी लागी, छोड़ गयौ बादशाही॥

(531) (लेद)

बंसी बारे सौं कहियो जाइ यार दिलदार बिन दरदै को जानें॥
जो आवै सो अपनी गरज कों, मेरी गरज ना जानै कोइ।
मेरी गरज सांवलिया जानै, जापै बीती होइ॥

(532) (लेद)

सिर पर लाल गागरवा गोरी रा पानीरा को जाइ॥
नरवा नरवा जाति ही नरवारे की चिकनी माटी,
पाउँ रपट गयौ घड़ा फूट गयौ सास कहै बहू माती॥

(533) (लेद)

कहुँ छोड़ि मत जइयो हो हो बेदाना हम कों बावरिया करि करि कैं॥
बारै गुड़रिया खेलती हों धरति बनाए बनाइ,
जब सुधि आवै नाहुं की रे गुड़री दैउ बहाइ॥

(534) (लेद)

तुम सदा एक दिल रहना दुसरा ना करना ना करना॥
गोरी के पिय ने पाती भेजी,
जा पाती में लिखी फारसी दुरम्यान दुरम्याना जामे दुरम्याना॥

(535) (लेद)

मेरी सुरमा दानी लईओ छैल काजर सौं नैन बिगर गए॥
नाहिन कजरा आगरै रे नहीं फिरोजाबाद,
चोखौ कजरा पीय को हो, धरौ पिया की सेज॥

(536) (लेद)

जाहि लगा पवन गई सोइ यार द्वारै से बिरही फिरि गयौ॥
नींदरिया बेरिन भई बालम नींदरिया
काहू ना दई जगाइ यार द्वारै से बिरही फिरि गयौ॥

(537)(लेद)

करों क्या नैंना लागे॥
गज की सी चाल मिरग की चितवन,
रितु आइ गई होरी औसर उमगे, जुबना चोली बंद भये गाढ़े॥

(538) (लेद)

तेरी सूरति देखि लुभानी, मिलता जइयो रे गुमानी॥
जो तू मेरें आवै नंद के, घर मेरौ गोकुल गाँव।
कच्चौ कोट पकौ दरवाजौ, मानिक चौक निसानी॥

(539) (लेद)

मेरौ बारौ कन्हैया जानि, कोऊ मति दीजौ हो गारी॥
कोऊ मति हटकौ कोऊ मति बरजौ, कोऊ मति बात कहौ।
नंद पौरि सों निकरै सांवरो, ओढ़ै कामरि कारी॥

(540) (लेद)

काहू मारौ विरहिया बान यार, जियरा के पार निकरि गयौ॥
बान मार कित में गयौ रसिया,
डरी छोड़ि गयौ मोहि मोहि मोहि॥

(541)

मेरौ री मन बासौं लाग्यो, कान्हा बंसीबारे सों॥
माथे मुकुट, मुकुट की सोभा,
कानन कुंडलवारे कलंगीवारे, तुर्राबारे सों॥

(542) (लेद)

मो सों न बौलै, बौले आजु दौरनियां॥
सालू सुरंग कुसुम कौ लहंगा, अंगिया केसरि रंग ले बौरै,
आधी रात त्रिभंग, आधी रात त्रिभंग,
छम छम छम छुम छन नन नन, झपटि घूँघटवा खोलै॥

(543) (लेद)

यह जल माछरिया बिगारौ, पनिया ना रे भरों॥
घर मेरौ दूरि गगरि सिर भारी,
घटिया ना रे चढ़ों, मोसो जुलम जिठनिया कर गई॥

(544)(लेद)

मेरी मोहन माला, क्या ठाड़ी है बाला॥
व्रन्दावन में रास रच्यौ होरी खेलैं नंद कौ लाला,
महीं धरी है माला, माला माला॥

(545) (लेद)

हेली आजु बहुरि हम कैसे आवे, सैयाँ बुलावे हो॥
अमुंए समुंए चौंतरा रे, रिमझिम बरसै मेहा।
जाउँ तो भींजे चूनरी रे, रहों तौ छूटै नेहा॥

(546) (लेद)

कहूं रैन जगायै हो बालमा, नैना उनींदे तेरे॥
पान की पीक लीक अधरन पर, चम्पा फूले घनेरे॥

(547) (लेद)

ऐसी बंसी बजा रे मोहन, जैसी बजाई तैने वा दिन की॥
काली मर्दन कंस निकंदन, गौतम नारि शिला तारी॥
बैठि कदम तर बंसी बजाई, मोहि लई ब्रज की नारी।
भारत में भारई के अंडा, घंटा टूटि परयौ भारी॥
वा दिन वा दिन वा दिन की॥

(548) (लेद)

मेरौ मन बसि गयौ, गिरधारी लाल सों॥
मुसलाधर ताड़ तड़ातड़ सों, बृज की बनिता सब लोग डरें,
लखि गोपी ग्वाल पुकार करी, बृज दूलह नंद किशोर की जै।
वाकी जै कि वाकी जै, जसुमति कौ यह बालक है॥

(549) (लेद)

तुम हम सों यारी कीजो हो, यार साँवलिया॥

प्रीति की रीति कठिन है मोहन, बदनामी सों डरियो।
जो बदनामी सिर पै आवै, प्रीति सवाई करियो॥

(550) (लेद)

जा बनै न जैहों रे, ब्रज नंद कौ सांवलिया, मो पै दान मांगे रे॥
जो जा बन को मारग जानै, सो जा बन को जाइ।
छीनि लई मेरी दधि की मटुकिया, लूटि लूटि दही खाय॥

(551) (लेद)

ब्रज बारे को रसिया, परवस नैना लगाय गयौ॥
आगें चलै अरू पाछें चितवै, बीच में सैंन चलाय गयौ॥
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में जमुना बहाय गयौ॥

(552) (लेद)

मेरे गाले कौ हरवा बाबा पटवा गुहा न देइ॥
एक तौ हम वृन्दावन जइहैं दूजे मथुरा तीर।
तीजे झाँकी नंदलाल की मेरो ललचै जी॥
एक तो चिकनौ पीपर कौ पतवा, दूजै चिकनौ घी।
तीजै चिकनौ गोरी कौ जुबना, मेरौ ललचै जी॥

(553) (रसिया)

चलौ सब देखि आबैं, बृज में है होरी की धूम॥
प्रात होत ही ग्वाल उठे सब, रंग की धूम मचाई
कृष्ण कन्हैया नाचत डोलै, संग में लोग लुगाई॥
विन्द्रावन की कुंज गलिन में, चहुं दिस उड़े अबीर।
मथुरा गोकुल लाल लाल भए, कालिन्दी कौ नीर॥
रंग लाल रूप लाल अधर अधिक लाल,
दृगन के डोरै लाल रोरै लाल पलकै॥

चीर लाल चोली लाल लाल डोरे गुहे बाल,
बेसरि की बैंन्दी भाल हिए माँझ झलकै॥
कहै मृग लोचनी सुहाग भाग ते रे आज,
सोहै लाल भाल बेंदी और सोहें अलकें॥
पान लाल पीक लाल पीक हू की लीक लाल,
ऐते लाल पाइ प्यारी लाल हू कौ ललकै ....
चलौ सब देखि आबै॥

(554) (लेद)

बाजी नंदलाल बन में, बाजी नंद लाल बन में,
बन में बन में बन में, बाजी नंदलाल बन में,
बांसुरिया की नई धुनि सुनि कै, चौंकि उठी ब्रजबाला।
गइयां बछड़ा सबहिं मगन भए, पहुंचे जहां नंदलाला॥

(555) (लेद)

मैने बैंदा लाल लगायौ री, जा फागुन की होरी॥
बैंदा लाल लाल नकबेसरि कर्णफूल माथे की शोभा,
रसिया ने, काहू छैला ने भरमयौ री, जा फागुन की होरी॥

(556)

तुम छके छैल से डोलौ, मनमोहन अलबेले लाला,
मन आवे सो बोलो॥
बरसाने की गूजरि आई, उन्हें पकरि झकझोरौ।
कहौ सुनौ कछु मानत नाहीं, घूँघट के पट खोलौ॥

(557) (चाल)

गाइलै रे गोविन्दा गुना॥
ध्रुवतारे प्रहलाद उबारे, अजामील तारी गणना॥
फागुन मास बड़ौ सुखदाई, मचौ फाग हरि के अंगना॥

ब्रिन्दावन में रास रचौ है, उदै भाग गोपी बरना॥
जो तू चाहै मुक्ति आपनीं, धरौ सीस हरि के चरना॥

(558)

रंगिडारे गोपी ग्वाला, कन्हैया ने रंगडारे गोपी ग्वाला॥
गोकुल में सब होरी खेलैं, अपने री अपने बर सौं॥
कान्हा की जब बारी आई, भागे अपने घर कौं॥

(559)

अरी ऐरी बुढ़िया सोच, अरी ऐरी बुढ़िया सोच।
सोच सोच पछतावत मन में, चरखा भया पुराना॥
कालचक्र ऊपर मंडरावै, भ्रमर जाल में गोता खावै।
कुटुम्ब कबीला पास न आवै, कापर करत किलोल॥
रंग बिरंगे साज सजावै, नैंक उमर कौ ध्यान न लावै।
मीठे बोल न दूरि भगावै, यौं न सम्हारै बोल॥

(560)

सुदामा मेरे आए, जे संग चटसार पढ़े हैं॥
भाभी ने तन्दुल भिजवाए – खोले फिर कछु खाए॥
रहे बचे महलन भिजवाए – मित्र कौं कंठ लगाए॥

(561)

मुरारी चूनरि फारी रे मुरारी॥
दधि बेचन को हम सब निकसी, अपने री अपने जोर॥
गैल चलत में मटुकी फोरी, मिलि गए माखन चोर॥

(562)

अब लुटी जाति है रे गोबिन्दा की फुल बगिया॥
सुफलक सुत मथुरा सै आए श्याम गए बेपीर।
अवधि बदे हू पै नहीं लौटे कैसे धारें धीर॥

(563)

कन्हैया तेरौ कारौ, मैं कैसे ब्याहू राधे॥
कारौ कारौ मति कहै ग्वालिन, मेरौ जग उजियारौ॥
जमुना पैठि कालिया नाथौ, मारी फुसकार वदन भयौ कारौ॥

(564)

कन्हैया घर आयौ, जाइ पूजा दै कें राखौ॥
गोपी ग्वालन खुसी मनाई घर आए नंद लाला॥
हाथ जोर पाइन कौ दौरी मगन भई ब्रजवाला॥

(565)

चौपटियां चादर तानी बलमा, नींदा लगै तो सोइ जइयो॥
हमरे बलम कें तीन चबैना,
जुड़री, बाजरा, तिल मिलमा, जामें समाइ गए मेरे बलमा॥
हमरे बलम के तीन परगना,
दिल्ली, आगरा धुर पटना, तामें समाइ गए मेरे बलमा॥
हमरे बलम के तीन बहुरियाँ,
ठनिया, झुनियाँ–रमधनियाँ, तामै समाइ गए मेरे बलमा॥
हमरे बलम के तीन खिलौना,
उखरी, मूसल और बिलना, तामै समाइ गए मेरे बलमा॥

(566) (दीपचंदी)

मेरो मन भावना आयौ नहिं आली॥
लागे मास असाढ़ री सजनी, सब कोऊ मंदिर छावै।
हमरे मंदिरवा कों छावै, सिर पर आयौ सावना॥
भरि गये ताल सरोवर सजनी, बोले हैं दादुर मोरा।
चातक बोल कुइलिया ए, पपीहरा जिय कौ जालना॥

(567) (दीपचंदी)

कहाँ से लाऊँ माँगै चन्दा खिलौना॥
भरि के थार धरौ अंगना में, माँ सुत को भरमावै।
कोटि उपाय करै जल भीतर, चंदा हाथ न आवै॥

(568) (दीपचंदी)

लागे नेहा जनावना हो जसुदा के नैंना॥
हमसो नेह गेह काहू आनि सों, हमसों लागे दुरावना।
बीती रैनि पिया नहिं आये, अंचल लागे उड़ावना॥
पान की पीक लीक अंजन की, अधरन अधिक सुहावना।
बिनु गुन बाल बाल बिन बेसरि, बाल लगे सुरझावना॥

(569) (दीपचंदी)

अँचरा न सम्हारै, बिरहा रस माती॥
ऊँचे घाट तर जमुना बहति है, तहाँ बैठी जेहरि भारै।
जेहरि भारि धरै सिर ऊपर, मंद मंद पग धारै॥
जेहरि उतारि धरी अँगना में, तहाँ बैठी केसरि गारै।
केसरि रंग भरै पिचकारी, लौहरे दिवर पै डारै॥
दियला उजेरि धरौं मंदिर में, तहाँ बैठी अंजन सारै।
दै अंजन खंजन से नैना, रसिया ओर निहारै॥

(570) (लेद)

कहाँ से पाये, ये दोऊ नैंन बहुरिया॥
कै जे नैंन मिरग के हरिया, कै काहू के चुराये।
ना जे नैंन मिरग के हरिया, ना काहू के चुराये।
सुघरि सुनारि गढ़ी कजरौटी, छैला हाथ बिकाये॥

(571) (दीपचंदी)

जियरा मैं बारौं, दिल लाग्यौ राम जू॥
पहले पार मेरे सतगुरू उतरे, कैंसे मिलौं बिच पानी।

सुरति नेह को नैया बनाऊँ, नैंना करों खैमानी॥
हंस उड़े पर झुरमन लागे, सरबर अंत न जानी।
एक जनावर उड़ौ सखी री, लौटि बहुरि नहिं आनी॥

(572) (दीपचंदी)

मुतिया झलकावै, धन बैठी दुलीचा॥
चलि बालम बढ़ई के चलियै, आछौ नीकों पलिका बनइयै।
रेशम बान बुनों हैं पलिका, साल सों साल मिलइयै॥
चलि बालम दरजी के चलियै, आछी नीकी चुलिया सिवंइयै॥
चौंसठि बंद लगे चुलिया सों हीरा लाल लगइयै।
चलि बालम बरही कें चलियै, आछौ नीकौ बीरा लगइयै।
खैर सुपारी लौंग लायची, पियकों पान खवइयै॥

(573) (विहाग)

ऊधौ स्याम सनेही काके॥
प्रथमहिं लीला करी हरि ब्रज में, छाय रहे जस जाके।
पी पी दूध दही गोकुल के, फेरि न ब्रज में झाँके॥
जब रथ हाँकि चले मधुवन कों, सखियन रोके नाके।
तुम्हें दुहाई नंद बबा की, जो जमुना जल नाखे॥
दूध पिलाय बड़े करि दीन्हे, गुन नहिं मानत ताके।
'सूरदास' जाकौं विलगु न मानें, सगे न जसुदा माँ के॥

(574) (विहाग)

ऊधौ जोग सिखावन आये॥
हम रंग राँची मन मोहन की, योग ध्यान बिसराये।
ता पर लाये जोग की पाती, घाउ में नौंन लगाये॥
कोयल के सुत कागा पाले, हँसि हँसि लाड़ लढ़ाये।
बड़े भये जब उड़ने लागे, कुल अपने कों धाये॥
दादुर मीन प्राणपति एकहि, एक संग सुख पाये।

मीन मरी जल के बिछुरे ते, दादुर कठिन कहाए।।
मन की माला तन मृग छाला, विरह की भस्म लगाये।
'हरीदास' हरि के मिलिबै कों, तपसी भेस बनाये॥

(575)

यह रथ नाहीं हेली नन्दकिशोर॥
रथ तौ वही यामें सुरज सारथी, बनि आयौ कोऊ और।
कै जामें अरजुन, कै जामें ऊधौ, कै बलदाऊ जोर॥
सांझ भई दिन आयौ सजनी, रथ अटक्यो वाही ठौर।
जौ सुत हो तो नंद महरि कौ, साँझ न गिनतो भोर॥

(576)(विहाग)

श्याम जब आवौगे मेरी गली॥
लैहों छिनाय पीत पट मुरली, तौ वृषभानु लली॥
भाजत हौ पिचकारी मारि कें, हौ तुम निपट छली॥
फगुआ गावौ लै नाम हमारौ, यह नहिं बात भली।।

(577) (विहाग)

जब से सुनी जा होरी की धूम, जियरा मेरौ वीर डरै॥
राह बाट निबहन न देत सखि, कान्ह उपाधि करै॥
'राम प्रताप' लाल तजि को वाके, प्रेम के फंद परै॥

(578) (विहाग)

लाल तुम कहाँ से आये जगे।
अलसी अंखियाँ नैन घुमावत, चरन धरत डगमगे॥
अंजन अधरन भाल महावर, बोलत बोल न लगे।
'आनंद घन' पिय जाहु वहीं तुम, जहाँ तुम्हारै सगे॥

(579) (काफी)

तुम भोरही आये होरी खेलन, राति कौन के रंग में रँगे हौ लाल॥

पलक पीक अंजन अधरन अरू, दियौ है महावर तिलक भाल।
'राम प्रताप' चतुर भामिनि बे, जिन मुख कियौ है गुलाल लाल॥

(580) (विहाग)

मनावत लाल री मानिनी॥
तुही तुही कर तोहि हृदय धर, तेरे ही गुनन गनै॥
तन सों तन मन सों मन मिलवत, प्राण सों प्राण सनै॥
'श्री बिहारिन' दासी कौ मान, कहौ सो लहौ सुख सपनै॥

(581) (विहाग)

केसरि रँग छिरकौ तोरी सारी, कपोलनि कौने दियौ री गुलाल॥
मारग चलत आनि चहुँ दिसि तें, पूछति हैं ब्रज बाल॥
नहिं चितवति नहिं बोलति नेकहु, कौने कियौ यह हाल।
'राम प्रताप' कहति क्यों न साँची, तोहि मिलै नंदलाल॥

(582) (विहाग)

सखि या घूँघट की लटक में, किन मारी पिचकारी॥
जिन मारी ते सनमुख अइयो, ना तरू देहों मैं गारी।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, तुम जीते हम हारी॥

(583) (विहाग)

श्याम म्हारी चूनरि भींजै हो॥
अबहिं रंगाई दई मैया नें, मोहि बहुत खीझै हो॥
नन्ही नन्ही बूँद परत चूनरी पर, मेरौ जिया रीझे हो।
'ब्रजनिधि' मोहि छिपाउ खोइ में, अधर सुधा पीजे हो।

(584) (विहाग)

छैल रंग डारि गयौ मेरौ बीर॥
भीजि गयौ मेरौ अतलस साँटा, सुरस संदली चीर॥

घालत कुंकुम ताकि कुचन पर, मुख सों मलत अबीर॥
'ललित किशोरी' कर बरजोरी, ऐसौ निठुर बेपीर॥

(585) (विहाग)

आजु मो सों करि गयो श्याम ठगौरी॥
ना जानों बे छिपे कबके दइया, मोही सों घात कियौ री।
छाती अछूती छुई छलकै मेरी,कंचुकी फारि भजौ री॥

(586) (विहाग)

कान्हा होरी के दिनन में, नित नई धूम मचावै॥
ग्वाल बाल सब सखन संग लियें, मेरे ही द्वारें आवै॥
कह्यौ सुनौ कछु मानत नाहीं, मन आवै सोई गावै॥
'नागरीदास' ढीठ लंगरवा, जाहि कोऊ समुझावै॥

(587) (विहाग)

श्याम मुख रँग की बूँद ढरी॥
मानौ कनक कसौटी ऊपर, कंचन रेख खरी॥
भाल बिलास गुलाल खसनि लखि, उपमा सब बिसरी।
मानहुँ प्रथम किरन दिनकर की, अंबर में पसरी॥
रूचिर केस मानहुँ घन माला, बरसत अनंद करी।
"सूरश्याम" निरखत यह शोभा, उपमा सब बिसरी॥

(588) (विहाग)

सखी मोहि फागुन मास सुहावै॥
हरि आवें सब ग्वालिन लावें, प्रेम राग बगरावें॥
इन्द्र अप्सरा नाचें गावैं, भेद कों आँच लगावें।
सब चलियो ब्रजराज दुलारे, जाय के फाग मचावें॥

(589) (विहाग)

ग्वाल तेरी गइयाँ आनि चरी॥
गोकुल की यह पुष्प बाटिका, हम हाथनि संचरी॥
रंग बिरंगी औ पचरंगी, बेलें करी हरी।
ऊधौ हरि कौ मथुरा लै गये, औचक गाज परी॥

(590) (विहाग)

अँखियाँ अब लागीं पछितान॥
श्याम सुँदर जब चले मधुपुरी, तब क्यों दीन्हों जान॥
पथ न चलत संदेस न आवत, धीरज लहत न प्रान।
हे ऊधो कहियो माधव सों, आवहु सारँग पान॥

(591) (विहाग)

सजन तोहि मुख देखे की प्रीत॥
तुम अपने यौवन मदमाते, कठिन विरह की रीत॥
जहाँ जाउ तहँ हँसि हँसि बोलत, गावत रस के गीत॥
'हरीचन्द' मधुवन के भौंरा, हौ मतलब के मीत॥

(592)

सखी म्हारी नींद नसानी हो।
पियरो पंथ निहारताँ, सब रैन बिहानी हो।
सखियाँ सब मिलि सीख दयाँ, मन एकन आनी हो।
बिन देख्याँ कल ना पड़े, मन रोष न ठानी हो॥
अंग खीन व्याकुल भयौ, मुख पीव-पीव वाणी हो॥
अन्तर वेदन विरह की म्हारी, पीड़ न जानी हो॥
ज्यूँ चातक घन कूँ रटौं, मछरी ज्यूँ पानी हो॥
मीरा व्याकुल विरहनी, सुध बुध बिसरानी हो॥

(593) (विहाग)

लट उलझी सुलझाइजा रे बालम, मेरे कर मेंहदी लगी है॥
सिर की साड़ी सरकि गई है, अपने ही हाथ उढ़ाइजा॥
माथे की बेंदी मेरी गिरि जो परी है, हा हा करत लगाइजा॥
नीलाम्बर प्रभु गुन ना भूलौ, बीती रैन चवाइजा॥

(594) (विहाग)

मैया मोरी कामरि चोरी गई॥
मैं बन जाऊँ चरावन गइयाँ, खरिक में खोलि धरी॥
एक कहै कान्हा तेरी कामरि, जमुना जाति बही॥
एक कहै कान्हा तेरी कामरि, सुरई लीलि गई॥
एक कहै नाचौ मेरे अँगना, लैं देउं मोल नई॥

(595) (ठुमरी)

झूमत आवै मोहन मतवारौ,
एरी सखी वाकौ ढंग है निरालौ॥
चपल नयन वाकी चितवन चंचल, श्यामसुन्दर काली कमली वारौ॥
मुख मुरलीधर अधर बजावत, वह नंदलाल जगत उजियारौ॥

(596) (भैरवी)

लला मोरी सबरी चुनरि रंगि डारी॥
लै गागरि पनियाँ कों निकसौ, घूँघट में पिचकारी॥
बरजि रही बरजौ नहिं मानत, नैनन में तकि मारी॥
'रामप्रताप' भयौ या ब्रज में, ऐसौ ढीठ बिहारी॥

(597) (भैरवी)

प्यारी लाजन सकुची जात॥
ज्यों ज्यों रति प्रति– बिंब सामुहे, आरसि माँह लखात॥
कहत लाख यह दूर राखिये, बल करि कर्षत गात॥
"हरीचन्द" रस बढ़त अधिक अति, ज्यों ज्यों तीय लजात॥

(598)

गावत रंग बधाई सब मिलि, गावत रंग बधाई॥
कीरति के प्रकटी श्री राधा, मोहन के मन भाई॥
नर नारी सब मिलि के आईं, गावत गीत सुहाई॥
“हरिचन्द” कछु जस बरनन करि, बहुत निछावर पाई॥

(599) (विहाग)

नींद तोहि बेचूँगी बड़े भोर॥
आए मोहन फिरि गए अँगना, मैं बैरिन रही सोइ॥
कहा करौ कछु बस नहिं मेरौ, पायौ धन दियो खोइ॥
“लछीराम” प्रभु अबकै मिलै तौ, राखौगी नैन संजोइ॥

(600) (विहाग)

सखी तू कैसे अचेत पड़ी॥
चीर समारि निहार बाबरी, टूट रही दुलरी॥
जा बिरियाँ तू गई ननद घर, जानें वो कैसी घड़ी॥
“नारायण” मग में कछु डरपी, बात यही सिगरी॥

(601)

सिय पिय विपिन सुनत अकुलानी॥
गद–गद बैन नैन जल बरषत, मुख सुखमा कुम्हिलानी॥
हृदय अधीर शरीर शिथिल सब, रघुवर पद लपटानी।
अंजुलि जोरि निहोरि सकल विधि, बोली आरति बानी॥
अनुचरि जानि साथ मोहि लीजै, नाथ के हाथ बिकानी।
“हरि विलास” रघुनाथ सिया लषि, समुझावत सुनु स्यानी॥

(602) (विहाग)

परसपर भेंटत नृप अनुराग॥
रंग पटल रस दोऊ दिश छाये, मानो खेलत फाग॥
इत अवधेश उतै मिथिला पति, मिलत प्रेम रस पाग।

जिमि रतनाकर मिलत महोदधि सकल सराहत भाग॥
वंश प्रसंश करत बंदीजन, गायक गावत राग।
"हरि विलास" आकाश सुमन बहु, सुरपति वरषत लाग॥

(603) (विहाग)

कान्ह तुम करत अटपटे ख्याल, मुख सों मलत गुलाल॥
बाट चलत मों सों करत मसखरी, डारत रंग गुलाल॥
प्रात होत सब घर सों निकसीं, जल भरने ब्रजबाल।
आय अचानक घेरि लई मग, हम हारी सब बाल॥
बरजोरी करत खेलत है होरी, देत हाथ की ताल।
'चिन्तामणि' के मन अति भावत, कौतुक करत गुपाल॥

(604) (विहाग)

दूरि करहु बीना कर धरिबौ॥
मोहे मृग नाही रथ हाँक्यौ, नाहिन होत चंद कौ टरिबौ॥
बीती जाहि पै सोई जानत, कठिन है प्रेम पास कौ परिबौ।
सुनुरी सखी वियोग श्याम के, सकत न नैन नीर कौ गरिबौ॥
जबतें बिछुरे कमल नयन सखि, कहियै धीर कौन विधि धरिबौ॥
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस बिन, सब झूठौ जतनन कौ करिबौ॥

(605) (विहाग)

श्याम तुम्हें हेरत रैन बिताई॥
जब सें गये मोरी सुधि हू न लीन्ही, क्यों ठानी निठुराई॥
अटकै प्राण दरस कों तेरे, काहे सुधि बिसराई॥
हमरे तो सरवस तुमहिं हौ, तुमहीं सौं डोर लगाई॥

(606) (विहाग)

नाथ तेरी गति ना समुझि परै॥
पहिलें बुलाय के रास रचायौ, फिरि कहौ जाउ घरै॥

घर त्यागौ सब वसुधा त्यागी, तेरौ ही ध्यान धरै।
हम सब तौ चरनन की दासीं, रात दिना सुमिरै॥

(607) (विहाग)

ऊधो जोग सिखावन आये॥
स्वाती बूँद बरजि चातक मुख, छारहिं नावन आये॥
जल सों काढ़ि मीन कुल संकुल, अगिनि बसावन आये।
'रंगपाल' ब्रज जरीं तियनि की, खाक उड़ावन आये॥

(608)

मैं तो रही छै मनाय मनाय, मेरा प्यारा ना मानें म्हारौ राज॥
वाकें बर पीपर कौ पेड़, सीतल वाकी छाइयाँ म्हारौ राज॥
वाकें कानन भँवर मलूक, लपेटा जामुनी म्हारौ राज॥
झूला झूलत नन्द किशोर, झुलावें कामिनी म्हारौ राज॥

(609)

अकेली मति जइयो राधे जमुना के तीर॥
जमुना किनारें ठग लागत हैं, सुन्दर श्याम शरीर॥
बिनु फाँसी बिनु भुजबल मारत, बिनु गाँसी बिनु तीर॥
वाके रूप जाल में फँसिकें, को उबरयौ ऐसौ बीर॥
बैठि रहौ धरि देहु गगरिया, मन में राखौ धीर॥
वीरन पान करन हम छाँड्यौ, कालिन्दी कौ नीर॥
नहिं सुत–धाम गये नहिं चिन्ता, प्रान गये ना वीर॥
'सूर' श्याम कुल–कानि गई तौ, धिक धिक जनम शरीर॥

(610)

सारी उतारौ प्यारी, गुलाल की सारी उतारौ प्यारी।
केसरिया पहिरि है जाउ न्यारी॥
रघुवर तुम पहिरौ पीताम्बर, बाँधौ पाग लटकारी॥
अब तौ भई महल की बिरियाँ, अँग अँग जाउँ बलिहारी॥

(611) (विहाग)

हो हो होरी के दिनन में, मति जा स्वामी विदेस॥
जाहि विदेश बहुत पछितैहौ, हम जिय करब अंदेस॥
लाख कही मेरी एक न मानी, ऐसी ठानी है टेक॥
'सूरस्याम' तुम्हरौ मुख देखौ, तुम देखौ मेरौ भेष॥

(612)

वाही साँवरे सलौने सों लागे नैन, मोहि कल न परत पल एक चैन॥
याही दरद सों भई जाति पियरी, कासों कहौं कोऊ न मानें सखीरी।
विरहा दरद कों वैद्य बुलाऔ, पकरि बाँह मेरी नबज दिखाऔ,
मेरे कसकै करेजवा में नैनों दी सैन॥
जावौ जी जावौ जी मेरे सैयाँ कों लै आवौ, तपस ताप मेरे जिय की मिटावो।
बहुत सखी गुन मानोंगी तिहारो, अबकी फागुन सैयाँ आवै जो हमारौ,
मै तो फिरि फिरि सुनों श्रवननि सों बैन॥

(613) (चैती)

बन बन बंसिया बजावै हो रामा, केहू मन मोहना॥
अम्बवा की डाली पै कुहकै कोयलिया,
पीउ पीउ पपीहा पुकारे हो रामा॥
बन बन रंग लाल टेसू फूले,
अम्बवा गयिल बौराय हो रामा॥

(614) (चैती)

पिया जब जइहैं विदेसवा हो रामा, टिकुली लै अइहैं।
टिकुली के संग संग बिछुआ लै अइहैं,
बिछुआ पै मोहे मेरौ मनवा हो रामा॥
बिछुआ के संग संग कंगना लै अइहैं,
कंगना सें सोहै मेरौ हथवा हो रामा॥
पूरब जइहैं पछिम को जइहैं,
पिया बिन सूनी मेरी सेजवा हो रामा॥

(615) (चैती)

श्याम गये मधुवन कौ – हो रामा – छोड़ौ गोकुल कों।
श्याम गए दाऊ कौ लै गए – बिलखि रही सब उनकौ – हो रामा॥
जब से गए कछु खबरि न लीनी – मन अटकौ दर्शन को – हो रामा॥
ऐसो हम तेरौ कहा बिगारौ – रात रात रथ सटकौ – हो रामा॥
करूणा निधि अब बेगि खबर लेउ– हम तड़पै तेरी छबि कों हो रामा॥

(616) (चैती)

एहि ठैंयाँ मुतिया हिरइली हो रामा, कहवा में ढूँढ़लू॥
घर मैंने ढूँढ़ो, अंगना बुहारो,
सैयाँ की सेज पै न पइली हो रामा॥
सास जी सै पूँछली ननदजी से पूँछली,
दिवरा सै पूँछत लजाइ गइली हो रामा॥
ना कहूँ अइली ना कहूँ गइली,
हियरा में मुतिया समाइ गइली हो रामा॥

(617) (चैती)

छिटकत चैत के चँदनियाँ हो रामा, गोरी के अँगनवा॥
विरहा के मातल गोरी सुतली अँगनवा,
पिया बिन भावै ना भवनवा हो रामा॥
कोइली के बोलिया माहुर पियावे,
रहि रहि सताबेला मदनवा हो रामा॥

(618) (चैती)

एक फूल फूले आधी रतियाँ हो रामा, बाबा तोरी बगियाँ॥
बेला फूलरी चमेलियारे फूलेरी,
एक फूल फूलैरी,अटरियाँ हो रामा॥
चम्पा फूलरी, केतुकी फूलरी,
एक फूल फूलरी, सिजरियाँ हो रामा॥

(619) (चैती)

ढुलनी पै लागी रे नजरियाँ हो रामा, अब ना पहिरवौं॥
ढुलनी पहरि हम गई थीं बजरियाँ,
दिवरा की लागी रे नजरिया हो रामा॥
ढुलनी पहरि हम गई थीं सिजरियाँ,
सैयाँ की लागी रे नजरिया हो रामा॥

(620) (चैती)

चैत मास चुनरी रंगाइदै हो रामा॥
मेंहदी लगाइ दै पिया हथवा रचाइ दै,
हथवा के संग संग अँगुरिउ रचाइ दे।
बिच बिच झुमकी लगाइ दै हो रामा॥
पनवा खवाइ दै पिया, कजरा लगाइ दै,
कजरा के संग संग गजरा लगाइ दै॥
बिच बिच मुतिया लगाइ दै हो रामा॥
हथवा गुदाइ दै पिया, हरवा गढ़ाइ दै,
हरवा के संग संग मुदरी मगाइ दै।
जहँ तहँ टिकुली लगाइ दै हो रामा॥

(621) (चैती)

बन जैहों बनिकैं जुगिनियाँ हो रामा, पिया के करनवा॥
छतवा में छोड़ि हों अटरिया मैं छोड़िहों।
छोड़ि जैहों सबरे गहनवा हो रामा॥
सिजिया मैं छोड़िहों, सिंगरवा मै छोड़िहों।
छोड़ि जैहों बाबा के अंगनवा हो रामा॥

(622) (चैती)

जिया जरत रहत दिन रैन हो रामा॥
अमवा की डरिया कोयलिया बोले, तनिक आवत नहिं चैन हो रामा॥
बगवानी में मधुर सुर बाजे, विरही पपिहरा बोलन लागे।
मधुर मधुर मुख बैन हो रामा॥
आस अधूरी प्यासी उमरिया, छाये अंधेरा, सूनी डगरिया।
दरस जिया बेचैन हो रामा॥

(623)

कौन गुन छाँड़ौ लोभी म्हारौ देस॥
आम पकै महुआ गदराने, निबुला बौरी देत।
जब निबुलन में रस परयौ रे, छाँड़ि चलौ परदेस॥
कबहुँ न हाथ रचे मेंहदीं सों, कबहुँ न बाँधे केस॥
कबहुँ न माँग भरी मोतियन सों, कबहुँ न सोई पिय सेज॥
राधा प्यारी सोच करति हैं, कृष्ण तुम्हारे हेत।
'सूर श्याम' सों यों जाइ कहियो, कब आवौ इहि देस॥

(624)

श्याम मथुरा में आइ गए, भाग्य नगरी के उदय भए।
मधुपुरी आनन्द छाय रहे, मनहुँ हरि आजुहिं जनम लए।
प्रात उठि नगरी भ्रमण कियौ, राह में धोबी धुनकि दियौ।
कुबरी की पूजा लई, सबकों सुख दए।
उत अक्रूर कों भेजि कें, कंस को खबरि दए॥
खबरि जब कंस ने यह पाई, गोकुल से आए दोऊ भाई
मल्ल की भई है तैयारी, द्वार पै झूमै गिरधारी।
पहलौ फाटक तोड़ि कें, पहुँचे जहाँ हरे।
हाथी कुबलिया द्वार पछारौ, कंस पै टूटि परे॥

कंस कों मंच से दै मारौ, तुरंत ही मारि करौ न्यारौ।
लाइ के खार में मुंह डारौ, मगन सब मरौ जि हत्यारौ॥
रानी सब रोईं जबै, सबकों ज्ञान दए।
अत्याचारी जुलम मचायौ, हरि कों भूलि गए॥
कंस वध करि मोहन पहुँचे, जहाँ पितु मातु पड़े सोचें।
सबनि की बेड़ी काटि दई, लखन ही चरन की धूरि लई॥
मातु पिता अरू भ्राता दोऊ, इक मिलि आजु भए।
उग्रसेन कों गद्दी दैकें, जग जस लूट लए॥

(625)

संग लै अनुज सहित अनुराग, अवधपुर खेलत सिय–पिय फाग॥
लगौ फागुन ऋतु सुघर बसंत, अवध छवि छाई नवल अनंत।
मंजु कंजन में आइ इकंत, रच्यौ प्रभु फूल बाग भगवन्त॥
भरत लखन रिपु–दहन युत, मृदु–रज सरयू कूल।
खेलत फाग सिया रघुनंदन, सुरपति बरसत फूल,
विमल फूले ऋतुपति बन बाग ॥ अवधपुर०॥
झाँझ ढफ ढोलक बजति मृदंग, मनोहर धुनि मुरली मुंहचंग।
संख बहु जलतरंग सारंग, बेनु बीना सितार गति मंद॥
नरनारी हिलमिलि सकल, नाचैं दै दै ताल।
कोटि कोटि रति–मदन–बदन–छबि, सीता–वल्लभ भाल,
गावते विविध रागिनी राग॥ अवधपुर०॥
मची होरी कौसलपुर बीच, रहीं बहु बाल गुलाल उलीच।
बदन मारें पिचकारी खींचि, कुसुम रँग बरसत है रही कींच॥
चोया चंदन अतर अति, लै सहाव गंभीर।
विविध सुगंध अबीर लै, मलैं सिया रघुवीर,
लखैं गुरुजन जिनके बड़भाग॥ अवधपुर०॥
मची घर घर होरी की धूम, परत जहँ सुख सागर मालूम।
निकट रघुवर के आवें झूम, मलैं रोरी गोरी मुख चूम॥

शोभित फाग समाज अति, जनकसुता रघुनाथ।
लखि लखि 'दास गणेश' युगल, सुख तन मन होत सनाथ,
रागिनी गावैं राग विहाग॥ अवधपुर०॥

(626)

भूप बृषभान राय के द्वार, मचौ रंग होरी नंद कुमार॥
लियें ब्रज गोप सखा सब संग, बजावै मुरली तूस मृदंग।
बजै बीना रबाब मुंहचंग, खंजरी महुअरि चंग उपंग॥
सारंगी ताऊस गति, झांझ सरोद सितार।
ढफ ढोलक मंजीरा घुंघरू, सहनाई नक्कार,
भरे सुर तम्बूरा के तार॥ मची रंग०॥
राग भेरों हिंडोल अलाप, मेघ और मालकोश की छाप।
भरै सुर दीपक हू के राग, सिरी गौरी खम्माच अलाप॥
ईमन कजरी परज कल्याना, केदारा के बोल।
सारँग सोरठ जै जैवंती, कलिंगरा सिरमौर॥
देश–धुनि माँड़–गौड़ मल्हार ॥ मची रंग०॥
संग राधे नवल गोरी, चूर मृगमद कपूर रोरी।
कुमकुमा केसरि रँग घोरी, चपल अति करें चित चोरी॥
चलैं पिचक्का डोलचीं, चलैं उठै मग कींच।
कहै परस्पर होरा होरी, आनंद उमंगि उलीच,
बहै बरसाने रंग को धार ॥ मची रंग०॥
सैन दै दै राधे मुसिकाति, लगइयो हरि पकरन की घात।
गहरि गंभीर गुलाल उड़ात, पकरि लये नंद राय के लाल॥
आँखिन काजरू आँजि कें, गुलचा दौन्हे गाल॥
घेरदार घाँघरि पहिराई, शीश चूनरी डारि,
लै गई गोकुल की चौपारि ॥ मची रंग०॥
गतिन पै तांडव नाच नचाय, कहै जसुदा के आँगन जाय।
करै फगुआ की त्यारी माय, जीत भई मेरी श्याम हराय॥

मेवा झोरी डारि कै, कहै जसोदा माय।
धन्य भाग मेरे घर आई, हिय अभिलाष बढ़ाय,
निरखै 'प्रह्लाद' ये नित्य बहार ॥ मची रंग०॥

(627) (दादरा)

जसुदा नन्द करि कैं फन्द, डारि गयौ मोपै रंग।
तकि तकि मारत गुलाल, बरजोरी करै नन्दलाल॥
भूलि गयी गैल घाट, बिछुरि गयौ सखिन संग।
मथुरा तीरथ महान, कृष्ण को सब धरहिं ध्यान।
गावत ध्रुपद धमाल, बाजत है ढप मृदंग॥

(628) (रसिया)

न मारौ कांकरिया होरी में।
कांकरिया को कछु डर मोहिं नाही, फूटेंगी मेरी गागरिया होरी में॥
गागरि को कछु डर मोहिं नाही, भीजेगी मोरी चूनरिया होरी में॥
चूनरि को मोहि कछु डर नाही, रूठैगौ मेरौ साँवरिया होरी में॥
साँवरिया को मोहि डर नाहीं, है जाऊँगी में बावरियाँ होरी में॥

(629) (चैती)

बाजत मोद बधईयाँ हो रामा अवधपुर नगरी।
चैत मास शुभ दिन तिथि नौमी रामलिहिन अवतार हो रामा॥
अवधपुर नगरी
कौन लुटावे अन्न धन सुनवा, कौन लुटावे धेनु गइया हो रामा॥
अवधपुर नगरी
कौशल्या लुटावैं अन्न धन सुनवा, दशरथ लुटावें धेनु गइया हो रामा॥
अवधपुर नगरी

(630) (चैती)

तरपत रतिया वितयली हो रामा, पिया नहीं आये।
देवी सुमिरली, देवा सुमिरले, रति पति सुमिरि लजउली हो रामा॥

मन उन विन कछु चाहत नाही, पुनि पुनि ध्यान हटइली हो रामा॥
दिन नहीं चैन राति नहि निंदिया मोय आइ पहुँचइले हो रामा॥
अरधासन बैठाइ देवसव पूजनी ईश कों शीश नवइली हो रामा॥

(631) (चैती)

आये चैत उतपाती हो रामा पाई न पाती।
विरही कोयलिया शब्द सुनावै, कल न परै दिन राती॥ हो रामा॥
पापी पपीहरा पिउ पिउ बोले, पवन चलै मदमाती॥ हो रामा॥

(632) (चैती)

धावत राम बकैया हो रामा धूरि भरे तनवा।
कौर लिये कर पाछै डोलत श्री कौशल्या मइया॥हो रामा॥
लै कनियां झारत अचरा सौ, धूसर धूरि धुरैया॥ हो रामा॥
केशो योगी ठाड़े असीसत, कुंवर जियाब गुसंइया॥ हो रामा॥

(633) (चैती)

जा अवध नगरिया बाजै बधईयाँ हो रामा।
कौन के राजा रामचन्द्र भये, कौन के तीनों भईया॥ हो रामा॥
कौसल्या जी कैं रामचन्द्र भये, औरन के तीनों भईया॥ हो रामा॥

(634) (चैती)

जा जुगिया के संगवां में हुइवै जोगिनियाँ हो रामा।
वन में जइवैं लकड़ी लइवैं, अंग भभूति रमइवै हो रामा॥
एकलो जोगी रस के भोगी, दूजै जोगी छल वलिया हो रामा॥

(635)

चूनर मेरी शीत कुसुम रंग वोर दई हो।
मै उठि भोर जाति यमुना पर देख, करहि पिचकारी लई हो।
रामप्रताप कँपत अंग सिगरोआली, यह गति आजु भई हो।

(636)

चुनरिया रंग में सगरी रंग डारी, डगर चलत बनवारी।
लैदधि निकसी अपनी बगर सौं, देखि मोहि दईगारी॥
रामप्रताप पकर बहियाँ मारी, घूंघट में पिचकारी।

(637)

नट नागर गोपाल कन्हैया, मुझ पर ना रंग डार।
अभी जाय के गोकुल में, कंस से करूंगी पुकार॥
कन्हैया मुझ पर....
नाथ तोड़ डारे है, सब गहने मेरे।
कहे अनाड़ी कंस लगे क्या हैं तेरे॥
मारग रोके खड़ा रहे वो, करे हमेशा रार॥
कन्हैया मुझ पर...
ले ग्वालों को संग इधर वो आ जावे।
सब पर डारे रंग उन्हें भी बहकावे॥
माने ना वो बात हमारी, करता है तकरार॥
कन्हैया मुझ पर...
सुनी बात ग्वालन की बोले यों काना।
अरी रूठ यों बाले मुझसे ना जाना॥
पहनाऊँगा बड़ा अमोलक इन बाहों का हार॥
कन्हैया मुझपर...
हंसी जरा सी बात सावंरा की सुन के।
पिचकारी ली छीन हाथ में से उनके॥
छोड़ो ना 'विश्वेश' संग यह नाथ करूँ मनुहार॥
कन्हैया मुझपर...

(638) (रसिया)

रंग डारौ न मोहन गहूँ पैयाँ॥
सांझ भई घर जान दै मोहन, संग की निकसि गईं हमारी गुइयाँ॥
सासु बुरी घर ननद हठीली, जीतौ न छोड़ै हमारौ सैयाँ॥

(639) (काफी)

नित्य मधुर ब्रज–धाम, खेल रहे हरि संग होरी॥
विषय विराग राग रंग लीन्हो, प्रेमसुधा–रस घोरी।
एक लक्ष्य करि मोहन–आनन, भरि पिचकारी छोरी॥
बदन सब अरून भयो री॥
दंभ–दर्प–मद–मोह–कोह सब राख भए जरि होरी।
काम विशुद्ध भयो, हरि मुख पै राजि रह्यौ बनि रोरी॥
मिटी जग की सब खोरी॥
नाते नेह खेह भये सारे, नातो एक रह्यौ री।
नेह–बिन्दु सब नेह जलधि मिलि सागर रूप लह्यौ री॥
प्रेम–रस–रंग छयौ री॥

(640) (काफी)

खेलत स्यामा–स्याम ललित ब्रज में रस–होरी॥
राधा–संग सखी–सहचरि सब मिलि केसर –रंग –घोरी।
सुन्दर स्याम–बदन पर डारत भरि–भरि कनक कटोरी॥
प्रेम–रस–रंग–विभोरी॥
हेरि–हेरि हरि मुख पिचकारी छाँड़ि रहीं चहुँ ओरी।
पकरि हाथ सखियन मलि दीन्हीं मुँह गुलाल अरू रोरी॥
स्याम–मुख अरून भयौ री॥
देखि प्रसन्न वदन सखियन संग रंगिनि नवल किसोरी।
उमग्यौ हिय आनंद–सिंधु, हरि रँग दीन्हीं सब गोरी॥
सुरस–संग्राम मच्यौ री॥

बाजत ताल मृदंग, ढोल–ढप, सिंगा–बेनु ढपोरी।
गावत राग धमार नृत्य करि, कर अबीर की झोरी॥
पुकारत हो–हो होरी॥

(641) (रसिया)

बेटसुर होरी खेलन आये हैं शिव पारवती के संग।
राजा भदावर ने तप कीन्हों, नारी सौ पुरूष बनाये हैं।
पाठक जू नै रंग घुरायौ, शंकर रंगनि सौ हनवाये हैं।
भंग छानि शिव चालन लागे, तब कुंजन वास बनाये हैं।
विश्रान्ति बनाइ दई जमुना तट, पुनि सुन्दर घाट बनाये हैं।
उत्तर बहति जान्हवी त्यागी, जमुना पश्चिम ओर कराई हैं।

(642) (रसिया)

बहियां पकरि के मरोरी लला ऐसी खेलौ न होरी।
पहले तौ हंसि टेरि बुलावत नाहि करो तौ,
सोह दिवावत फेरि करत बरजोरी। लला...
घूघंट में पिचकारी मारत सिरते पांइननों,
रंगि डारत मुतियन की लर टोरी। लला...
सुनतन अरज गरज में भूले देखि अकेली,
हंसे फूले गालनि मलि दई रोरी। लला...
ऐते हू पै भई न मन की चाह रही,
तोऊकाऊ छनकी रेशम अंगिया छोरी। लला..
बेदर्दी के काम न भावें छतियां दुखतिन,
बतियां आवें ऐसी धरि झकझोरी। लला.....
अब तो ब्रज छाड़े ही बनि है अन्त कहूं,
अब होरी मनिहै 'नवल' नारि हों भोरी। लला...

(643) (काफी)

खेलत डोलै फाग री, दशरथ कौ छबीलौ॥
इतते आई जनक नन्दिनी, सखियाँ भरी हैं सुहाग री,
पहिरैं पट नीलौ॥
अनुज सखा रघुनाथ साथ लियें, बांधे बसन्ती पाग री,
कटि–पट चमकीलौ।
'तुलसीदास' धनि धनि या छबि पर, हिल मिल खेलौ फाग री,
जाकौ स्वामी रँगीलौ॥

(644) (रसिया)

कन्हैया घर चालो गुइयां आज खेलें होरी॥
अपने री अपने मन्दिर सों निकसी कोई सांवल कोई गोरी।
एक से एक योवन मदमाती सबै वैस की थोरी॥
कोई चटकत कोई मटकत आवत कोई नाचत गति मोरी।
चमक दमक चपला सी चमकत झिझकत बदन मरोरी॥
बन्सी बजावे मनहिं रिझावे को असमंत्र पढ़ोरी,
सास ननद की चोरा चोरी सब मिल निकसि चलो री॥
कोई मृदंग कोऊ बीन साज लै बाजत है घनघोरी,
ढप धुकार धुमकति है चहुदिशि नाचत ताता थोरी॥
अबीर गुलाल उड़ावत आवत करि श्रृंगार सिगरोरी,
श्याम दास या छबि के ऊपर बार बार बलि जोरी॥

(645) (काफी)

जा सों आवागमन मिट जावै हमें कोई ऐसी होरी खिलावै।
ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा प्रेम रंग बरसावे
केशरि घोर कृपा की भली बिधि धर्म की धूरि उड़ावै॥

धीरज कर ढफ बाजै नई धुनि नाम निरंजन गावे।
क्रोध कुमकुमा मार मार के मोह बली को हटावै॥
राम नाम की लै पिचकारी मुख पर फैक चलावै।
जाके लगत मोह भ्रम छूटै दुविधा दुर्मति धावै॥
कवि शंकर कहे सुनो संत जन फाग यही मोहि भावे।
खेलत फाग मिलै जो सतगुरू रेख पै मेख लगावै॥

(646) (काफी)

तोसों कहा कहों कुंज बिहारी रे, मोरी नई रे चुनरिया फारी॥
अबही तौ मैने मोल लई, मेरे बैर परी गिरधारी।
विधुरि गये सब हीरा हार के, सखियां वीनत हारी॥
नरसिंह स्वामी मैं तो कछुना कहति हों, मेरे मुख सों निकसत गारी।
सुनि री जसोदा मैं तोहि सुनाऊं, मेरो तोड़ो हार हजारी॥

(647) (काफी)

तुम तो बने सौदाई, जगत में हांसी कराई॥
जाव प्यारे तुम हमसे न बोलो, जिय न जलावो सदाई।
सूनी सेज वरू में सो रहूंगी, तुम मत आओ यहाँई॥
समझावत मानत नहिं नेकहु करि अपने मन माई।
रहो खुसी से वहीं जाय के जह मुख अबीर मलाई॥
प्यारे कियो और कों प्यारी इत उत प्रीति लगाई।
अपने मन के भले भए हो झूठी बात बनाई॥
हमहि लजावत मिलत और से जियरा जरावत आई।
माधवी फाग प्रान संग खेलो रहोंगी मैं विष खाई॥

(648)

तू तो वरजोरी गलवा लगावै, कहा तेरे मन में री तेरे मन में॥
नीलाम्बर में देह चमके, काली घटा छाई तन में॥

नैंन की कोरि कजरवा देकें, मार चली गोरी रन में॥
अबीर गुलाल के बादल छाये, फाग मचौ वृन्दावन में॥
घूमि घूमि पिचकारी चलावत, अबीर मलै गालन में॥

(649) (काफी)

नर समझत नाहिं अनारी।
गर्भवास में उलटो लटक्यो, पायो दुख अतिभारी,
जो प्रभु अबकें बाहर निकसों, भजन करूं मैं भारी,
पलक नहिं देऊ बिसारी॥
आया था कुछ लाभ करन कों, गांठ की पूंजी हारी,
सौदा कर ले राम नाम का, आवों शरण गिरधारी,
भरोसो है जिनको भारी॥
जन्म होत माया लिपटायो, भूल गयो सुधि सारी,
भक्ति भाव में चित ना राखो, ऐसी कुमति विचारी,
जन्म की कर दई ख्वारी॥
श्री सतगुरू तोहि नित समझावत, वे सबके हितकारी,
आप तरें औरों को तारें, कहें हरिदास पुकारी,
उमर यों ही मुफ्त गुजारी॥

(650) (काफी)

नंद नंदन वृजराज सांवरे सों बाढौ है अधिक सनेह॥
सबरी सखी मिलि चलहु नंद घर मोहन मागे लेहु॥
मोहन मागे ना मिले सजनी जो चाहो सोई लेहु॥
लाहु तराजू तौल लै मोहन घटा है तो दूनौ लेहु॥
चार दिना होरी के सखी री, फेरि आपनौ लेहु॥

(651) (काफी)

कित जावोगे श्याम मेरे मलि रोरी॥
रोरी मलत मेरी नथनी छटकी मोतिन माल गरे तोरी॥
चिंतामणि मद छक्यौ कन्हैया करत फिरत अति बरजोरी॥

(652) (काफी)

मद मातो रे कान्ह गलियन डोलै॥
मलत गुलाल सवन के मुख सों, हंस हंस कर घूंघट खोलै॥
चिंतामणि अति ढीठ लंगरवा, हो हो हो होरी बोलै॥

(653) (काफी)

कित गयौ री गुपाल मेरे मल रोरी॥
रोरी मलत चूम मुख लीन्हों पिचकारिन रंग में बोरी॥
दोउ करकमल कंचुकी डारे, सारी झटक गयो मोरी॥
चिंतामणि जो अब पिय पाऊं, भामिन भेष करों गौरी॥

(654) (काफी)

दरसन दै निकसी अटा में से॥
कोटि रमा सावित्री भवानी तेरे निकसी अंग छटा में से॥
तू है श्री वृषभानु नंदनी, जैसे निकसी चन्द्रघटा में से॥
पुरूषोत्तम प्रभु यह रस चाख्यौ, जैसे माखन निकसो मठा में से

(655) (रसिया)

गोकुल भयो श्याम नवल रसिया॥
रंग गुलाल अबीर उड़ावत अरग अरगजा छिड़क दिया॥
एकन के मुख रोरी मीडत एकनि अतर लगाय दिया॥
राज बहादुर बृज वीथिन में, कृष्ण चन्द्र प्रभु अनंद किया॥

विशिष्ट होली गायक

(1) **पं० चन्दन चौबे : ध्रुपद**- धमार गायकी में आपका श्रेष्ठ स्थान रहा है। बल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यो द्वारा मान्यता प्राप्त आप 'हवेली संगीत' के अद्वितीय गायक थे। कांकरौली महाराज ने आपको प्रधान संगीतज्ञ का स्थान दिया, आप संगीत सुधाकर की उपाधि से अलंकृत किए गये। आपने देश-विदेश में ध्रुपद-धमार गायन किया। संगीत संम्राट श्री विष्णु नारायण भातखण्डे जी के शब्दों में - "ध्रुपद गायन की चन्दन गुरू की शैली बड़ी ही अपूर्ण, अद्‌भुत, विशिष्ट एवं निजी है।

(2) **पं० लक्ष्मन प्रसाद चौबे**- आपने पं० चन्दन चौबे से शिक्षा प्राप्त कर ब्रज संगीत परम्परा एवं प्रतिभा का परिचय दिया। ध्रुपद के साथ-साथ ख्याल व ठुमरी की भावपूर्ण प्रस्तुति के लिए भी आप विख्यात थे। अत्याधिक आलापों के साथ ख्याल गायकी को वे अनावश्यक तथा विकृत संज्ञा देते थे। आप देश की विभिन्न संगीत संस्थाओं से जुड़े थे। संगीत क्षेत्र के श्रेष्ठतम् पुरस्कार संगीत नाटक अकादमी ऊ० प्र० एवं भारत सरकार द्वारा क्रमशः1974 एवं 1977-78 में आपको सम्मानित किया गया।

(3) **हरि किशोर चतुर्वेदी 'बमबम जी'** - ध्रुपद-धमार के आप उच्च कोटि के गायक थे। आप कलकत्ता आकाशवाणी के प्रथम श्रेणी के ध्रुपद-धमार एवं बंगला फिल्मों के पार्श्वगायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। प्रायः सभी प्रचलित एवं अप्रचलित रागों में ध्रुपद -धमार की बड़ी ही सुन्दर तथा हृदयस्पर्शी अवतारणा बमबम जी करते थे। आपका जन्म इटावा (ऊ० प्र०) तथा कर्मक्षेत्र कलकत्ता रहा। एच.एम.वी जैसी श्रेष्ठ कम्पनी ने आपके अनेक रिकार्ड बनाये हैं।

(4) **बाल जी चतुर्वेदी** - पं० चन्दन चौबे के पुत्र बाल जी को ध्रुपद-धमार, ठुमरी, चैती गायन में भावों को साकार कर देने में महारत हासिल थी। आप ब्रज संगीत परम्परा के रत्न थे। आपकी अग्रणी भूमिका के कारण भारत सरकार और ऊ० प्र० सरकार ने ब्रज संगीत परम्परा को 'मथुरा घराना' घोषित कर विश्व विद्यालयी पाठ्यक्रम में स्थान दिया। उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी के अलावा देश के कोने-कोने में आप सम्मानित किये गये। आप 'संगीत रत्न' की उपाधि से भी नवाजे गये। आपके तैल-चित्र का 1989 को मथुरा आकाशवाणी में अनावरण किया गया।

(5) **गुरु गणेशीलाल जी चतुर्वेदी** - ध्रुपद गायन में आपको विशिष्टता प्राप्त थी तथा मुर्च्छना पद्धति के आप अन्तिम गायक थे। मथुरा में जन्में तथा होलीपुरा के आप प्रवासी बन गये थे। आपकी गायकी के बारे में उस्ताद अमजद अली खाँ के पिता हाफिज अली खाँ ने लक्ष्मण प्रसाद चौबे से कहा था कि- "हमारे पूर्वज जब नेपाल में रहते थे तब गुरुजी वहाँ पधारे थे। वहाँ आपने स्वर छेड़ा कि जैसे बादल गड़गड़ाए, समुद्र उफना, जैसे ब्रह्माण्ड उतर आता था धरती पर। नेपाल नरेश तो उनके जड़खरीद हो गए सुभानल्लह, बतारीख में बेजोड़ मिशाल कायम कर गये- गुरु गणेशीलाल जी।"

(6) **स्व० राय बहादुर चौबे जुगल किशोर**– राय साहब के नाम से प्रसिद्ध जुगल किशोर जी एक प्रमुख होली गायक थे। आपने धमार, लेद आदि रागों को शास्त्रीय रूप प्रदान किया और होलीपुरा के युवा गायकों को इस विधा में निष्णात बनाया।

(7) **सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी**– होनहार विरवान के होत चीकने पात, स्व० शंकरलाल जी के पुत्र सुरेश चन्द्र जी होली गायकी के प्रेमी तथा बेजोड़ ढ़ोलक वादक रहे हैं। आपकी गायन शैली शास्त्रीय संगीत की विभिन्न रागों पर आधारित थी। आप किसी एक राग पर नहीं बल्कि स्वान्त: सुखाय गायन – वादन प्रेमी थे।

(8) **सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी** – सुरेन्द्र नाथ जी होलीपुरा बड़े घर के उच्चकोटि के ढोलक वादक रहे हैं, आपने विधिवत् ढ़ोलक वादन की शिक्षा ग्रहण की। होली गायन–वादन की आपकी आदर्श प्रतिभा प्रेरणास्पद रही है। आपका युवावस्था में हीं देहावसान हो गया था।

(9) **खड़गजीत चतुर्वेदी 'कक्का'** – होलीपुरा के खड़गजीत चतुर्वेदी कक्का होली गायकी के यशस्वी हस्ताक्षर थे। आपकी सशक्त सुमधुर आवाज के स्वर विशाल जनसमूह में भी पहचाने जा सकते थे। काफी, रसिया आदि विधाओं में एकल गायन श्रोताओं को बरबस अपनी और खींच लेता था। आप भजन, गजल गायकी के भी प्रेमी थे।

(10) **पं० लाड़ली प्रसाद चतुर्वेदी** – अनूपशहर निवासी लाड़ली प्रसाद जी होली गायन में अपने समय के अग्रणी गायकों में से एक थे। साज–बाज के साथ उनका एकल काफी गायन मंत्रमुग्ध कर देता था। आप हारमोनियम एवं बांसुरी बादन के भी अच्छे जानकार थे तथा भजन–गजल की भावपूर्ण प्रस्तुति उनके गायन की विशेषता थी।

(11) **कामता प्रसाद चतुर्वेदी** – होलीपुरा निवासी कामता प्रसाद जी सुदर्शन व्यक्तित्व एवं सुमधुर कंठ के धनी थे। होली गायकी में आप धमार का एकल गायन कर सकते थे। आपका होली गायन प्रेम बेजोड़ था। बंगाल पेपर मिल्क रानीगंज में सेवारत रहकर आप शनिवार को कलकत्ता राजाकटरा होली गायकी की बैठकों में शामिल होने आते थे। आप ज्योतिष के भी अच्छे जानकार थे।

(12) **हरिहरनाथ जी चतुर्वेदी** – होलीपुरा के हरिहरनाथ जी का होली गायकी में अपना विशिष्ट स्थान रहा है। आप एकल होली गायन प्रेमी थे। सधा हुआ सुरीला गला आपके गायन की विशेषता थी। हारमोनियम पर अग्रज द्वारकानाथ जी के साथ आपका होली गायान मन्त्रमुग्ध कर देता था।

(13) **अवधेश चन्द्र जी चतुर्वेदी** – होली गायन में होलीपुरा के बड़े घर की ध्रुपद धमार गायकी की अग्रणी भूमिका रही है, लेकिन अवधेश चन्द्र जी रासिया, ठड़ऊवा, चाल गायकी के मजे हुए कलाकार थे। हारमोनियम के साथ आप जब होली गायन करते तो श्रोता या तो साथ–साथ गा उठते या फिर वाह–वाह कर उठते।

(14) **विलासराय जी चतुर्वेदी** – पुरा के नरोत्तमदास जी के पुत्र विलासराय जी को गायन विद्या का शौक था तथा आपकी आवाज बड़ी सुरीली थी। जिस समय आप पुरानी चाल की होली व धमार गाते थे तो सुनने वाले मुग्ध हो जाते थे।

(15) **भैरों प्रसाद जी पाण्डे** – भैरों प्रसाद जी व्यायाम और गाने – बजाने में निपुण थे। गायन–वादन में तो वे इतने मस्त हो जाते थे कि होली के दिनों में अधिकांश वे बिहार से गाँव पुरा में आ जाते थे जिससे गाँव में मस्ती का वातावरण छा जाता था। आप पुरवी, विहारी, लेद, धमार जैसी गायकी में समा बाँध देते थे तथा ढोलक भी बजाते थे।

(16) **नवल किशोर जी चतुर्वेदी** – तरसोखर के नवल किशोर जी दद्दू को संगीत से बहुत प्रेम था, वे हर मौसम के संगीत में प्रवीण थे। होली गायन में आप लेद, चाल आदि विधाओं में गाते थे। आप ढ़ोलक बजाने में भी निपुण थे।

(17) **उमाशंकर जी चतुर्वेदी** – उमाशंकर जी का ज्यादा समय गाँव तरसोखर में ही बीता था। आप होली गाने–बजाने में भारी कुशलता रखते थे। आप हर राग व धुन पर बढ़िया ढ़ोलक बजाते थे। कभी–कभी रात भर फाग पर ढ़ोलक बजाते रहते थे तथा उगलियाँ तक फट जाती थी पर हटने का नाम नहीं लेते थे।

(18) **थानसिंह जी चतुर्वेदी** – कलकत्ता में होली गायन की बात हो और थानासिंह जी 'उस्ताद' की ढ़ोलक की चर्चा न हो तो बेमानी होगा। तालगाँव के थानासिंह जी बेजोड़ ढ़ोलक वादक रहे हैं। होली की बैठकों में उस्ताद जी की ढ़ोलक की थाप की गूंज श्रोताओं को झूमने पर विवश कर देती थी।

(19) **पीताम्बर दास जी पाण्डे** – होलीपुरा निवासी स्व० पीताम्बर दास जी पाण्डे वैष्णव सम्प्रदाय की पुष्टिमार्गी शाखा के अनुयायी एवं उच्चकोटि के गायक थे। धमार के सामूहिक गायन की विधा जो माथुर चतुर्वेदियों की उल्लेखनीय विशेषता है आप उसके श्रेष्ठ गायकों में एक थे। लोगों को होली गाने व उठाने में संशय की स्थिति होती तो वे पीताम्बरदास जी की गायकी का स्मरण कर सुधार किया करते थे।

(20) **स्व० मदनमोहन जी चतुर्वेदी** – तालगाँव के मदनमोहन जी मदन दद्दू ढ़ोलक बजाने में सिद्धहस्त थे। ढ़ोलक बजाते समय इनके हाथ के पहुँचे हिलते थे, शरीर के किसी अन्य अंग का हिलना वादन की त्रुटि मानते थे। इनकी शिष्य परम्परा को कई लोगों ने आगे बढ़ाया।

(21) **स्व० भगवती प्रसाद पाठक** – आप कमतरी के मूल निवासी थे, तथा कार्य क्षेत्र कलकत्ता रहा। आपको ढ़ोलक वादन में महारत हासिल थी। आप कलकत्ता होली गायन की तत्कालीन बैठकों के प्रमुख स्तम्भ थे।

(22) **स्व० प्यारे लाल चतुर्वेदी** – होलीपुरा मूल के प्यारे लाल जी हरफनमौला व्यक्तित्व के धनी एवं गायन की विभिन्न विधाओं के लिए समाज में विख्यात रहे हैं। होरी

गायकी में वैसे तो सभी विधाओं में आप भावपूर्ण गायन करते थे लेकिन रसिया व चाल के आप मंजे हुए गायक थे।

(23) **स्व० त्रिभुवनदास चतुर्वेदी मुनमुनिया** – होली गायन में मैनपुरी मूल के त्रिभुवनदास जी की भूमिका अग्रणी रही है। आप मुनमुनिया के नाम से विख्यात थे। आप काफी राग में होली गायन की बेजोड़ प्रस्तुति करते थे।

(24) **स्व० बिहारी बाबा** – मैनपुरी के बिहारी बाबा होली गायन के उत्कृष्ट कलाकार थे। आप ध्रुपद, काफी आदि रागों में हारमोनियम पर उच्चकोटि के गायक थे।

(25) **स्व० चन्द्रसेन सोती** – मैनपुरी के चन्द्रसेन सोती होरी गायन-वादन के सिद्धहस्त कलाकार थे। पखावज पर होली गायन आपकी विशेषता थी।

(26) **स्व० सेवाराम जी चतुर्वेदी (हकीम)**– होलीपुरा के सेवाराम जी का होली गायन में अपना विशिष्ट स्थान था। ध्रुपद-धमार के आप मजे हुए गायक थे। आपको ध्रुपद-धमार की बारीकियों का पूर्ण ज्ञान था।

उपरोक्त के अलावा स्व० श्योप्रसाद जी तालगाँव, स्व० रूप किशोर जी होलीपुरा, स्व० टीकाराम जी होलीपुरा, स्व० अनन्तराम जी 'चौधरी' होलीपुरा, गजेन्द्रनाथ जी तरसोखर, स्व० कैलाशचन्द्र जी होलीपुरा, स्व० चम्पाराम जी मैनपुरी, स्व० नवल किशोर जी 'विटऊ जी' मैनपुरी, स्व० टीकाराम जी मैनपुरी, स्व० पृथ्वीनाथ जी होलीपुरा, श्री तारकनाथ जी होलीपुरा, श्री तोपानिधि जी फरौली, श्री कैलाशचन्द्र जी तालगाँव, श्री नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी एवं श्री बृजेन्द्रनाथ चतुर्वेदी 'लालूजी' मैनपुरी की भी उत्कृष्ट भूमिका रही है। इसके अलावा होली गायकी की बैठकों के आयोजन में स्व० यतीशचन्द्र जी पुरा, ''रंग झर बरसै री'' के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में स्व० गुलाबचन्द्र जी फरौली एवं कलकत्ता के बलदेव जी के मन्दिर में बसन्त पंचमी की बैठक के कई दशकों से आयोजन में श्री कैलाशचन्द्र जी सिकन्दपुर का योगदान भी उल्लेखनीय है।

वर्तमान में श्री राकेशचन्द्र जी होलीपुरा होली गायकी के समर्पित कलाकार हैं, वे जितने अच्छे ढोलक वादक हैं उतने मंजे हुए गायक भी हैं। धमार गायकी में आपको प्रवीणता हासिल है। इनके साथ सर्वश्री देवकृष्ण जी 'श्रीराम', संजय कुमार जी 'भैय्या', हरीकान्त जी होलीपुरा, अजय कुमार जी चन्द्रपुर, लोकेन्द्रनाथ फरौली, किशोरी रमण जी होलीपुरा, रमाकान्त जी होलीपुरा, हेमन्त कुमार जी पुरा एवं हरेश पाण्डे मैनपुरी के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

व्यक्तिगत होली

रंग झर बरसै री

Design & Printed by :
Vijayalakshmi Printing Works Pvt. Ltd.
B-117, Sector-5, Noida, E-mail : vpwpl@yahoo.com